नबूवतीय
प्रकाशन

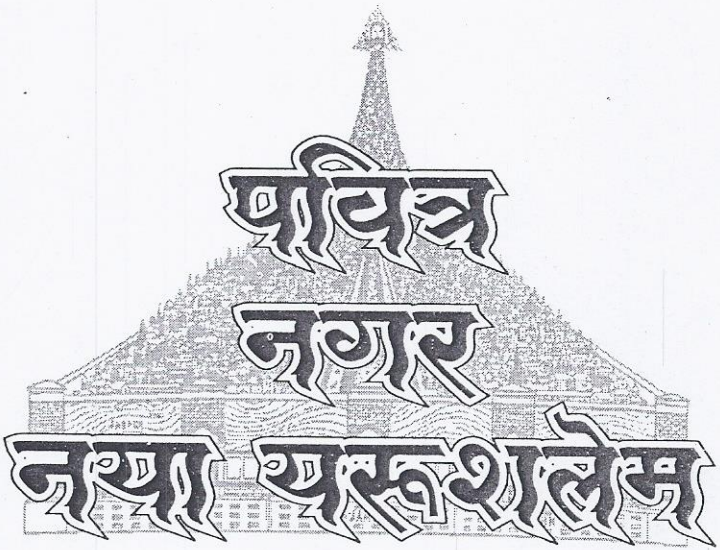

THE HOLY CITY, NEW JERUSALEM

जिस के कान हों, वह सुन ले ।

PROPHETIC*REVELATION

GHIM MOH EST., P. O. Box 333
Republic of Singapore - 912742

First Printed : Fourth Quarter 1990 • Second Printing : 1997

First Printed in Hindi : First Quarter 2002

उकाब चीखता है...

The Eagle screams...

...the Dove leads.

...पंडुक मार्ग दिखाता है ।

विश्व में पाए जानेवाले अन्त समय के सन्देश के विश्वासियों के प्रेम और योगदान के द्वारा अँगरेजी की मूल पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हुआ है । ए.बी.बी.ए.-अग्रीपाडा बाइबल बिलीवर्स असेम्बलि के द्वारा हिन्दी का यह प्रकाशन प्रार्थना के साथ प्रकाशित और वितरित किया गया है, ताकि इस पुस्तक के सन्देश में जो वचन प्रस्तुत किया गया है, आप के लिए एक जीवित प्रकाशन बन जाए और आप सभी मनुष्यों के सामने प्रभु यीशु मसीह के नाम को निष्ठापूर्वक दृढ़ता के साथ साबित कर सकें ।

''समय के सन्देश'' को जानने के इच्छुक व्यक्ति निम्नलिखित पते पर लिखकर इस अंक की अतिरिक्त प्रतियां जब तक स्टाक में हैं मुफ्त मंगवा सकते हैं :

ब्र. रिचर्ड डिसोझा
बी. आय. टी. ब्लॉक १२/६३,७८,
रेब्शा स्ट्रीट (एफ. एस. उमरभाय पथ), आग्रीपाडा,
मुंबई - ४०० ०११.
(दूरभाष : (०२२) ३०१ ४९ ८६)

इसलिये आओ ... हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं... - इब्री ६:१;

This brochure cannot be sold or used in any way for the soliciting of funds.
इस पुस्तिका को न तो बेचा जा सकता, और न ही इसका प्रयोग धन संग्रह के लिए किसी भी रीति से किया जा सकता है ।

प्रस्तावना

प्रकाशितवाक्य, पुस्तक के अन्तिम दो अध्यायों ने वर्षों से बहुत से मसीहियों के ध्यान को खींच रखा है। **नये आकाश और नयी पृथ्वी के** सम्बन्ध में बहुत से प्रश्न पूछे जा रहे हैं। वर्तमान आकाश और पृथ्वी से वे कितने भिन्न होंगे? नयी पृथ्वी देखने में कैसी होगी? मसीही लोग उस बड़े **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** के विषय में पढ़ते हैं और उसका एक भाग होना चाहते हैं। परन्तु आज भी बहुत से लोग सन्देह के घेरे में हैं कि वास्तव में यह पवित्र नगर है क्या। इस सम्बन्ध में वे बहुत से प्रश्न करते हैं: *"क्या यह एक यथार्थ नगर है?" इस स्वर्गीय नगर में मुझे कैसा भवन मिलेगा?"*

वर्षों से, जब मैं एसेम्बली ऑफ गॉड चर्च में था, तो उस समय भी मुझे यह विश्वास था कि **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** सभी युगों के परमेश्वर के विमोचित या उद्धारित पवित्र लोगों का समूह होगा। इस विषय में मैंने कभी भी कोई पुस्तक न तो पढ़ी और न कोई सन्देश सुना जिससे मुझे कुछ ज्ञान मिलता। कुछ वर्ष पूर्व, अन्त समय के सन्देश के एक प्रचारक ने एक पुस्तिका लिखी, जिसमें उसने यह बताया कि **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** एक *यथार्थ* नगर होगा जो *अनन्त युग में* प्राचीन नगर यरूशलेम के ऊपर सीधा लटका हुआ होगा।

इस वर्ष इस विषय को सिखाने के लिये मैंने प्रभु के नेतृत्व का अनुभव किया और मुझे कुछ सुन्दर दृश्य और वचन का प्रकाश दिखाया गया। अनेक घंटों तक प्रभु की उपस्थिति में बैठने का परिणाम यह पुस्तक है।

प्रभु यीशु आपको आशिष दे और अपने नबूवतीय वचन का प्रकाश प्रदान करे।

Richard S. Gan

रिचर्ड एल. एस. गैन
लेखक
वर्ष 1990

वचन रूपी दुलहन ने स्वयं को तैयार कर लिया है।

प्रकाशितवाक्य 19:7

पवित्र नगर, नया यरूशलेम

लेखक : भाई रिचर्ड एल. एस. गैन *अनुवादक और सम्पादक : भाई प्रताप सिंह*

"फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।
फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुलहन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।
फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा।"

—प्रकाशितवाक्य 21:1-3

सम्पूर्ण जगत के मसीही लोग जिस रीति से प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं वैसे ही वे प्रेरित यूहन्ना के इन दर्शनों के वास्तविक हो जाने के दिन की भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। **नये आकाश** और **नयी पृथ्वी** के प्रतिस्थापित हो जाने से वर्तमान पृथ्वी की सभी प्रदूषित वस्तुएं नयी हो जाएँगी। सभी नयी वस्तुओं की विस्मयकारी प्रेरणाप्रद सुन्दरता जिसे परमेश्वर उस समय उत्पन्न करेगा उसे देखकर हम निश्चय ही चकित और अभिभूत हो जाएँगे।

निस्सन्देह नये आकाश और नयी पृथ्वी के सम्बन्ध में व्यक्तिगत रीति से प्रत्येक मसीही की अपनी-अपनी विचारधाराएं हैं कि देखने में वह कैसी होगी? बहुत से लोग यह कल्पना कर सकते हैं कि **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** विशाल यथार्थ भौतिक नगर के जैसा होगा जैसा कि *प्रकाशितवाक्य* की पुस्तक के अन्तिम दो अध्यायों में वर्णन किया गया है। शायद कुछ लोग ऐसी भी कल्पना कर सकते हैं कि नया युग प्रायः *अन्तरिक्ष युग* के नमूने के जैसा होगा जिसके विषय वे *विज्ञान* की पुस्तकों में पढ़ते हैं। तथापि, प्रभु के अनुग्रह और पवित्र आत्मा की अगुआई के द्वारा, हम पवित्र नगर, नये यरूशलेम, नये आकाश और नयी पृथ्वी को ठीक वैसा ही देखेंगे जैसा प्रेरित यूहन्ना ने अपने दर्शनों में उन्हें देखा है।

अदन की वाटिका

पवित्र नगर, नये यरूशलेम को समझने के लिए, हमें **अदन की वाटिका** का और दाऊद का नगर जो **यरूशलेम** कहलाता है उसका स्थान निर्धारित करना जरूरी है, पवित्र नगर, नये यरूशलेम का *रहस्य* इसी में छिपा हुआ है।

पवित्रशास्त्र यह घोषित करता है कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि छः दिनों में की और सातवें दिन विश्राम किया। पढ़ें उत्पत्ति 1:1-2:6. यह इस बात का भी वर्णन करता है कि परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि *'अच्छी'* थी, जिसका अर्थ हुआ कि यह उसके लिए *'उपयुक्त' 'अनुकूल'* या *'मनोहर'* थी। जी हाँ, पृथ्वी और इसमें की सभी वस्तुओं की सृष्टि अच्छी स्थिति

में की गई थी। *''क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सुनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये रचा है। वही यों कहता है, मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवाय दूसरा और कोई नहीं है''* (यशा॰ 45:18)।

तथापि, एक ऐसा स्थान था जो **अदन** कहलाता था जिसे परमेश्वर ने बनाया था। सम्पूर्ण पृथ्वी अदन *नहीं* थी। अदन परमेश्वर का *'फिरदौस'* परमेश्वर का *'हर्ष'* और परमेश्वर का *सुख* था। अदन का अर्थ यही होता है। अदन के *पूर्व की ओर* परमेश्वर ने — **एक वाटिका** लगाई जो पृथ्वी पर के सभी स्थानों से यहाँ तक कि अदन से भी अधिक सुन्दर थी। उत्पत्ति 2:8-16 में इसका वर्णन किया गया है :

''और यहोवा परमेश्वर ने अदन देश के पूर्व की ओर एक वाटिका लगाई ; और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। और उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धारा में हो गई। पहली धारा का नाम पीशोन् है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहाँ सोना मिलता है घेरे हुए है। उस देश का सोना चोखा होता है, वहाँ मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं; और दूसरी नदी का नाम गीहोन् है, यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है, और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल् है, यह वही है जो अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है, और चौथी नदी का नाम फरात है। जब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे, तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है।''

बाइबल के अधिकांश विद्वान यह विश्वास करते हैं कि अदन की वाटिका का *स्थान* मध्यपूर्व में कहीं था। हाँ, यह बात सच है। जबकि कुछ लोग यह अनुमान लगाते हैं कि यह फारस की खाड़ी के निकट, वर्तमान ईराक़ में कहीं था, अन्य लोगों का यह विश्वास है कि यह स्थान दो नदियों तिग्रीस (हिद्देकेल) और फरात के नदी *शीर्ष* के निकट कहीं था। क्योंकि पवित्रशास्त्र में इन चार नदियों पीशोन्, गीहोन्, हिद्देकेल और फरात का नाम जिस क्रम में लिखा हुआ है, बाइबल के विद्वान, जो यह विश्वास करते हैं कि अदन की वाटिका पूर्वी तुर्की में कहीं थी, यह अनुभव करते हैं कि पीशोन् को पहला और उत्तरी नदी होना था, जैसा कि वर्तमान मानचित्र में फरात नदी को मसोपोटामिया घाटी के दक्षिण में इन चार नदियों में अन्तिम नदी के रूप में दर्शाया गया है। उनका मत है कि यह वर्तमान आर्मेनिअन एस.एस. आर. से होकर बहती है और तब दक्षिण की ओर मुड़कर पश्चिमी ईरान होती हुई फारस की खाड़ी में मिल जाती है।

मेरे प्रियो, मैं इस बात से असहमत हूँ। अदन और इसकी वाटिका इन दोनों क्षेत्रों में से कहीं

भी नहीं थी। उनके विषय जब तक पवित्र आत्मा किसी पर प्रगट न करे कोई भी नहीं जान सकता कि अदन और उसकी वाटिका *वास्तव* में कहाँ थीं। बाइबल के अधिकांश विद्वानों के द्वारा एक साधारण सी सच्चाई की अवहेलना अक्सर कर दी जाती है वह यह है, कि वर्तमान पृथ्वी की सतह जल प्रलय से पूर्व की अवधि से *मूलत:* भिन्न है। वर्तमान मानचित्र अदन की भूमि की मूल सतह को नहीं दर्शाते, परन्तु हम अदन की वाटिका के *मूल स्थान* का ठीक-ठीक पता लगा सकते हैं। नूह के दिनों में जब गहरे समुद्र के सब सोते फूट निकले, और आकाश के झरोखे खुल गये तो सम्पूर्ण पृथ्वी की भूमि की सतह *परिवर्तित हो गई* थी। प्रलय का जल फूट पड़ा और चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर उमड़ता रहा। ऐसे महा जलप्रलय से, सभी ऊँचे पर्वत पानी से ढँक गये, ऐसी स्थिति में यदि भूमि की सतह में कोई परिवर्तन न हुआ हो तो यह बड़े आश्चर्य की बात होगी। पर्वतों, पहाड़ियों, घाटियों, समतल भूमि और नदियों पर चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर मूसलाधार वर्षा के प्रहार ने पृथ्वी के मूल भौगोलिक भू-दृश्य को निश्चय परिवर्तित कर दिया होगा। [ध्यान दें : पृथ्वी में विभिन्न प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। इसलिए, पृथ्वी पर टनों जल के कारण भूकम्प और पृथ्वी में हलचल का होना स्वाभाविक है।] कुछ पर्वतश्रेणियों की आकृति में परिवर्तन होकर वे पठार या पहाड़ियों की आकृति में बदल गईं; कुछ *नदीशीर्षों* का स्थान बदल गया होगा जिस से नदियाँ नयी धाराओं में बहने लगीं होंगी; मैदान और समतल भूमि ने घाटियों का या बड़ी झील का रूप ले लिया होगा; और हो सकता है कि कठोर चट्टानों की पर्वतचोटियाँ टापुओं में बदल गईं होंगी। जब विशाल भूखंड पर प्रलय का जल आया होगा तो दबाव से स्थल दब गया होगा और खिसक गया होगा या दूसरी दिशाओं में उभर गया होगा। पृथ्वी के ढाँचे में ऐसी हलचल पहाड़ों को नीचा और घाटियों को ऊँचा उठाने का कारण होती हैं (यशा. 40:4 के साथ तुलना करें)। भूमि की ऐसी हलचल का एक अच्छा उदाहरण विशाल विभ्रंश-घाटी है जो सीरिया से मोज़ाम्बिक तक फैली हुई है। लाल समुद्र जो इस दरार का एक भाग है स्वयं प्रतिवर्ष एक-एक इंच करके कटता जा रहा है। [ध्यान दें : निकट भविष्य में कैलिफॉर्निआ में सैन एन्ड्रिज़ फॉल्ट के नीचे की गर्म सतह फूट निकलेगी जिसके कारण एक बड़ा भूकम्प होगा और भूमि का विशाल भाग समुद्र में धँस जाएगा। समुद्र में भयानक ज्वारभाटा उठेगा और प्रशान्त महासागर के आस-पास के बहुत से छोटे-छोटे टापू बहुत दिनों के लिए पानी से ढँक जाएँगे। इसके पीछे की भूमि का एक कायापलट हो जाएगी। *प्रभु के दिन* में (जक॰ 14:4-10; प्रका॰ 16:10-21) मसीह के दूसरे आगमन के समय और जब पृथ्वी दोबारा नई बनाई जाएगी (प्रका॰ 21:1-2) तो इससे भी बढ़कर परिवर्तन होगा।]

परमेश्वर से प्राप्त प्रकाश के द्वारा, मुझे अदन और इसकी वाटिका के स्थान को प्रमाणित करने दें। भौगोलिक रीति से, अदन एक बहुत ही लम्बा चौड़ा स्थान था। ध्यान में रखें कि अदन की वाटिका को अदन के पूर्व दिशा में लगाया गया था। अदन की तुलना में वाटिका का क्षेत्र निश्चय ही छोटा रहा होगा। ***'परमेश्वर की अदन की वाटिका'***–*'फिरदौस', 'हर्ष'* और *'सुख'* आदि के वर्णन के उपयुक्त केवल यही एक स्थान था। ***यह कनान देश था।*** इसलिए जबकि यह क्षेत्र कनान के उत्तर से तुर्की तक और कनान के दक्षिण से मिस्र के सिनै प्रायद्वीप तक फैला हुआ

है तो पश्चिम की ओर अवश्य ही अदन था। वाटिका को सींचने के लिए महानदी जो अदन से निकलकर पूर्व की ओर बहती थी आज उसका अस्तित्व नहीं रहा, क्योंकि महा जलप्रलय के बाद

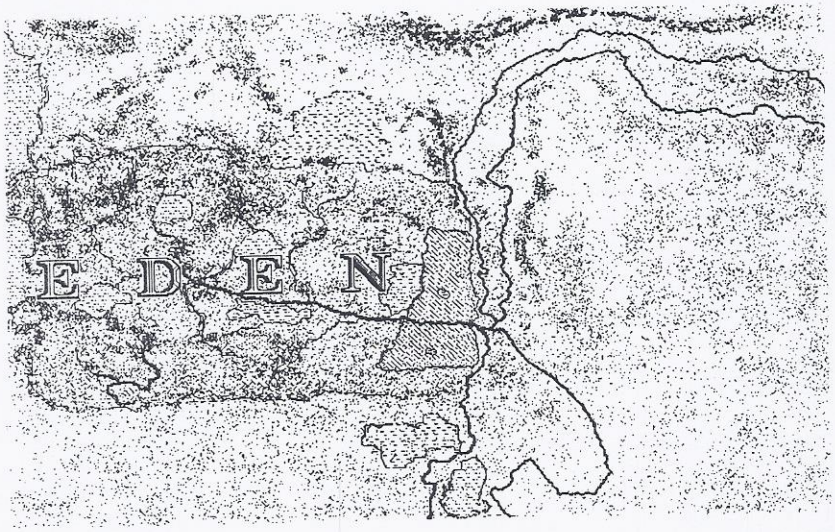

अदन का अधिकांश भाग समुद्र में परिणत हो गया। बहुत हद तक यह सम्भव है कि जलप्रलय से पूर्व महासागर (भूमध्य सागर) एक विशाल समतल मैदान और घाटियों के रूप में था जिसमें बहुत बड़ी-बड़ी झीलें रही होंगी और उनमें नदियाँ बहती होंगी। इसकी तट-रेखा मूल रूप से पहाड़ियों और पहाड़ों की श्रेणियाँ थीं। अदन से बहनेवाली महानदी वाटिका से होती हुई पूर्व की ओर बहती थी, और वाटिका से बहने के बाद यह चार *'निकासों'*(धाराओं) में बँट गई थी। परन्तु केवल हिद्देकेल और फरात नदियाँ अभिज्ञेय हैं यद्यपि उनके *'निकास'* पूर्वी तुर्की के क्षेत्र में स्थानान्तरित हो गये हैं।

यह जानना अत्यावश्यक नहीं कि ये चार नदियाँ आरम्भ में कहाँ थीं। केवल इतना ही ध्यान में रखें कि चार नदियाँ थीं। तथापि, मुझे प्रयास और रूप-रेखा प्रस्तुत करने दें कि इन चार नदियों का वास्तविक स्थान कहाँ था।

अदन की महानदी जो वाटिका से होती हुई पूर्व की ओर बहती थी वाटिका से निकलने के बाद यह चार *'निकासों'* में बंट गई थी। महानदी से निकलनेवाली पहली नदी पीशोन् थी जो दक्षिण की ओर बहती थी, बहुत सम्भव है कि नीचे की ओर टेढ़ी-मेढ़ी घूमती सिनै प्रायद्वीप की पर्वत श्रेणियों से लाल समुद्र के आधे भाग के ऊपर से होती हुई न्यूबिअन रेगिस्तान को पार करके दक्षिण की ओर बहती थी। दूसरा *'निकास'* अरब के प्रायद्वीप की पर्वत श्रेणियों से होती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ती गई और नीचे की ओर इथिओपिया के समतल मैदान में बह गई। नील नदी और लाल समुद्र विभ्रंशघाटी के भाग हैं। सम्भवत: वे पीशोन् और गीहोन् नदियों के भाग रहे होंगे।

भौगोलिक रीति से सम्भवत: हिद्देकेल और फरात् नदियाँ लेबनान और सीरिया की पर्वतश्रेणियों से सटकर बहती होंगी, और इससे पहले कि वे मसोपोटामिआ से होती हुईं नीचे की ओर टेढ़ी-मेढ़ी बहती हुईं अपने जल को फारस की खाड़ी में खाली करें, पर हिद्देकेल नदी पूर्वी तुर्की के दूर उत्तर से होकर बहती थी।

कनान

अपने लोगों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध के सम्पूर्ण इतिहास में कनान देश उसका सबसे **मुख्य विषय** रहा है। सम्पूर्ण पुराने और नये नियम में पाई जानेवाली सच्चाइयों के द्वारा इस बात की पुष्टि की गई है। वह *'उत्तम पहाड़'* कनान था (निर्ग॰ 3:8; व्यव॰ वि॰ 3:25; 4:22)। दूध और मधु का यह *'मनोहर देश'* था, और यह *'सब देशों का शिरोमणि'* था (भ॰सं॰ 106:24; यहे॰ 20:6,15 की तुलना यशा॰ 8:8; 62:4; होशे 9:3; जक॰ 2:12 के साथ करें)। पवित्रशास्त्र हमें यह बताता है कि इस पृथ्वी पर अपना नाम व्यक्त करने के लिए **परमेश्वर ने केवल एक ही स्थान को चुना था,** और **वह स्थान कनान देश में *यरूशलेम* था** (2 इति॰ 6:6; नहे॰1:9)। यरूशलेम को चुने जाने से पहले, इस्राएल किसी भी स्थान पर याहवेह की उपासना कर सकता था जहाँ वे अपने बलिदानों को चढ़ाने के लिए वेदी बना सकते थे। तथापि, जब से परमेश्वर ने उपासना के लिए इसे चुना हुआ स्थान ठहराया तब से सच्चे उपासकों के लिए उपासना का एकमात्र ग्रहणयोग्य स्थान यरूशलेम रहा। केवल यरूशलेम मंदिर की वेदी पर चढ़ाई गई भेंटें प्रभु को ग्रहणयोग्य होती थीं (व्यव. 16:2-6)। **प्रभु का निवास स्थान** यरूशलेम नगर में था।

जब इस्राएल की सन्तान ने कनान देश को अपने अधिकार में कर लिया, तो उन्होंने कुछ नगरों को ***शरणस्थान*** बनाया (गिनती 35 अध्याय के साथ तुलना करें)। अक्सर प्राचीन नगरों के चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें बनाई जाती थीं ताकि इसमें रहनेवालों को संकट के समय सुरक्षा और विश्राम मिल सके। एक अच्छा और दृढ़ नगर बनाने के लिए ऊँचा पहाड़ उपयुक्त स्थान होता था। और अक्सर शासक लोग नगर में रहकर वहाँ से अपने देश पर शासन किया करते थे जो कि देश की राजधानी हुआ करता था जहां सभी **राष्ट्रीय, राजनीतिक** और **धार्मिक** गतिविधियां सम्पन्न हुआ करती थीं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, हमें इस बात को मालूम करना है कि इब्राहीम कैसे नगर की खोज कर रहा था जब परमेश्वर ने उसे कनान देश के लिए कसदियों के ऊर नगर से बुलाया। इब्राहीम *'उस नगर की खोज में था जिसकी नीवें हैं, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है'* (इब्रा. 11:10)। आमीन ! *''यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है; और उसके पुत्रों को शरणस्थान मिलता है''* (नीति॰ 14:26 की तुलना व्य॰ वि॰ 33:27; 2 शमू॰ 22:3; भ॰सं॰ 9:9; 46:7; 48:3; 62:7; 91:2,9; 94:22 के साथ करें।)

जी हाँ, यरूशलेम ही वह स्थान था जहां परमेश्वर ने इब्राहीम के स्वाभाविक वंश, अपने चुने हुए लोगों अर्थात् इस्राएल पर **अपनी उपस्थिति** और स्वयं को प्रगट किया। जब परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ बांधी गई **अपनी वाचा** को दोबारा दृढ़ करना चाहा, तो उसने इब्राहीम को यह आज्ञा दी कि अपने पुत्र, इसहाक को लेकर *''मोरिय्याह देश में चला जा; और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा''* (उत्पत्ति 22:2)। 691 ए॰डी॰ के बाद

से मोरिय्याह पहाड़ की चोटी ऊमर की मस्ज़िद से घिरा पड़ा है, जो 'चट्टान का गुम्बद' (Dome of the Rock) के नाम से प्रचलित है। यही वह स्थान है जहाँ सुलैमान और जरुब्बाबेल के मन्दिर उनके समय में थे। शब्द *''मोरिय्याह''* के अर्थ इस प्रकार से हैं : *''ऊँचा स्थान, विस्मय, प्रकाश, प्रभु''*। यहूदियों का यह भी विश्वास है कि यह स्थान पृथ्वी के केन्द्र पर अवस्थित है और यही वह स्थान है जहां ज्योति पहली बार मनुष्य जाति पर चमकी। क्या यह ऐसा नहीं था कि **परमेश्वर की शकीनाह महिमा** अदन की वाटिका में आदम और हव्वा पर चमकती हुई प्रगट हुई जब परमेश्वर उनके साथ संगति करने के लिए शाम के समय आया ? (देखें उत्पत्ति 3:8)। भजन के लिखनेवाले ने यह कहा : *''क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिए चाहा है। यह तो युग युग के लिए मेरा विश्रामस्थान है, यहीं मैं रहूँगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है''* (भ०सं० 132:13-14)। (*आत्मिक यरूशलेम* के छिपे भेद को क्या आप नहीं समझे ?) जी हाँ, सिय्योन पहाड़ पर, यरूशलेम नगर युग युग के लिए **परमेश्वर का निवास स्थान** है। भजन का लिखनेवाला (भ०सं० 48:1-2 में) पवित्र पहाड़ का वर्णन *'ऊँचाई में सुन्दर'* (*ऊँचाई के लिए मनोहर और सुन्दर - एम्पलिफाइड*) या अपनी ऊँचाई में सुन्दर के रूप में करता है। यह *'परम सुन्दर'* था (भ०सं० 50:2)।

कनान देश वही स्थान है जहां अदन की वाटिका स्थित थी, और जहां मनुष्य का आरम्भ परमेश्वर की सृष्टि की सुन्दरता से परिपूर्ण वातावरण में हुआ था। मनुष्य के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध का आरम्भ यहीं से हुआ। इसलिए यह बात बिल्कुल ही स्पष्ट है कि परमेश्वर ने इस स्थान को चुना था कि जहां वह अपने चुने हुए लोगों के साथ सम्बन्ध रखे और सदाकाल तक उनके साथ रहे।

मनुष्य की उत्पत्ति के समय से ही शैतान ने इस स्थान पर बहुत सी गड़बड़ियां उत्पन्न की हैं। आज इस देश में अभी भी बहुत से धार्मिक और राजनीतिक संघर्ष व्याप्त हैं। एक ऐसे देश से जो *'सुन्दर'* और *'मनोहर'* है और जिसे आनन्दप्रद फिरदौस होने की आशा की गई थी, निश्चय हम ऐसी आशा नहीं करेंगे। तथापि, प्रभु परमेश्वर ने इस स्थान को **अपनी उपस्थिति** प्रकट करने और *इसके मध्य* **अपने नाम** को रखने के लिए चुना था। परमेश्वर ने अपने शत्रु को कुछ समय तक के लिए अपनी दिव्य योजना में 'रुकावट डालने' की अनुमति दी ताकि सुसमाचार का प्रचार अन्यजातियों में हो सके (रोमियों 11:24,25)। परन्तु परमेश्वर की योजना के अनुसार अन्ततोगत्वा सभी बातें पूरी हो जाएंगी। जी हां, मैं विश्वास करता हूं, कि इस्राएल के मध्य परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर अन्तिम समय के लिये एक बार फिर **शकीनाह महिमा की ज्योति** दोबारा शीघ्र ही चमकेगी ताकि वह स्वयं को वहाँ सदा के लिए प्रतिष्ठित करे।

''वाटिका के मध्य में''

आइये हम *'वाटिका' के नमूनों और प्रतिबिम्बों* पर अध्ययन करें जैसा कि उत्पत्ति 2:9 में वर्णन किया गया है। इस पद में *'दो वृक्षों'* के अव्यय के साथ वास्तव में *'वाटिका'* एक श्लेष है। यहां एक भेद छिपा हुआ है। *'जीवन का वृक्ष'* और *'भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष'* ये *'दोनों वृक्ष'* अदन की वाटिका के *मध्य में* भूमि से उत्पन्न होनेवाले शाब्दिक स्वाभाविक वृक्ष नहीं हैं। पवित्र आत्मा के द्वारा प्रयोग की गई *विशेष अभिव्यक्ति* ***दो व्यवस्थाओं*** को दर्शाती है जो **मानव शरीर**

की *'वाटिका के मध्य'* प्रजनन जननेंद्रियों पर नियंत्रण रखती हैं। ये दो *व्यवस्थाएं* स्पष्ट रीति से एक-दूसरे का विरोध करती हैं। यदि आप कनान देश के मानचित्र पर ध्यान दें तो आपको मालूम हो जाएगा कि देश की सीमाओं के *मध्य में* यरूशलेम है। यरूशलेम ही वह स्थान है जहां प्रभु परमेश्वर ने अपना नाम प्रगट किया था और जहां उसने अपने ***जीवन के वृक्ष*** को लगाया था, अर्थात् *उसका दिव्य वचन* —— **जिसके द्वारा उसके चुने हुए लोग *उसकी शकीनाह महिमा* के *जीवन तक* पहुंच सकें।** जिस रीति से परमेश्वर के विरोधी शैतान ने अदन की *वाटिका के मध्य* में पाए जानेवाले–*'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष'* अर्थात् *वर्जित वृक्ष* में भाग लेने के लिए हव्वा को बहकाया, ठीक वैसे ही परमेश्वर के दिव्य वचन को तोड़ने के लिए उसने परमेश्वर के लोगों को अपने वश में करने के द्वारा परमेश्वर और उसकी सच्चाई के विरुद्ध इसी स्थान पर वह निरन्तर संघर्ष भी कर रहा था। जिस रीति से आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से निकाल दिया गया, वैसे ही इस्राएल की सन्तान को भी कनान देश से निकाल दिया गया और उनके शत्रुओं, अश्शूरियों और बाबुल वासियों के हाथों में सौंप दिया गया था।

जीवन का जल

अदन से निकली **एक नदी** के द्वारा अच्छी सिंचाई पाकर उस वाटिका ने बहुतायत के जीवन को उत्पन्न किया और जीवन की एक प्रचुरता प्रदान की। यह परमेश्वर का फिरदौस था। परमेश्वर ने सुन्दर वाटिका लगाई और इसे *संवारने* के लिए आदम को दे दिया। आदम और उसकी पत्नी के साथ सहभागिता और बातचीत करने के लिए वाटिका के *मध्य* शाम के समय प्रभु परमेश्वर आता था। इस रीति से, स्वयं **जीवन–अनन्त आत्मिक जीवन** यहां इस वाटिका में था।

यद्यपि आदम और हव्वा स्वाभाविक जीवित प्राणी थे, जिन्हें परमेश्वर के स्वरूप और समानता में सृजा गया था, तथापि, वाटिका में ***'आत्मिक वृक्षों'*** के रूप में वे भी परमेश्वर के द्वारा लगाए गए थे। यद्यपि उनका जीवन पापरहित था, तथापि उन्हें निरन्तर ***जीवन के आत्मिक जल*** से **पीना** और ***जीवन के वृक्ष*** से ***'भोजन'*** **खाना** था जिसे केवल परमेश्वर की शकीनाह महिमा पूरी कर सकती थी, जिस रीति से वाटिका के स्वाभाविक वातावरण को इसकी निरन्तर बढ़ोतरी के लिए अदन की नदी से जीवन रक्षक जल और पोषक पदार्थों की आवश्यकता होती थी। *स्वाभाविक वृक्षों* को *स्वाभाविक जल* की आवश्यकता होती है, वैसे ही *'आत्मिक वृक्षों'* को *'आत्मिक जल'* की आवश्यकता होती है। आमीन ! इस रीति से, इन दो *'आत्मिक वृक्षों'* पर ***मसीह*** अर्थात् ***आत्मिक चट्टान,*** के द्वारा जो ***जीवन के जल का झरना,*** और ***जीवन का वृक्ष*** है और जो अदन की वाटिका के *मध्य में मौजूद था प्रतिदिन शाम के ठण्डे समय में* छाया किया जाता था। वास्तव में, जिस रीति से आदम और उसकी पत्नी भौतिक वाटिका में थे, वे उस ***परमेश्वर की वाटिका*** में भी थे —— परमेश्वर की अनन्त उपस्थिति के साथ उस सच्चे आत्मिक ***'अदन की वाटिका'*** में भी थे।

जबकि अदन की नदी वाटिका को सींचती थी, तो विभिन्न प्रकार के स्वाभाविक बीज उगकर फल उत्पन्न करते थे। ये भोजन केवल आदम और उसकी पत्नी के लिए ही नहीं थे परन्तु बहुत प्रकार के पशुओं के लिए भी थे। जी हाँ, वाटिका में **जीवन** था। जैसा कि अदन की नदी वाटिका से *पूर्व की ओर* बहती थी तो यह चार धाराओं में बंटकर चार विभिन्न दिशाओं में होकर *'पृथ्वी पर'* बहती थी। ये नदियां अपने साथ *'जीवन के पानी'* को जो अदन की वाटिका में था

अपने अन्तिम चरण तक ले जाती थीं; और यह *'जीवन'* अदन और इसकी वाटिका से बाहर पृथ्वी को सींचता और तृप्त करता था।

पहला आदम

'और यहोवा परमेश्वर ने अदन देश में पूर्व की ओर एक वाटिका लगाई; और वहां आदम को जिसे उसने रचा था रख दिया।' —— उत्पत्ति 2: 8

परमेश्वर का पहला ऐहिक पुत्र आदम था। अदन की वाटिका उसका निवास स्थान थी। पृथ्वी उसकी भूसम्पत्ति थी। पृथ्वी पर बसने, इसे अपने अधिकार में रखने और समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर चलनेवाले सभी जीवित प्राणियों पर अपना *अधिकार* रखने का कार्यभार उसे सौंपा गया था। सभी प्राणियों पर वह *राजा* और *अधिकारी* था। परमेश्वर ने आदम के पार्श्व भाग का एक ऑपरेशन किया और एक स्त्री बनाई और उसे आदम के पास लाया (उत्पत्ति 2: 22) और वह उसकी पत्नी और *रानी* बन गई।

बहुत अधिक समय नहीं बीत पाया कि शैतान ने जो *घुसपैठिया* है, वाटिका में प्रवेश किया और सर्प को प्रेरित किया कि *'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष'* में भाग लेने के द्वारा स्त्री को भ्रष्ट करे। वह स्त्री बहकाई गई और उसने परमेश्वर के वचन के विरुद्ध पाप किया (1 तीमु॰ 2:13,14)। स्त्री के लिए मृत्यु निश्चित थी। अपनी व्याकुलता के साथ वह आदम को उत्तेजित करती रही, जब तक उसने उसकी बात स्वीकार न कर ली (उत्पत्ति 3:17)। परन्तु आदम बहकाया *नहीं* गया जब उसने स्त्री के अपराध के साथ अपना तादात्म्य स्थापित किया। स्त्री के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने के लिए जो उसकी अंग थी आदम ने स्वेच्छा से मृत्यु का मूल्य चुकाया। स्त्री के साथ मृत्यु की दशा में रहने या स्त्री के बिना जीवन बिताने के लिए वह चुनाव कर सकता था। तथापि, महान् अनुग्रहकारी परमेश्वर की बचानेवाली सामर्थ्य और अनुग्रह के सम्बन्ध में आदम अनभिज्ञ (प्रकाश रहित) नहीं था, क्योंकि वह उसका (परमेश्वर का) एक अंग था। प्रभु का नाम धन्य है। वह मरने के लिए इच्छुक था ताकि स्त्री जीवित रह सके, यहाँ तक कि यदि यह कुछ सहस्र वर्षों के लिए ही था — कहने का तात्पर्य *एक अस्थायी उद्धार से है।*

इस रीति से, आदम अपनी पापी पत्नी और पवित्र परमेश्वर के मध्य दरार में खड़ा हो गया। आदम के इस के कर्म के कारण, उस पर मृत्यु दण्ड *आरोपित* किया गया जो उसके सभी वंशजों में फैल गया। अपनी दुलहन को बचाने के लिए, आदम ने उसके पाप के साथ तादात्म्य स्थापित किया और स्त्री के लिए अपना जीवन दे दिया। वह अपनी पत्नी के लिए मरा। यीशु मसीह जो दूसरा आदम अर्थात् अन्तिम आदम कहलाता है उसके लिए आदम को (प्रभु की आत्मा के द्वारा चित्रित किया गया) नमूना बनना था (पढ़ें:1कुरि॰15: 44-49)। आदम के जैसा, अपनी पतित दुलहन (कलीसिया) के निवेदन को सुनने का चुनाव यीशु मसीह ने स्वेच्छा से किया। यीशु मसीह ने कलीसिया की पतित दशा के साथ अपना तादात्म्य स्थापित किया ताकि वह उसके साथ पति और पत्नी के रूप में सदाकाल तक रह सके। मसीह यीशु ने अपना **जीवन** देने का चुनाव किया ताकि हम जीवित रह सकें। उसकी मृत्यु ने हमारे लिए **जीवन** उपलब्ध कराया। जी हाँ, हमारे और परमेश्वर के मध्य ख़ाली जगह या दरार में वह खड़ा हो गया। उसके पवित्र नाम की महिमा हो।

पूरब

वाटिका में जब **मृत्यु** का प्रवेश हो गया, तो आदम और हव्वा को वहां से निकाल दिया गया और उन्हें **जीवन** से वंचित कर दिया गया। वाटिका में प्रवेश का मार्ग *पूर्व* दिशा से था——वह ***'पूर्वी फाटक'*** था। उसी दिन से इसकी पहरेदारी परमेश्वर की सेवा करनेवाले स्वर्गदूतों (करूब) और घूमनेवाली ज्वालामय तलवार के द्वारा की जा रही थी ताकि मनुष्य जाति *उस* ***जीवन के वृक्ष*** (उत्पत्ति 3: 22-24) का फल सीधे और पूर्ण रूप से कभी न खा सके, तथापि एक चुने हुए झुंड को इसे मात्र 'चखने' की अनुमति दी गई। जब तक परमेश्वर की *'धार्मिकता के सूर्य'* का उदय न हुआ, मनुष्य जाति को उस **जीवन** तक पहुंचने से वंचित रखा गया। तथापि, याहवेह जो अनुग्रह और दया का धनी है, उसने मृत्यु को अधिक समय तक बने रहने की आज्ञा नहीं दी। प्राय: 4000 वर्षों के बाद पूर्व देश के ज्योतिषियों ने यह घोषणा की: *'हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको दण्डवत् (प्रणाम) करने आए हैं।'* ओह, धन्य हो प्रभु का पवित्र नाम ! जी हाँ, *'पूर्वी फाटक'* से केवल एकलौते पुत्र को प्रवेश करते देखा गया है और वाटिका——कनान अर्थात् प्रतिज्ञा किया हुआ देश——में **जीवन** वापस आ गया। वह थिऑफनि के रूप में नहीं आया, पर उसने एक कुँवारी से जन्म लिया। आमीन! केवल *'बुद्धिमान'* लोग ही उस **जीवन** की वापसी को पहचानेंगे और उसे दण्डवत् करेंगे।

इब्राहीम

''विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ; तौभी निकल गया।

विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया।

क्योंकि वह एक ऐसे नगर की खोज में था जिसकी नीवें हैं, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।''

——इब्रा॰ 11: 8-10

परमेश्वर के **स्वर्गीय पवित्र नगर** के सम्बन्ध में इब्राहीम की बुलाहट चुने हुए लोगों के लिए उसके (परमेश्वर के) प्रकाश का आरम्भ था। *उत्पत्ति की पुस्तक में,* इस पवित्र नगर के विषय मूसा ने कुछ भी नहीं कहा। तथापि, इब्राहीम ही पहला व्यक्ति था जिसे परमेश्वर के इस नगर के विषय बताया गया। वह **विश्वास का पिता (जनक)** था। उसने इस नगर को दूर से देखा और अपने वंशज इसहाक और याकूब को इसका **प्रकाशन** दिया। दूसरी ओर, बहुत से लिखित प्रमाण हैं जो यह दर्शाते हैं कि किस रीति से शैतान ने, अपने सर्प के वंश के द्वारा इस पृथ्वी पर बहुत से बड़े-बड़े नगरों का निर्माण किया। जलप्रलय के बाद, कूश और निम्रोद के द्वारा, शैतान ने लोगों को भी बहकाया और एक अव्यवहारिक (काल्पनिक) साम्राज्य के निर्माण के लिए उन्हें अपने वश में किया। पृथ्वी के एक निश्चित भाग में लोगों को घेरकर रखने के लिए, शैतान ने उन्हें यह विश्वास करने के लिए बहकाया कि मात्र शारीरिक शक्ति के द्वारा स्वर्ग पहुँचा जा सकता है। इसलिए, बाबुल का गुम्मट बनाया गया। इसके विपरीत, हमारे विश्वास के पिता, इब्राहीम को यह

दिखाया गया कि स्वर्ग को नीचे उतरना अवश्य है ताकि परमेश्वर की महिमा को हम अपनी आत्माओं (souls) में देख सकें।

प्रतिज्ञा किया हुआ देश, प्रतिज्ञा किया हुआ नगर

दोगुनी **विरासत** प्राप्त करने के लिए परमेश्वर ने इब्राहीम को बुलाया था : पहला **प्रतिज्ञा किया हुआ देश कनान,** और दूसरा **प्रतिज्ञा किया हुआ परमेश्वर का नगर।** अपने और अपने वंशजों के लिए ऐसी विरासत प्राप्त करना इब्राहीम के लिये सहज कार्य नहीं था। यद्यपि परमेश्वर की प्रतिज्ञा के द्वारा उन्होंने उस देश में निवास किया पर विरासत का यह अधिकार सैकड़ों वर्षों की जांच और परीक्षण के *बाद ही* उन्होंने प्राप्त किया। जिस रीति से आग से सोना शुद्ध किया जाता है वैसे ही परमेश्वर मनुष्य को भी शुद्ध करता है। ओह, क्या ही अद्‌भुत बात है। जी हाँ, परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य का महत्त्व चोखे सोने या मूल्यवान धातु या पत्थर से कहीं अधिक है। इब्राहीम को जांचा और शुद्ध किया गया, इसहाक को जांचा और शुद्ध किया गया और वैसे ही याकूब को जांचा और शुद्ध किया गया। दूरदर्शिता के साथ वे विश्वासी मनुष्य थे। वे केवल प्रतिज्ञा किए हुए देश का उत्तराधिकार प्राप्त करने के प्रयास में ही नहीं थे, जिस में वे निवास कर रहे थे, परन्तु वे अजनबी थे जो *'एक ऐसे नगर की बाट जोह रहे थे जिसकी नीवें हैं, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है'।* उन्होंने अपने जीवनकाल में इस नगर को नहीं देखा, न तो इसमें प्रवेश ही किया, क्योंकि वह **नगर** एक भौतिक शाब्दिक नगर ***नहीं*** था। अन्य बहुत से लोगों के साथ, वे *''सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाईं; पर उन्हें दूर से देखकर अनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। जो ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उसकी सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, सो उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है''* (इब्रा॰ 11:13-16)।

जी हाँ, वे केवल एक तीर्थयात्री थे, तथापि एक ऐसी भूमि, एक ऐसा देश जो आकाश से परे है उसकी यात्रा में वे **विश्वासी लोगों का एक पवित्र देश** (1पतरस 2:9) थे। उस दिन के लिए वे ऐसे **पत्थरों** के रूप में थे जिसे स्वयं प्रधान निर्माता ने *चुना, काटा-छांटा और परिष्कृत किया,* जब वह स्वर्गीय पवित्र नगर के **कोने की आधारशिला** (नींव के लिए) के रूप में **चोटी के पत्थर** को रखेगा। जब सर्वोच्च रचयिता अपने **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** को बनाएगा तब वह इन **पत्थरों** को स्थिति के अनुसार ***अपने अपने स्थान*** पर रखेगा। प्रतिज्ञा के अनुसार, परमेश्वर का मेम्ना, जो जगत की उत्पत्ति से पहले बध किया गया था, उसने अपने विषय लिखी गई बातों को आकर पूरा किया। एक **पवित्र नगर** जिसमें स्वयं मसीह यीशु सदाकाल तक वास करे इसके लिए परमेश्वर के पूर्व-निर्धारित उद्‌देश्य को पूरा करने के लिए लगभग 2000 वर्ष पूर्व, सिय्योन में ***निश्चित नींव के पत्थर के रूप में*** उसने अपना जीवन अर्पण किया। आमीन ! जी हाँ, तब परमेश्वर का चुना हुआ प्रत्येक जन उस पर रखा जाएगा और ''मसीह में'' जो शहर की नींव है *''स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशिष दी है''* उसके भागी होंगे (इफि॰1: 3-12 के साथ तुलना करें)। उन **पत्थरों** को भी जिन्हें इब्राहीम से पूर्व, आदम के समय से इकट्‌ठा किया गया

पवित्र नगर, नया यरूशलेम

था, और प्रधान निर्माता के द्वारा तदनुसार काटा गया था, उन्हें भी उचित स्थान पर रखा जाएगा। ध्यान दें, हमारे सम्बन्ध में पौलुस अब क्या कहता है : *''इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो''* (इफि॰ 2:19-22)। जी हाँ, *''क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं''* (इब्रा॰ 13:14)। प्रभु का नाम धन्य हो !

प्रतिज्ञा किया हुआ देश **कनान** दूध और मधु से भरा हुआ एक मनोहर देश था। इब्राहीम के साथ बांधी गई वाचा के समय से, लोगों का एक पर्याप्त उन्नत देश होने के लिए प्राय: 500 वर्ष का समय लगा ताकि वे उस देश में प्रवेश करके उसे जीतकर अपने वश में कर लें। यद्यपि इसहाक और याकूब (इस्राएल) के द्वारा इब्राहीम के वंशजों के वश में यह देश था, तथापि इन में से अधिकांश लोगों के पास उनके पिता इब्राहीम का विश्वास कभी भी नहीं था। बहुत से लोग सांसारिक *'अदन की वाटिका'* से परे कुछ भी नहीं देख सके, क्योंकि सांसारिक होने के कारण वे केवल उन अच्छी वस्तुओं की खोज में थे जो उनकी भूमि, उनका देश, उनका राष्ट्र और उनका नगर उन्हें दे सकता था। ये सब वे लोग थे जिन्होंने एक विश्वासी के विश्वास को धीरे-धीरे नष्ट कर दिया और परमेश्वर के वचन का नाश किया जो उन्हें दिया गया था। इसलिए, सच्चे इस्राएली कौन थे ? *''वे इस्राएली हैं; और लेपालकपन का हक्क और महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन ! परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिए कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं; और न इब्राहीम के वंश होने के कारण सब उसकी सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा। अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर के सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा की सन्तान वंश गिने जाते हैं''* (रोमियों 9:4-8)। जी हाँ, वे सांसारिक इस्राएली परमेश्वर की सन्तान नहीं थे यद्यपि वे इब्राहीम की सन्तान थे। केवल वे लोग जो प्रतिज्ञा किए हुए वंश (इसहाक) से उत्पन्न थे वे ही वास्तव में प्रतिज्ञा की सन्तान थे, क्योंकि उन्हें ही स्वर्गीय बुलाहट में भाग लेने के लिए लोगों का **पवित्र देश** कहा गया। बुलाए गए पवित्र लोग अर्थात् इस्राएली और अन्य जातियां, प्रतिज्ञा की सन्तान हैं, जो इस जगत से जो उनका घर नहीं यात्रा कर रहे तीर्थ यात्री हैं।

> *''तुम तो उस पहाड़ के पास जो छूआ जा सकता था और आग से प्रज्वलित था,*
> *और काली घटा, और अंधेरा, और आंधी के पास,*
> *और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिसके*
> *सुननेवालों ने विनती की, कि अब हमसे और बातें न की जाएं :*
> *क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि कोई पशु भी पहाड़ को छूए, तो*
> *पत्थरवाह किया जाए।*
> *और वह दर्शन ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा; मैं बहुत डरता और कांपता हूँ।*

*पर तुम **सिय्योन के पहाड़** के पास, और **जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम** के पास,*

*और लाखों स्वर्गदूतों और उन **पहिलौठों की साधारण सभा** और **कलीसिया** जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और **सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं**,*

और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु... के पास आए हो...।'' - इब्रानियों 12:18-24

शकीनाह* महिमा—परमेश्वर की उपस्थिति

मिस्र में 430 वर्षों की गुलामी के बाद इस्राएल की सन्तान को रिहाई मिली। जब उन्होंने मिस्र देश को छोड़ा तो *उनके मध्य* में परमेश्वर की उपस्थिति दिन के समय बादल के खम्भे में और रात्रि के समय आग के खम्भे में थी। मिस्रियों की गुलामी से उनकी रिहाई के बाद, इस्राएल की सन्तान कनान देश में सीधे प्रवेश कर सकती थी, परन्तु उनके विश्वास की कमी और उनके बुरे कामों के कारण उन्हें 40 वर्षों तक जंगल में भटकने की सज़ा दी गई (व्य॰ वि॰ 2:14; गिनती 14:33-35)। प्रतिज्ञा किए हुए परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखनेवाले केवल दो सच्चे विश्वासी थे। उस अवधि में, लोगों के मध्य अपनी उपस्थिति को प्रगट करने के लिए परमेश्वर ने अपने लिए एक निवासस्थान बनाने की आज्ञा मूसा को दी (निर्गमन 25-27)। जैसा कि यह **मूसा का निवासस्थान** कहलाता था, यह केवल एक अस्थायी घर था। इसकी बनावट आयताकार थी। इसके दो भाग थे : **पवित्रस्थान** और **परम पवित्रस्थान** जिसके चारों ओर आंगन था। (निर्ग. 26:33, 34; इब्रा॰ 9:2-7; निर्ग॰ 40:8)। **वाचा का सन्दूक**, **परम पवित्रस्थान** में था। सन्दूक के ऊपर, चोखे सोने से बना हुआ ढक्कन, **अनुग्रह-आसन** था। सन्दूक के ऊपर सोने के बने हुए दो करूब आमने-सामने थे। इन करूबों के मध्य **परमेश्वर की शकीनाह महिमा** (या जीवन का वृक्ष) प्रगट होती थी, जहां से परमेश्वर अपने भविष्यवक्ता मूसा से बातचीत करता था। (यह सन्दूक लकड़ी का था जिस पर सोना मढ़ा हुआ था। सन्दूक ने मानवता में परमेश्वरत्व का प्रतिनिधित्व किया। जैसा कि इस्राएल की सन्तान आग के खम्भे के द्वारा अगुआई पाकर प्रस्थान किया करती थी तो निवासस्थान की पवित्र वस्तुओं की देखभाल करने और उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की जिम्मेवारी लेवियों और याजकों को सौंपी गई थी (गिनती 3-4; 10:33-36; यहोशू 3:3-6)। निवासस्थान को सर्वदा इस रूप में स्थापित किया गया कि इसका एकमात्र मुख्य ***प्रवेशद्वार*** (पवित्रस्थान में प्रवेश करने का) का मुंह ***पूर्व की ओर*** हो। (बाद के सभी मन्दिरों का निर्माण ऐसा ही हुआ, उनके मुख्य प्रवेशद्वार का मुंह *पूर्व की ओर* था, निर्ग॰ 27:13-14; यहेज॰ 8:16 के साथ तुलना करें।) मूसा का निवासस्थान इस्राएल का धार्मिक केन्द्र था।

मूसा के निवासस्थान ने **परमेश्वर के लॉगॉस** का *पूर्वाभास* दिया जो एक **शारीरिक निवास्थान**——उस मनुष्य अर्थात् यीशु मसीह में निवास करने के लिए आनेवाला था। सम्पूर्ण निवासथान की रूप-रेखा हमारे प्रभु यीशु मसीह के **जीवन**, **सेवकाई** और **कलीसिया** का *पूर्वाभास* देती है। यह *'परमेश्वर के भवन का निवास'* (1 इति॰ 6:48) भी कहलाता था। ठीक वैसे ही, **मसीह (जीवन का वृक्ष)** में निवास करने के लिए परमेश्वर वास्तव में आया जो कलीसिया में निवास करता है और जो परमेश्वर का घराना कहलाता है। इस *'परमेश्वर के भवन के निवास्थान'*

* [illegible]

से लोगों के लिए प्रभु के वचन की सेवकाई की जाती है।

जंगल में लगभग 40 वर्षों के बाद निवासस्थान को यहोशू के नेतृत्व के अन्तर्गत यरदन नदी के पार *कनान* देश में ले जाया गया। दूसरे शब्दों में, अब प्रभु की शकीनाह उपस्थिति *'अदन की वाटिका'* में 'बहुत दिनों' तक वहां से अलग रहने के बाद वापस लौट आई थी। और वह (प्रभु) अपने चुने हुओं के साथ उस *'वाटिका'* में तब तक रहेगा जब तक वे वचन का पालन करेंगे। दाऊद राजा के दिनों में, जब उसने **सिय्योन** को यबूसियों से जीतकर अपने अधिकार में कर लिया, तो वह वाचा के सन्दूक को वहां ले आया, और निवासस्थान को गिबोन में रहने दिया (1 राजा 3:4; 2 शमूएल 5-6 अध्याय)। **सिय्योन पर्वत**, जो **दाऊद का नगर** भी कहलाता था, *'वाटिका के मध्य'* अर्थात् *कनान* देश में था। यह कितना उपयुक्त है, *''परन्तु मैंने यरूशलेम को इसलिए चुना है, कि मेरा नाम वहां हो, और दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो'* (2 इति॰ 6:6)। राजा दाऊद हमारे राजा यीशु अर्थात् **परमेश्वर की वाचा के सन्दूक** का एक नमूना था जो अपने समय में यरूशलेम में अपने लोगों के मध्य निवास कर रहा था। *नयी उत्पत्ति के युग में* राजा यीशु यरूशलेम में अपने सहस्राब्दिक सिंहासन पर विराजमान होगा और इस्राएल और सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य करेगा।

> *''क्योंकि यहोवा ने **सिय्योन** को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिए चाहा है। यह तो युग युग के लिए मेरा विश्रामस्थान है; यहीं मैं रहूंगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।''* —भजन संहिता 132:13, 14

इस रीति से, आदम के समय में ***जीवन का वृक्ष*** जो अदन की वाटिका के मध्य में था, अपनी उपस्थिति को प्रगट करने के लिए अब अपने *मूल स्थान पर वापस लौट आया था।* परन्तु पाप के कारण, कोई भी इसके पास सीधे नहीं पहुंच सका, जैसा कि पाप से पूर्व आदम और उसकी पत्नी के लिए ऐसा संभव था। जब तक ***जीवन का वृक्ष*** कुछ चुने हुए पात्रों के द्वारा अपने प्रेम और सच्चाई को प्रगट करने के लिए जीवित जल (यूहन्ना 7:37-39 के साथ तुलना करें) की नदी के अपने आंतरिक भाग को नहीं खोलता तब तक इस्राएल के निवासियों में जीवन नहीं होगा।

मूसा के निवासस्थान के बदले एक अधिक स्थायी मन्दिर की इमारत को दाऊद राजा ने प्रस्तावित किया। परन्तु मन्दिर का निर्माण केवल उसके पुत्र सुलैमान के शासनकान में ही पूरा हुआ था। वह मन्दिर, जिसमें वाचा का सन्दूक रखा गया था, उसका निर्माण सुलैमान के द्वारा मोरिय्याह पहाड़ पर ठीक दाऊद के नगर के उत्तर में उस स्थान पर किया गया था जहां यबूसी ओर्नान का खलिहान था (2 इति॰ 3:1 की तुलना 1 इति॰ 21:20-22 के साथ करें), और जैसा कि विश्वास किया जाता है कि इसी स्थान पर इब्राहीम ने प्रभु के लिए इसहाक को भेंट चढ़ाया था (उत्पत्ति 22:1-2)। देखने में यह अत्यन्त ही सुन्दर और भव्य मन्दिर था, केवल इसलिए नहीं कि लेबनान के देवदारु और सरु की लकड़ियों को काटने और गढ़ने में बड़ी निपुणता का प्रयोग किया गया था, परन्तु इसके निर्माण में बड़ी मात्रा में सोने और चांदी का भी प्रयोग किया गया था। इस इमारत के निर्माण में साढ़े सात वर्ष का समय लगा (1 राजा 6:1, 38)। मूसा के निवासस्थान से यह दोगुना बड़ा था। जब वाचा के सन्दूक को इसमें लाया गया और मन्दिर (जो **सुलैमान का मन्दिर** कहलाता है) अर्पण किया गया तो परमेश्वर की महिमा (तेज) से यह भवन इतना भर गया था

कि याजक लोग अपनी सेवकाई नहीं कर सके। पढ़ें : 2 इतिहास 3 से 7 अध्याय।

वाचा का सन्दूक

तथापि, इस्राएल के, विशेषकर प्राचीनों के द्वारा धर्मत्याग के कारण यह मन्दिर सदाकाल तक के लिए बना न रहा। उन्होंने आत्मिक और नैतिक पतन का जीवन यापन किया। परमेश्वर ने यहेजकेल नबी को ये सब बातें दर्शन में दिखाईं। (पढ़ें : यहेज़केल 4-24 अध्याय)। इसमें इस्राएल

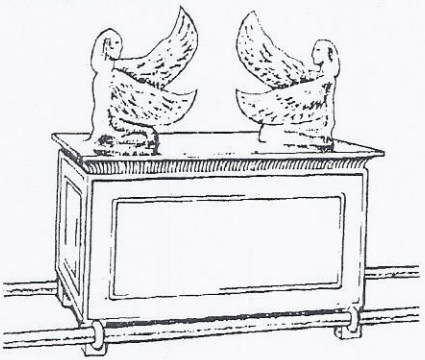

के शाही शासन की समाप्ति को दिखाया गया, जैसा कि लिखा है : *"मैं इसको उलट दूंगा और उलट-पुलट कर दूंगा; हां उलट दूंगा, और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दूंगा।"* (यहे॰ 21:25-27 से तुलना करें)। उन दिनों में परमेश्वर ने लोगों को बन्धुआ बनाने और राजा (सिदकिय्याह) और उसके पुत्रों की हत्या करने के लिए बाबुल के लोगों को यरूशलेम भेजा। परन्तु ठीक 587-586 बी.सी. (मसीह से पूर्व) में नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी से पहले (2 राजा 25:8-21), परमेश्वर का तेज (शकीनाह महिमा) मन्दिर पर से उठ गया, और *"नगर के **बीच** में से उठकर उस पर्वत पर ठहर गया जो नगर की **पूर्व** ओर है"* (यहेज॰ 11:22-23)। यह **पूर्व की ओर,** जैतून पर्वत (जो समुद्र तल से लगभग 2700 फीट ऊंचा है, और सिय्योन पर्वत की अपेक्षा 150 फीट ऊंचा है) की ओर चला गया जो आधे मील से कम की दूरी पर है। तथापि, परमेश्वर का वह तेज जो मन्दिर में **वाचा के सन्दूक** से हटा और पूर्व की ओर जैतून पर्वत की ओर चला गया, प्राय: 620 वर्षों के बाद **वाचा के सन्दूक** पर ठहर गया। वाचा का यह **सन्दूक** हाथों से नहीं बनाया गया था, और यह एक **जलाली देह** के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर गया। जकर्याह 14 अध्याय के अनुसार, *प्रभु के उस दिन* में अर्थात् *सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई* (प्र॰वा॰16:14,16) में परमेश्वर का तेज दोबारा वापस लौटेगा और जैतून पर्वत पर ठहरेगा। इसके बाद वह उसी स्थान पर लौट जाएगा जहां उसने अपनी उपस्थिति सर्वदा प्रगट की— *"तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज पूर्व दिशा से आया; और उसकी वाणी बहुत से जल की घरघराहट सी हुई; और उसके तेज से पृथ्वी प्रकाशित हुई ...तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूर्वमुखी था, भवन में आ गया"* (यहे॰ 43:2,4 की तुलना पद 7 से करें)। *"उठ प्रकाशमान हो, क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है"* (यशा॰ 60:1)।

इस्राएल पर अपनी विजय पाने के बाद, बाबुल के लोगों ने मन्दिर को जड़ से मिटा दिया। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि उस आक्रमण के समय में वाचा के सन्दूक को नष्ट कर दिया गया या गायब कर दिया गया। इस्राएल के पतन से पूर्व, यिर्मयाह ने भी यह भविष्यद्वाणी की थी कि भविष्य में वाचा के सन्दूक की खोज नहीं की जाएगी, क्योंकि अन्ततः यरूशलेम **याहवेह का**

सिंहासन (यिर्म॰ 3:16-17) हो जाएगा, **नई वाचा** के अन्तर्गत (यिर्म॰ 31: 31-34) परमेश्वर पर प्रत्यक्ष विश्वास के द्वारा वाचा के सन्दूक का प्रतीकवाद बदल जाएगा। (इस बात को ध्यान में रखें कि सोने से मढ़ा हुआ 'लकड़ी का सन्दूक' याहवेह के अनुग्रह का वास्तविक आसन कभी नहीं रहा, परन्तु जब तक वास्तविक वाचा का सन्दूक और अनुग्रह का आसन प्रकट न हुआ एक *नमूने* के रूप में इसका प्रयोग किया गया।) इसके अतिरिक्त परमेश्वर का सिंहासन होने के कारण यरूशलेम *आत्मिक राज्य* को भी दर्शाता है जहां **वाचा का सन्दूक** (मसीह अर्थात् परमेश्वर का प्रकाश) स्वर्ग से उतरे हुए **पवित्र नगर नये यरूशलेम** में विराजमान पाया जाएगा।

इस्राएल के बन्धुआई से लौटने के बाद नये मन्दिर का निर्माण मसीह से 516 वर्ष पूर्व किया गया था जो **जरूब्बाबेल का मन्दिर** कहलाता है। इसका निर्माण उसी आधार-शिला पर किया गया जिस पर सुलैमान ने किया था। यह एक साधारण मन्दिर था। तथापि, रोमी शासनकाल में हेरोदेस महान् जिसे रोमी राज्यसभा के द्वारा यहूदा का राजा नियुक्त किया गया था, उसने मन्दिर के विस्तार और वास्तुशिल्पीय रूप-रंग को बहुत अधिक निखारा। इसलिए, साधारणत: यह **हेरादेस के मन्दिर** के नाम से भी जाना जाता है। तथापि, मन्दिर का निर्माण मूल्यवान धातुओं की प्रचुर सजावट, सुपरिष्कृत रीति से नक्काशी किए गए साज-समान, और कढ़ाई किए गए वस्त्रों की सुन्दरता के साथ अति सुन्दर ढंग से किया गया था, परन्तु परमेश्वर की वास्तविक महिमा मन्दिर में *नहीं* थी, क्योंकि वाचा का सन्दूक परम पवित्रस्थान में नहीं था। वाचा के सन्दूक के न होने से मन्दिर में परमेश्वर का तेज नहीं था। ओह ! ऐसा लगता है कि वाचा का सन्दूक गायब हो गया था, पर बात ऐसी नहीं। मलाकी नबी के समय में, इस्राएल के लिए एक भविष्यद्वाणी की गई थी, वह यह है : *"देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हाँ, वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है"* (मलाकी 3:1)। *खोए* हुए वाचा के सन्दूक के बदले एक ऐसे महान् को प्रतिस्थापित किया गया जो मनुष्यों के हाथों से भौतिक वस्तुओं के द्वारा निर्मित *नहीं* था। आमीन! परमेश्वर की शकीनाह महिमा उस मनुष्य के शरीर में जो मसीह यीशु कहलाया 'आ गयी' जब उसने उस पर साया किया। मनुष्य के रूप में उसने स्वयं भी यरूशलेम के मन्दिर में आराधना की और सिखाया, कुछ ही धर्मी लोगों ने **प्रभु की महिमा की उपस्थिति** को *अपने मध्य में* पहचाना। जी हां, अक्सर लोग अपनी धार्मिक गतिविधियों में उलझाव के कारण **परमेश्वर के पुत्र के प्रकाशन** के प्रति अन्धे होते हैं। ***"चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं..."*** (भजन संहिता 46:10)।

यीशु मसीह दूत और दूसरी वाचा का सन्दूक था। दाऊद के सिंहासन के लिए वह उपयुक्त **राजा** भी था। अपने भौतिक जीवन और सेवकाई के अन्तिम सप्ताह में, इससे पहले कि वह मन्दिर में प्रवेश करके उसे शुद्ध करे, जैतून पहाड़ पर से यरूशलेम में उसका विजय प्रवेश, जहां उसके अनुयाइयों ने राजा के रूप में उसका अभिवादन किया (मर॰11:1-11) यहेजकेल 21: 27 की भविष्यद्वाणी के पूर्ण होने का *पूर्वाभास दिया*—*"जब तक उसका अधिकारी न आए...तब मैं उसे दे दूंगा।"* जी हां, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के बाद (प्र॰वा॰16:14,16) **परमेश्वर का तेज** पूर्व दिशा में जैतून पहाड़ (जहां से यीशु मसीह का

स्वर्गारोहण हुआ था) पर से *सहस्राब्दि मंदिर* में **पूर्वी फाटक** से प्रवेश करेगा और अपने सिंहासन पर सदाकाल तक के लिए विराजमान होगा। और **वाचा का सच्चा सन्दूक** अपने सिंहासन पर से कभी भी अलग न होगा।

क्योंकि इस्राएल ने उस मसीह को जिसे परमेश्वर ने उनके पास भेजा था अस्वीकार किया और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, इसलिए यरूशलेम दोबारा अन्यजातियों के द्वारा 70 ए.डी. में रौंदा गया जब रोमी लोगों ने 143 दिन तक इसकी घेराबन्दी की थी। प्रतिदिन का बलिदान समाप्त कर दिया गया, दूसरे मन्दिर में मढ़ा गया सोना उतार लिया गया, और इस **मन्दिर** में आग लगा दी गई, पवित्र नगर का पतन हो गया, और लगभग दस लाख लोग मारे गए। इस्राएल तितर-बितर हो गया और तब तक देशविहीन रहा, जब तक 1948 की मई 14 तारीख को *'एक ही दिन में'* (अपनी सरकार और अपना पताका फहराते हुए) उसका 'दोबारा जन्म' न हुआ। (पढ़ें यशायाह 66:8)।

यहेजकेल के दर्शन

बाबुल में इस्राएल की सन्तान के प्रवास के पच्चीसवें वर्ष में, परमेश्वर ने भविष्य में **मसीह के सहस्राब्दिक शासनकाल** के समय इस्राएल की उपासना के संबध में यहेजकेल नबी को बहुत से दर्शन दिखाए। इन दर्शनों का उल्लेख *यहेजकेल नबी की पुस्तक* के अन्तिम नौ अध्यायों (40-48) में किया गया है। दर्शनों में यहेजकेल को इस्राएल देश के ***'बहुत ऊँचे पर्वत'*** पर ले जाया गया। इस *'बहुत ऊँचे पर्वत'* की दक्षिण दिशा की ओर एक **नगर** की बनावट थी। तब यहेजकेल को वहां लाया गया जहां पीतल का रूप धरे हुए और हाथ में सन का फीता और मापने का एक बाँस लिए हुए एक पुरुष **मन्दिर** दिखाने के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह *'बहुत ऊँचा पर्वत'* निश्चय, **सिय्योन पर्वत** था। परन्तु सिय्योन पर्वत जो 2500 फीट से कुछ ही अधिक ऊँचा था वास्तव में इस्राएल देश के बहुत से पर्वतों की तुलना में बहुत अधिक ऊँचा पर्वत नहीं था। यहां *ऊँचाई की अभिव्यक्ति* **यरूशलेम** के महत्त्व को एक सर्वोच्च अधिकार और *सर्वोच्च सामर्थ्य – एक शाही स्तर –* के स्थान के रूप में प्रगट करता है, जो सम्मान और श्रद्धायुक्त विस्मय के योग्य है। सहस्राब्दि की अवधि में परमेश्वर के शासन का यह **सांसारिक सिंहासन** होगा (यशा॰2:2;मीका4:1;जक॰8:3;14:10;यहेज॰28:14;प्र॰वा॰21:10 के साथ तुलना करें)। इसके अलावा, यरूशलेम, राजा दाऊद और राजा सुलैमान का नगर था, ये दोनों हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रतीक थे, जो हमारे परमेश्वर का प्रिय और बुद्धिमान राजा है, *और जो नयी उत्पत्ति के सहस्राब्दि युग में* (मत्ती 19:28; प्र॰वा॰ 20:6) इस्राएल और जगत पर यहां से शासन करेगा। फिर **नये स्वर्ग में और नयी पृथ्वी पर पवित्र नगर नया यरूशलेम—एक आत्मिक नगर—परमेश्वर का पवित्र पर्वत** होगा जहां पृथ्वी पर के राजा लोग अपनी अपनी महिमा और सम्मान अर्पण करेंगे (प्र॰वा॰ 21:24)।

'यहेजकेल 38 और 39 का युद्ध'

अपने दर्शनों में यहेजकेल ने जिस मन्दिर को देखा था, वह इस्राएल के लिए **तीसरा और अन्तिम मन्दिर** होगा जो उसे प्राप्त होगा। निस्सन्देह, इससे पूर्व जो मन्दिर थे उनकी अपेक्षा यह अधिक सुन्दर और भव्य होगा। जो भी हो, इस मन्दिर के निर्माण का आरम्भ कब होगा ? बाइबल

की भविष्यद्वाणियों के अनुसार, बाहरी आंगन को छोड़कर, इस मन्दिर और इसकी वेदी का निर्माण दानिय्येल नबी के *सत्तर सप्ताहों* (दानि॰ 9: 24-27) के अन्तिम सप्ताह के पूरे होने से पूर्व पूरा हो चुकेगा। (प्रकाशितवाक्य 11:1-2 पढ़ें।) इसलिए, मन्दिर के निर्माण के कार्य का आरम्भ उस अवधि से पूर्व हो जाना चाहिए। (जब इस्राएल ने 1967 में मन्दिर के अवशेष के साथ प्राचीन यरूशलेम नगर पर अपना दोबारा कब्ज़ा किया, तो इस्राएल एलदाद नामक एक वृद्ध यहूदी इतिहासकार की बात को 'टाइम' नामक पत्रिका में छापा गया, उसने कहा, *''हम उसी स्थिति पर आ गए हैं जो उस समय थी जब दाऊद ने यरूशलेम को स्वतन्त्र किया था। उस समय से लेकर सुलैमान के द्वारा मन्दिर के निर्माण तक केवल एक पीढ़ी बीती। हमारे साथ भी वैसा ही होगा।)* परन्तु वर्तमान समय में 'चट्टान का गुम्बज' (Dome of the Rock) जो एक रुकावट है उसे बिना जनशक्ति के किसी न किसी उपाय से हटना ही है, क्योंकि यहूदी और इस्लाम मत के माननेवालों के मध्य और विभिन्न राजनीतिक सहयोगी दलों के मध्य भी बिना अधिक रक्तपात के इसे हटाना सम्भव नहीं होगा। भविष्यद्वाणी के अनुसार, यहेजकेल नबी के द्वारा यहेजकेल 38 और 39 में जिस युद्ध के विषय भविष्यद्वाणी की गई है, उसे पूरा होना अवश्य है। नबी ने यह भविष्यद्वाणी की है कि परमेश्वर के द्वारा *''...इस्राएल के देश में बड़ा भुईंडोल होगा...और पहाड़ गिराए जाएंगे; और चढ़ाइयां नाश होंगी, और सब भीतें गिरकर, मिट्टी में मिल जाएंगी''* यह उस समय होगा जब रूस की सेना और उसके साम्यवादी मित्र राष्ट्र इस्राएल पर आक्रमण करेंगे (यहेज॰ 38:19,20)। इसमें सन्देह नहीं कि यह बड़ा भूकम्प सबसे भयानक भूकम्प होगा जबसे मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई है। निश्चय यह भूकम्प ऊमर की मस्जिद को मन्दिर के पर्वत पर से धाराशायी कर देगा और उस पवित्रस्थान के लिए यहूदियों के अधिकार को वापस लौटा देगा। ज्यों ही यहूदी लोग उस वेदी (बलि चट्टान) पर अपना अधिकार कर लेंगे, मैं विश्वास करता हूँ कि वे लोग पवित्रीकरण और धन्यवाद के लिए प्रार्थनाएं करेंगे और यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाएंगे। तब इस्राएल देश अपने *प्रतिदिन का बलिदान और भेंट* दोबारा चढ़ाएगा। तथापि, बाइबल, सम्बन्धित देश इस्राएल में रुचि रखनेवाले बहुत से देशों के साथ बांधी गई अपनी *सात वर्ष की वाचा* के मध्य **ख्रीष्ट-विरोधी** मन्दिर को अपने अधिकार में कर लेगा। और वह *बलिदानों को और चढ़ावों* को बन्द करवा देगा और वह मन्दिर में बैठेगा और स्वयं को परमेश्वर घोषित करेगा। (दानि॰ 9: 27;2 थिस्स॰ 2: 3-7; प्र॰वा॰ 17 पढ़ें।) परन्तु मसीह के आगमन के तेज से उसे नाश कर दिया जाएगा (2 थिस्स॰ 2: 8-9)।

[ध्यान दें : बहुत से लोगों ने यहेजकेल 38 और 39 में वर्णित युद्ध का *ग़लत अर्थ निर्णय किया* है जैसा कि प्रकाशितवाक्य 20: 7-10 में लिखा हुआ है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने पतमुस टापू में अपने दर्शनों में देखा था, इन दोनों को वे एक समझते हैं। पर यह वैसा नहीं है। यूहन्ना ने जिस युद्ध को देखा वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल के *बाद* लड़ा जाएगा—*नयी उत्पत्ति* का सहस्राब्दि युग (मत्ती 19: 28)—जब शैतान को उस अवधि में बंधे रहने के बाद छोड़ दिया जाएगा ताकि वह प्रभु के मसीह के विरुद्ध लड़ाई करने के लिए पृथ्वी के चारों कोनों के देशों के लोगों को भरमाए (प्र॰वा॰ 20:1-10)। बाइबल को पढ़नेवाले *''गोग''* और *''मागोग''* शब्दों से उलझन में हैं। शब्द *''गोग''* उसे प्रकट करता है जो अपने स्वभाव में *घमंडी, शक्तिशाली, बड़ा, विशाल,*

विद्रोही, और परमेश्वर-विरोधी है; और शब्द *"मागोग" उसी देश के विशाल जनसमूह को सम्बोधित करता है।* ***यहेजकेल 38 और 39 का युद्ध*** दानिय्येल की भविष्यद्वाणी के *सत्तर सप्ताहों* के अन्तिम सप्ताह (सात वर्ष) से पूर्व लड़ा जाएगा। यहेजकेल 39 अध्याय के 9वें और 10वें पदों से यह स्पष्ट है जो यह कहता है कि इस युद्ध में प्रयोग किए गए हथियारों को जलाने में सात वर्ष का समय लेगेगा। यदि यह युद्ध दानिय्येल की *सत्तर सप्ताहों* की भविष्यद्वाणी के सत्तरवें सप्ताह में होगा, तो उन हथियारों को जलाए जाने का समय *नयी उत्पत्ति के युग* में बढ़ जाएगा। दूसरी ओर, इससे पहले कि वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी को *नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी* में बदला जाए, यदि यह युद्ध हज़ार वर्षों के बाद होनेवाला है, तब तो उन हथियारों को जलाने के लिए सात वर्षों का और समय चाहिए। इसके साथ ही, यह युद्ध ***'हर-मगिदोन का युद्ध'*** नहीं, क्योंकि पिछला युद्ध केवल महाक्लेश के अन्त के समय पृथ्वी पर पवित्र लोगों के साथ मसीह के आने के बाद *प्रभु के दिन* में लड़ा जाएगा।]

सहस्राब्दिक मंदिर

अपने दर्शनों में यहेजकेल नबी ने जिस मन्दिर को देखा उसे मूसा के निवासस्थान, सुलैमान के प्रथम मन्दिर और हेरोदेस के दूसरे मन्दिर से भिन्न रूप में निर्मित किया जाएगा। मन्दिर के चारों ओर आयताकार दीवार के बदले (अर्थात् मन्दिर का भीतरी भाग जिसमें परम पवित्रस्थान और पवित्र स्थान है), मंदिर स्वंय आयताकार है, इसका भीतरी आंगन 300 हाथ का वर्गाकार और बाहरी आंगन 500 हाथ का वर्गाकार है (1 हाथ लगभग डेढ़ फीट का होता है)। बाहरी आंगन *'पवित्रस्थान'* के क्षेत्र (अर्थात् आंगन और इमारत) को *'लौकिक स्थान'* (अर्थात् जनसाधारण का स्थान) से अलग करता है। वेदी का स्थान जो मन्दिर से ठीक बाहर है वह 100 हाथ का वर्गाकार है। [बाइबल के अनुसार संख्या के मान में विषम एक अंक की संख्याएं परमेश्वरत्व को दर्शाती हैं। *अंक 1 एकता, परमेश्वर के एकत्व और पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है। अंक 3 दिव्य सिद्धता और इसकी सम्पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है। अंक 5 परमेश्वर के अनुग्रह और उद्धारक सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है।]* सम्पूर्ण पवित्रस्थान की सन्तुलित बनावट सच्चे अद्वैत परमेश्वर की दिव्य उपासना के अनुग्रह पर बल देता है। इसके साथ ही, अन्य पवित्र इमारतों से भिन्न, **यहेजकेल के मन्दिर** (जैसा कि यह कहलाता है) के बाहरी आंगन में तीन द्वार हैं, प्रत्येक द्वार उत्तर, पूर्व और दक्षिण में स्थिति के अनुसार केन्द्रित किए गए हैं। भीतरी आंगन में तीन प्रवेश द्वार हैं जो बाहरी आंगन के द्वारों से मिले हुए हैं। (यहेज़केल 40-42 पढ़ें) इन प्रत्येक द्वारों में *सात-सात* सीढ़ियां हैं, और प्रत्येक प्रवेश द्वार में *आठ-आठ* सीढ़ियां हैं। मन्दिर में जाने का जो अन्तिम प्रवेश-मार्ग है उसमें दस सीढ़ियां हैं। वास्तविक मन्दिर की ओर सीढ़ियों और ऊँचाइयों की यह विभिन्न सतह उपासकों की ओर संकेत देती है जो *आत्मिक सिद्धता,* मोचन और *परमेश्वर की व्यवस्था* की खोज कर रहे हैं। इस रीति से, यहेजेकेल का मन्दिर देखने में एक **ऊँचे मन्दिर** के साथ-साथ **पिरैमिडी इमारत** के जैसा है, अर्थात् परमेश्वर की शकीनाह महिमा का स्थान, जहां इस्राएल का राजकुमार यीशु मसीह (Y'shua HaMashiach) विराजमान होकर उपासना ग्रहण करेगा और इस्राएल और विश्व के देशों पर शासन करेगा। क्योंकि प्रभु यीशु मसीह उस **सच्ची वाचा का सन्दूक है,**

इसलिए सोने से मढ़ा हुआ लकड़ी का सन्दूक उस मन्दिर में नहीं होगा। जी हां, उस दिन, जब स्वर्ग में *मेम्ने के ब्याह का भोज* समाप्त हो जाएगा, और *महाक्लेश* समाप्त हो जाएगा, जब प्रभु का मसीह अपने सन्तों के साथ श्वेत घोड़ों पर सवार होकर *हर-मगिदोन की लड़ाई* (प्र०वा०16:16;जक०14:1-15) में लड़ने और अपने राज्य को यरूशलेम में स्थापित करने के लिए आएगा, तो **इस्राएल की महिमा** *'पूर्व की ओर से'* उस घर (मन्दिर) में आ जाएगी (यहेजकेल 43:2,4), और प्रभु (याहवेह) कहेगा, *''...यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पांव रखने की जगह है, जहां में इस्राएल के बीच सदा वास किए रहूंगा। और न तो इस्राएल का घराना, और न उसके राजा...मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएंगे''* (यहेज० 43:7)। *''अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर एक जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे : आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा। वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हँसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे। हे याकूब के घराने, आ, हम यहोवा के प्रकाश में चलें''* (यशा० 2:2-5)। आमीन। ***राजकुमार*** उन्हें 'याहवेह अर्थात् जीवन के पिता की महिमा के प्रकाश में चलना सिखाएगा! मसीह की पत्नी (महिमा प्राप्त छुड़ाए हुए लोग) बारह प्रेरितों को लेकर मसीह के साथ इस्राएल के बारह गोत्रों पर शासन करेगी (मत्ती19:28;प्र०वा०20:6)।

आराधना

आराधना करनेवाले उत्तरी व दक्षिणी द्वार से मंदिर में प्रवेश करेंगे और विपरीत द्वार से बाहर निकलेंगे। कोई भी आराधक एक ही द्वार से प्रवेश और प्रस्थान नहीं करेगा क्योंकि **परमेश्वर के मार्गों में कोई वापसी नहीं** (अय्यूब 34:27; भ०सं० 78:40-41; यिर्म०11:10;मर०13:16)। केवल ***इस्राएल का राजकुमार, पूर्वी द्वार*** से प्रवेश और प्रस्थान करेगा। केवल सब्त और नए चांद के दिन *पूर्वी द्वार* लोगों के लिए सन्ध्या तक खुला रहेगा ताकि वे द्वार के फाटक पर आराधना कर सकें।

नियुक्त उत्सवों के समय जब देश के लोग प्रभु के सम्मुख आएंगे तो उस समय उनकी अगुवाई के लिए हारून के वंश का कोई अभिषिक्त महायाजक नहीं होगा। परन्तु इस्राएल का राजकुमार और राजा (पृथ्वी पर के सभी देशों के राजाओं का राजा) ही याहवेह की उपासना के लिए लोगों का नेतृत्व करेगा क्योंकि वही ***महायाजक*** होगा, और इस्राएल का याजकीय पद हारून महायाजक के वंशज सादोक के पुत्रों को दे दिया जाएगा, जिनका कार्य इस्राएल के लोगों को मंदिर की धर्मविधि और व्यवस्था को सिखाना और उसी के अनुसार उनका न्याय करना होगा। समर्पित याजकीय पद के रूप में जो पवित्र सेवकाई के लिए अलग किए गए हैं, जब वे सेवकाई के लिए भीतरी आंगन और मंदिर के फाटकों में से होकर प्रवेश करेंगे तो उन्हें *मलमल* का वस्त्र अवश्य

पहनना होगा। यहेजकेल 43-46 अध्याय पढ़ें। वे एक *"चुनी हुई महिला"* अर्थात् मसीह की कलीसिया जिसे अलग किया गया है का नमूना प्रगट करते हैं जो *'एक आत्मिक घर', 'एक पवित्र याजकीय', 'एक चुनी हुई पीढ़ी' 'एक शाही याजकीय'* और *'एक पवित्र देश'* के लोगों के रूप में हैं जो *अनन्त युग में* **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** में प्रभु की सेवा करेंगे।

आराधना के अन्य घरों के जैसा, वह द्वार जो भीतरी पवित्र स्थान की ओर खुलता है जब कोई आगे बढ़ता है तो वह उत्तरोतर संकरा होता जाता है (यहे॰ 40:48; 41:2,3)। यह इस बात को दर्शाता है कि ***जीवन के मार्ग में प्रवेश करने के लिये पवित्रता, धार्मिकता और समर्पण अवश्य होना चाहिये।*** *"सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है, और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं"* (मत्ती 7:13-14)। सचमुच, उद्धार पाए हुए लोगों का मार्ग प्रभु की शकीनाह महिमा के द्वारा प्रदीप्त होता है।

[टिप्पणी : यहेजकेल के दर्शन में *"राजकुमार"* (The Prince) शब्द का जो प्रयोग किया गया है वह इब्रानी भाषा के शब्द *"नेज़ी" (nasiy)* से लिया गया है। यह एक सर्वोच्चता प्राप्त को संबोधित करता है जैसे एक *प्रमुख, शासक, राजा, अध्यक्ष, उपायुक्त या महान्।* तथापि *Peshitta Bible* में *'महायाजक'* शब्द का प्रयोग बहुत से स्थानों पर किया गया है जबकि शब्द ***'राजकुमार'*** (Prince) का प्रयोग *Authorized Version* में किया गया है। इस्राएल के पास बहुत से राजकुमार और महायाजक थे, परन्तु उनका केवल एक ही है जो (एकमात्र) **'राजकुमार'** के रूप में जाना जाता है और वही **'महायाजक'– राजकुमार मसीह के रूप में जाना जाता है।** *"यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल का* ***महायाजक*** *बनकर...यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार,* ***धार्मिकता का राजा*** *और फिर* ***शालेम*** *अर्थात्* ***शान्ति का राजा है;*** *जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा; सर्वदा याजक बना रहता है'* (इब्रा॰6:20;7:2-3. पढ़ें—यशा॰ 9:6; दानि॰ 8:25; 9:25)। सुलैमान और दाऊद के जैसे, इस्राएल के अभिषिक्त राजाओं ने, उस **अभिषिक्त राजा** को प्रतिबिम्बित किया जो नयी *उत्पत्ति के युग* में पृथ्वी पर शासन करेगा। जिस रीति से लोगों पर शासन करने और इसके साथ-साथ सम्मान पाने के लिए सुलैमान और दाऊद इस्राएल के सिंहासन पर विराजमान हुए थे वैसे ही राजकुमार मसीह भी विराजमान होगा। जिस रीति से उन्होंने याहवेह के लिए होमबलियों को चढ़ाया (1 इति॰ 21:26; 2 इति॰ 7:1), वैसे ही इस्राएल का राजकुमार भी **करेगा** (यहेज॰ 45:22-25)। (इस बात को स्मरण रखें, कि यीशु मसीह ने स्वयं चुने हुए लोग इस्राएल, उनकी प्रथाओं और उपासना के साथ अपना तादात्म्य स्थापित किया था–मत्ती 3:13; लूका 4:16)। ध्यान दें, इस्राएल के धर्मपरायण राजा लोग अपने सिंहासन पर बैठकर रात दिन केवल सम्मान ही प्राप्त नहीं किया करते थे। उन्होंने लोगों के मध्य जाकर आवश्यकतानुसार उनकी सेवकाई की और उनके साथ मिलकर उपासना भी की। इस रीति से, प्रभु यीशु मसीह *"जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है"*

(1 तीमु॰ 6:15) के अलावा इस्राएल पर शासन करने के लिये अन्य कोई भी दूसरा राजा नहीं होगा, जीवित होकर स्वयं राजा दाऊद भी नहीं होगा, यह बात कुछ धर्मविज्ञानियों की शिक्षा के विपरीत है जो वे लोगों को सिखा रहे हैं। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रीति से हमें यह बताता है कि मसीह **राजा-याजक** (जक॰ 6:12-13) होगा। तथापि इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए कि इस्राएल के गोत्रों पर शासन करने के लिए अन्य राजा (यहेज॰ 45: 8-9; की तुलना गिनती 7 के साथ करें) लोग भी होंगे, और इस्राएल देश में विशेष प्रशासन के लिये अन्य 'नेज़ी' *(nasiy;* शासक, महान् आदि) लोग भी होंगे।]

वह नगर

वह नगर मंदिर से लगभग 12 मील दूर दक्षिण की ओर है, **इसके चारों ओर दीवार है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर है।** [इस बात को स्मरण रखें कि **यरूशलेम** में **मंदिर** और **नगर** दोनों हैं, जहां नगर के साथ संबन्ध में मंदिर मसीह का राजभवन या निवास स्थान है (यशा॰2: 2;यहेज॰43: 7), जहां से वह, याहवेह के तेज के रूप में, समय-समय पर अपने सांसारिक महानगर में जाया करेगा।] प्रत्येक दीवार की लम्बाई 4500 बाँस (या लगभग 11 मील) है। इसके चारों ओर के उपनगर को मिलाकर **यह नगर** लगभग 12 मील वर्गाकार है। यहेजकेल 48वां अध्याय पढ़ें। *'सभी चढ़ावों'* (अर्थात् भूमि का वह भाग जो परमेश्वर के लिए उठाई हुई भेंट के रूप में है) का कुल क्षेत्रफल 25000 गुणा 25000 बाँस (60 गुणा 60 मील) है—लेवियों के लिए उत्तरी भाग 25000 गुणा 10,000 बाँस है; याजकों के लिए मध्य भाग 25000 गुणा 10,000 बाँस है; और दक्षिणी भाग जो *'नगर के अधीन'* है वह 25000 गुणा 5000 बाँस है। *'नगर के अधीन'* मध्य भाग में वह **नगर** है। भूमि के *चढ़ावे* का उत्तरी भाग इस्राएल के बारह गोत्रों में से सात गोत्रों को दिया गया। *'चढ़ावे'* का दक्षिणी भाग शेष पांच गोत्रों को दिया गया।

मंदिर और नगर के मध्य 12 मील की दूरी जकर्याह 14:4-5 (प्र॰वा॰6:12-17 के साथ तुलना करें) में की गई बाइबल की भविष्यद्वाणी के पूरे होने का परिणाम है। जब प्रभु यीशु अपने पवित्र लोगों के साथ *प्रभु के दिन* में इस्राएल के लिए संघर्ष करने को आएगा तब एक *'बहुत बड़ा खड्ड'* जैतून पर्वत से लेकर पश्चिम (सिय्योन पर्वत पश्चिम में है) तक विभाजित हो जाएगा। इसलिए दाऊद राजा ने अपने भजन में यह कहा : *''सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है, राजाधिराज का नगर* **उत्तरीय सिरे पर** *है''* (भजन संहिता 48: 2)।

नगर की प्रत्येक दीवार में तीन-तीन फाटक हैं। प्रत्येक फाटक पर इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक एक का नाम है। यह इस बात को सिद्ध करता है कि वास्तव में **परमेश्वर के वचन** इब्राहीम और सारा के प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र इसहाक को दिए गए हैं, इश्माएल को नहीं जो हाजिरा दासी का पुत्र था (प्रेरितों के काम 7:37-38; रोमियों 3:1-2)। *प्रकाशितवाक्य की पुस्तक* में, **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** में भी बारह फाटक होंगे जिन पर बारह गोत्रों का नाम होगा (प्रका. वाक्य 21:12-13), परन्तु यह लिखा हुआ नहीं कि किस फाटक पर किस गोत्र का नाम होगा। (इसके कारण हैं जिस पर हम बाद में ध्यान करेंगे।) तथापि, बहुत से धर्मविज्ञानी, यहां तक कि *'एंडटाईम मैसेज'* पर विश्वास करनेवाले भी अपने बौद्धिक तर्क के द्वारा बड़ी चतुराई से यह

दिखलाते हैं कि **यहेजकेल का मंदिर** ही वह **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** है। वे इस बात को क्यों नहीं समझते कि ***सहस्राब्दिक युग*** में **यहेजकेल का मंदिर** नगर से 12 मील उत्तर में है, तो क्या ***अनन्त युग*** में **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** का "मन्दिर" इसी नगर में होगा ? *(पवित्र नगर, नये यरूशलेम में 'मंदिर' का होना हमें मसीह और उसके छुड़ाए हुओं के साथ उसकी सिद्ध एकता को दर्शाता है।)* यहेजकेल का मंदिर एक यथार्थ मंदिर है, वैसे ही नगर भी एक यथार्थ नगर है। दोनों का निर्माण अत्यन्त निकट भविष्य में होगा। **यहेजकेल का मंदिर *वैसा ही वास्तविक और साकार है जैसा* मूसा का निवासस्थान, सुलैमान का मंदिर** और **हेरोदस का मंदिर** था। तथापि, प्रचलित विश्वास के विपरीत **पवित्र नगर, नया यरूशलेम *एक यथार्थ नगर नहीं, जिसमें यथार्थ मंदिर है।*** कुछ लोग यह भी विश्वास (या कल्पना) करते हैं कि यह एक यथार्थ नगर है जो **यरूशलेम नगर** के ऊपर लटका या तैरता रहेगा। वास्तविकता यह है कि पवित्र नगर नया यरूशलेम परमेश्वर के लोगों की महिमा प्राप्त आत्मिक देह के अलावा और कुछ नहीं जिन्हें आदम की सृष्टि के समय से सम्पूर्ण युगों में से निष्क्रीत किया गया है। जब यीशु मसीह (याहशुआ मसीह) के द्वारा मृत्यु का नाश किया गया, तब वह उस अधिकार को जो उसे दिया गया था परमेश्वर पिता (याहवेह) को वापस सौंप देगा, और परमेश्वर के अधीन हो जाएगा, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो (1 कुरु॰15: 24-28)।

एक नदी

अब तक के अपने अध्ययन से हमने यह देखा है कि **अदन की वाटिका** और **सहस्राब्दिक मंदिर** दोनों के स्थापन में **एक नदी** की मुख्य भूमिका है। अपने चारों ओर की सभी वस्तुओं के लिए नदी जीवन प्रदान करती है। *'अदन की वाटिका'* के दृश्य में वाटिका को सींचने के लिए एक नदी अदन से ***पूर्व दिशा*** की ओर बहती थी और वहां से चार भागों में विभक्त हो गई थी। यह नदी वाटिका के मध्य से होकर बहती थी जहां **जीवन के वृक्ष** को प्रस्तुत किया गया था और यह वाटिका की जीवित वस्तुओं, मनुष्यजाति से लेकर सबसे छोटे पेड़-पौधे तक को जीवन प्रदान करती थी। जहां-जहां इस नदी का **पानी** बहता था वहां-वहां जीवन था। जब यह वाटिका से बाहर *'जगत के चारों कोनों'* में बहती थी, तो इसका *पौष्टिक तत्त्व* इसके चारों ओर के प्राणियों को जीवित रखता था। आदम और हव्वा ने स्वयं को स्वाभाविक रीति से जीवित रखने के लिए स्वाभाविक वृक्षों का फल *खाया* और स्वाभाविक पानी को *पीया*, परन्तु स्वयं को आत्मिक रीति से जीवित रखने के लिए **जीवन के *आत्मिक* वृक्ष** से खाया और **जीवन के वचन का *आत्मिक* जल** पीया, जो वाटिका के *मध्य में* थे। *'सहस्राब्दिक मंदिर'* के दृश्य में भी **एक नदी पूर्व की ओर** बहती है। यहेजकेल ने देखा कि वेदी के दक्षिण की ओर से **जल** डेवढ़ी के नीचे से *पूर्व की ओर* बहता है। जल की गहराई माप में एक हज़ार हाथ की हो गई, और नदी के दोनों किनारों पर विभिन्न प्रकार के बहुत से वृक्ष थे। आरम्भ की नदी के जैसी, यह नदी भी **जीवन से परिपूर्ण** थी—दोगुना जल, क्योंकि यह केवल पर्वत स्रोत (निर्मल सोता) से ही नहीं निकली परन्तु यह उस स्थान से भी निकली जहां **जीवन का वृक्ष (प्रभु की शकीनाह महिमा)** था। यह मंदिर के स्थल से निकली। जल जहां कहीं भी बहा जीवन प्रदान किया जब यह पूर्व दिशा में मृतक सागर (खारे ताल) (Dead Sea) की ओर

बढ़ा। इस जल में बहुत सारी मछलियां बढ़ेंगी। कुछ दलदल और कच्छी क्षेत्रों को छोड़कर जिनसे नमक निकाला जाएगा खारे ताल का जल मीठा हो जाएगा और भूमध्य सागर में जितने प्रकार की मछलियां पाई जाती हैं वे इसमें पाई जाएंगी। (जकर्याह 14:1-8 में की गई भविष्यद्वाणी के सम्पादन में भौगोलिक कायापलट के परिणामस्वरूप ही केवल इस पानी में मछलियां हो सकती हैं।) मछुओं के लिए यह एक सर्वोत्तम स्थान होगा (यहेज॰47:1-11 पढ़ें)।

''और नदी के दोनों तीरों पर भांति-भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुरझाएंगे और उनका फलना भी कभी बंद न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उनमें महीने महीने, नए नए फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, और पत्ते औषधि के काम आएंगे।''-यहेजकेल 47:12

जी हां, स्वाभाविक **नदी जीवन के जल से** इतनी **परिपूर्ण** होगी कि वृक्षों में फलनेवाले फलों की कमी न होगी, और क्योंकि पानी में चंगाई के गुण होने के कारण, वृक्षों के पत्तों में रोगहरण के गुण भी होंगे। उसी प्रकार, आत्मिक रीति से, **मंदिर के सिंहासन से प्रभु का मसीह अपने जीवनदायक वचन को जल के जैसा भेजेगा जो सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रवाहित होगा** और *''पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है''* (यशा॰11:9; हब॰2:14)। राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु लोहे के डंडे से पृथ्वी पर शासन करेगा (प्र॰वा॰12:5; की तुलना मीका 4:1-4; यशा॰2:2-4 के साथ करें); इस रीति से स्वाभाविक और मरणशील मनुष्य उसकी व्यवस्थाओं और उसकी धार्मिकता के द्वारा **पुनः उत्पन्न** किए जाएंगे। *''धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा''* (यिर्म॰ 17:7-8)। सचमुच प्रभु के हज़ार वर्षीय शासनकाल में जो उसकी व्यवस्था पर भरोसा रखेंगे और उसका पालन करेंगे वे सदाकाल तक जीवित रहेंगे, परन्तु विद्रोहियों की आयु कम की जाएगी।

नयी उत्पत्ति का युग—मसीह का सहस्राब्दिक शासन

यशायाह 11:1-10 और 65:18-25 में की गई भविष्यद्वाणी के अनुसार सम्पूर्ण पृथ्वी पर परिवर्तन लाने के द्वारा नई उत्पत्ति का युग एक ऐसी स्थिति की ओर अग्रसर होता जाएगा जैसी स्थिति अदन में थी (जो अनन्त युग में होगा—एक नया आकाश और एक नयी पृथ्वी)।

''तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। और उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा। वह मुँह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा। परन्तु वह कंगालों का न्याय धार्मिकता से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट

को मिटा डालेगा। उसकी कटि का फेंटा धार्मिकता और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी। तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल की नाईं भूसा खाया करेगा। दूधपिउवा बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है। उस समय यिशै की जड़ देश-देश के लोगों के लिए एक झंडा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगे, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा''।

''इसलिए जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा। मैं आप यरूशलेम के कारण मगन; और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उसमें फिर रोने व चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा। उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिस ने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा। वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे। उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिए उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल-बच्चे उनसे अलग न होंगे। उनके पुकारने के पहले ही मैं उनको उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। भेड़िया और

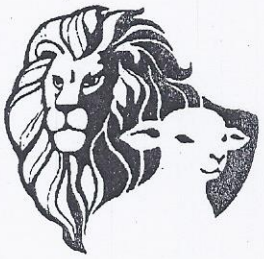

मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है।''

शैतान और दुष्टात्माओं के उसके झुंड को इस हज़ार वर्ष की अवधि तक बान्ध कर रखा जाएगा जब मसीह इस पृथ्वी पर ***'नयी सृष्टि'*** उत्पन्न करेगा (प्र०वा०20:1-3)। पृथ्वी पर साधारण स्वाभाविक जीवन और जीवन यापन की स्थिति इस अवधि में निरंतर बनी रहेगी। परन्तु सभी देश मसीह के शासन के अधीन होंगे और सम्पूर्ण पृथ्वी पर शान्ति और सुरक्षा होगी। जबकि प्रभु का मसीह यरूशलेम से अपने लोगों, इस्राएल और पृथ्वी पर के सभी देशों पर शासन करेगा, तो उसके

छुड़ाए गए और महिमा प्राप्त (उसकी पत्नी) लोग अपने अधिकार के विभिन्न स्थानों पर उसके साथ सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन करेंगे। पवित्र लोग जिस देश से लिए गए हैं वे उसी देश में शासन करेंगे (मत्ती19: 28; प्र०वा०3: 21)। इस अवधि में स्वाभाविक लोग जो राज्य की प्रजा हैं पृथ्वी पर फिर से भर जाने के लिए सन्तान उत्पन्न करेंगे (यहेज० 47: 22 के साथ तुलना करें)। वृद्धावस्था के कारण ***मृत्यु नहीं होगी*** परन्तु विद्रोही पापियों के विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही की जाएगी। जो मृत्यु-योग्य पाप करेगा उसे प्राणदंड दिया जाएगा। विषैले जीव अहानिकारक हो जाएंगे और जंगली पशु घास खाएंगे। धीरे-धीरे मनुष्य जाति पृथ्वी के शाक और फल खाने लगेंगे। *''तब जितने लोग यरूशलेम पर चढ़नेवाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रतिवर्ष राजा को अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने, और झोपड़ियों का पर्व मानने के लिए यरूशलेम को जाया करेंगे। और पृथ्वी के कुलों में से जो लोग यरूशलेम में राजा, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिए न जाएंगे, उनके यहां वर्षा न होगी। और यदि मिस्र का कुल वहां न आए, तो क्या उन पर वह मरी न पड़ेगी जिस से यहोवा उन जातियों को मारेगा जो झोपड़ियों का पर्व मानने के लिए न जाएंगे ? यह मिस्र का और उन सब जातियों का पाप ठहरेगा, जो झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिए न जाएंगे''* (जक०14:16-19) जी हां, यरूशलेम में ***"प्रभु (याहवेह) है"*** (यहे० 48: 35)। वहां से **जीवन** का प्रवाह होगा क्योंकि यहोवा का तेज यरूशलेम में रहता है। धन्य है प्रभु का नाम!

वास्तविकताओं की प्रतिच्छायाएं

अब तक, हमने देख लिया है कि परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर केवल **एक ही स्थान** चुना था जहां मनुष्य की उत्पत्ति के समय से उसकी उपस्थिति प्रगट की गई थी। वह स्थान **इस्राएल** था। यह पैलेस्टाइन, कनान और अदन की वाटिका भी कहलाता था। तथापि, परमेश्वर ने अपने नाम को प्रगट करने (या रखने) के लिए इस्राएल की सम्पूर्ण भूमि में से **केवल एक स्थान** को चुना और वह स्थान **यरूशलेम नगर** था जहां **उसके निवास** के लिए **सिय्योन पर्वत** पर **एक घर** बनाया गया। ये सभी स्वाभाविक और सांसारिक वस्तुएं और स्थान ***आत्मिक वस्तुओं और स्थानों*** की वास्तविकता को प्रतिबिम्बित करते हैं। *''परन्तु परम् प्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा, कि प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पांवों तले की पीढ़ी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे ? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा?* (प्रेरि०7: 48-49 की तुलना इब्रा०8:1-2, 5-6 के साथ करें)। जबकि आदम और हव्वा ***आत्मिक*** और स्वाभाविक दोनों रूप में रचे गए थे, इसलिए परमेश्वर को उनके साथ दोनों रूप में संबन्ध रखना था। उन्हें ***जीवन के वृक्ष*** से *आत्मिक भोजन* प्राप्त करना था इसके साथ ही साथ ***स्वाभाविक वृक्षों*** से *स्वाभाविक भोजन* प्राप्त करना था। तथापि, इस्राएल की सन्तान, जो परमेश्वर के चुने हुए लोगों और आत्मिक इब्राहीम के वंशजों (जिसे परमेश्वर ने स्वर्गीय नगर, प्रगट करने के लिए चुना) का देश था, पर वे ***सांसारिक विचारधारा*** के लोग थे। वे एक स्वाभाविक राज्य की खोज में थे और सांसारिक आशिष और स्वाभाविक छुटकारे की खोज कर रहे थे। परन्तु आत्मिक इस्राएल अर्थात् इब्राहीम के सच्चे वंश ने मनुष्य के सम्पूर्ण अस्तित्व—आत्मा, प्राण और शरीर के आत्मिक छुटकारे की खोज की, ताकि वह अविनाश को पहन ले। सचमुच, *स्वाभाविक*

मन के मनुष्य स्वाभाविक वस्तुओं की खोज करते हैं जबकि आत्मिक मन के मनुष्य आत्मिक वस्तुओं की खोज करते हैं। इसलिए, जो कुछ कहा गया था और स्वाभाविक रूप में उन्हें प्रगट किया गया वे सब आत्मिक वस्तुओं और स्थानों की वास्तविकता की *प्रतिच्छायाएं* थीं।

यदि परमेश्वर ने यरूशलेम में **एक घर (मंदिर) में अपना नाम** प्रगट (रखने) के लिए चुना था, तो यह उस से कितना अधिक बढ़कर होगा जहां वह ***अपना पवित्र नाम, एक देह अर्थात् यीशु रूपी घर में प्रगट करेगा, जो यरूशलेम के स्वर्गीय पवित्र नगर के मध्य खड़ा होगा,*** जो **उसके** ***छुड़ाए (निष्क्रीत)*** हुए ***लोगों की आत्मिक (स्वर्गीय)*** **देह है।** परमेश्वर ने **अपना नाम प्रगट करने के लिए, जगत की उत्पत्ति से पूर्व ही एक स्थान का चुनाव कर लिया था।** ***वह स्थान उसका वचन है।*** **(वह वचन अभिषिक्त है–अर्थात् मसीह**–जो स्वयं को प्रगट करने के लिए परमेश्वर के **आत्मा** से निकलता है–यूहन्ना 1:1; की तुलना निर्ग॰ 23: 20–21 के साथ करें।) परमेश्वर ने अपना ***याहवेह*** *(YAHweh)* **नाम अपने वचन** अर्थात् ***याहशुआ*** *(YAHshua)* में प्रगट किया (भ॰सं॰ 68: 4)। ***"और वचन देहधारी हुआ"*** (यूहन्ना 1:14)। जी हां, लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व, **वचन देहधारी** हुआ और उसी **नाम** को अपनाया–***"तू उसका नाम याहशुआ रखना"*** (मत्ती 1: 21)। **परमेश्वर ने अपना विमोचक नाम देहरूपी घर अर्थात् परमेश्वर के पुत्र में प्रगट किया।** जी हां, परमेश्वर और मसीह **एक** हैं (दो नहीं)—***"मैं और पिता एक हैं"*** (यूहन्ना 10: 30 की तुलना 14:10–11 के साथ करें)।

ध्यान दें, **परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर का निवासस्थान था। यीशु मसीह मूसा के 'साधारण' निवासस्थान का सम्पादन था जब वह सेवा करने के लिए आया, और वह सुलैमान का 'भव्य' मंदिर था जब उसकी महिमा की गई** (इब्रा॰ 8: 2,5; 9:11,24)। हम भी यीशु मसीह का निवासस्थान अर्थात् उसकी देह हैं, जो हमारे लिए तोड़ी गई। हम उसकी **'नई वाचा के निवासस्थान'** हैं। *"क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे।"* (2 कुरि॰ 6:16)। इसलिए, *पिन्तेकुस्त के दिन* वह आत्मा के रूप में आया और विश्वासियों में निवास किया। वह अपनी निज **कलीसिया** (देह) के ऊपर **प्रधान** या कलीसिया का **सिर** है क्योंकि परमेश्वर ने *"सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है"* (इफि॰ 1: 22, 23 की तुलना 4:15; 5: 23; कुलु॰ 1:18; 1 पत॰ 2: 6–8 1 कुरि॰ 3:16–17 के साथ करें)। **एक ही देह है** परन्तु **बहुत से सदस्य। वह मंदिर** (मुख्य पवित्रस्थान) है और हम **निवासस्थान** (इमारत) हैं।

मूसा के निवासस्थान और सुलैमान के मंदिर ने *विमोचन के अनुग्रह के युग* में यीशु मसीह को और विश्वासियों को जो उसकी देह कहलाती है उस का पूर्वाभास दिया। परन्तु परमेश्वर मात्र एक इमारत का ही निर्माण नहीं कर रहा है; पर वह एक **नगर** का निर्माण कर रहा है। यीशु ने कहा: *"मेरे पिता के* ***घर*** *में बहुत से रहने के स्थान हैं"* (यूहन्ना 14: 2 की तुलना इफि॰ 2:19; 1 कुरि॰ 12:12, 20 के साथ करें)। शब्द *'घर' के अर्थ ये होते हैं: "परिवार, निवासस्थान, घराना, विश्राम (रहने) का स्थान"* दूसरे शब्दों में *"मेरे पिता के भवन (निवास) में*

बहुत से आवास हैं।'' साधारण शब्दों में *''मेरे पिता के नगर में बहुत से घर (इमारतें) हैं।''* पवित्रशास्त्र स्पष्ट रीति से यह बताता है कि परमेश्वर ने अपना नाम यरूशलेम में एक घर (मंदिर) में प्रगट किया। ***नयी उत्पत्ति के युग*** में उसका नाम सदा के लिए वहां बना रहेगा, क्योंकि यरूशलेम में **सहस्राब्दिक मंदिर** में ***''प्रभु वहां है''।*** यह विन्यास नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी पर ***छुड़ाए गए*** (निष्क्रीत) (पवित्र नगर, नया यरूशलेम) ***लोगों में मसीह*** और ***मसीह में परमेश्वर*** *('सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर हैं'*–प्र०वा० 21: 22) का *पूर्वाभास* देता है। प्रेरितों के काम के समय से **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** उत्तरोत्तर अपना रूप लेता जा रहा है। **सिय्योन में पक्की नींव के पत्थर** (जिसका **घर याहवेह** था) को रखने के बाद (1 पत० 2: 6-8 की तुलना 1 शमू० 28:16 के साथ करें) *पिन्तेकुस्त* के दिन परमेश्वर का वह **तेज** वापस लौट आया, जब 120 शिष्यों में पवित्र आत्मा ने जीवन डाला तो अधिक निवासस्थान (घर) बनाए गए, पहले 3000 लोग परिवर्तित हुए और उसके बाद बहुत अधिक। वे सभी **जीवित पत्थर** थे जिनसे **आत्मिक घरों** का निर्माण हुआ, और उन्हें **स्वर्गीय पवित्र नगर** में स्थापित किया गया (1 पत० 2: 5, प्र०वा० 3:12)। ध्यान दें, ***प्राचीन नगर यरूशलेम ऐहिक पत्थरों से मनुष्यों के हाथों के द्वारा मनुष्यों के लिए बनाया गया था,*** **परन्तु पवित्र नगर, नया यरूशलेम** ***आत्मिक पत्थरों से परमेश्वर के हाथों के द्वारा परमेश्वर के लिए बनाया गया है।*** जी हां, ऐहिक मंदिर मसीह यीशु को प्रतिबिम्बित करता है जो पहली इमारत थी जिसे पवित्र नगर नया यरूशलेम में खड़ा किया गया था, जिस नगर में प्रभु के सभी निष्क्रीत लोग समाविष्ट हैं। इसलिए, प्रभु यीशु का वचन यह कहता है : *''मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान (या इमारतें) हैं, यदि यह सच न होते, तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो मैं फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊँगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो''* (यूहन्ना 14 :2-3, मेरी व्याख्या)। और यशायाह और जकर्याह नबियों के शब्दों पर ध्यान दें : *''तब यहोवा सिय्योन पर्वत के एक-एक घर के ऊपर, और उसके सभा-स्थानों के ऊपर दिन को तो धूंए का बादल, और रात को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा, और समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप [Heb: chuppah —covering, defence, protection] छाया रहेगा।''* (यशा० 4: 5)। *''सेनाओं का यहोवा यों कहता है : सिय्योन के लिए मुझे बड़ी जलन हुई वरन् बहुत ही जलजलाहट मुझमें उत्पन्न हुई है। यहोवा यों कहता है, मैं सिय्योन में लौट आया हूँ, और यरूशलेम के बीच में वास किए रहूँगा, और यरूशलेम सच्चाई का नगर कहलाएगा, और सेनाओं के यहोवा का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा''* (जक० 8: 2-3)। हाल्लिलूय्याह ! **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** अर्थात् **उसके छुड़ाए हुए या निष्क्रीत लोगों** में सदा के लिए ***'प्रभु वहां है'***—*''और मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर हैं''* (प्र०वा० 21: 22)।

नया आकाश, नयी पृथ्वी, नया यरुशलेम

''फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।''

–प्रकाशितवाक्य 21:1 की तुलना 21:5 के साथ करें।

वचन के द्वारा पृथ्वी पर के स्वाभाविक मनुष्यों की नयी उत्पत्ति हो जाने के बाद, पृथ्वी पर के निवासियों (प्र०वा० 20:7-8) की अन्तिम परीक्षा के साथ *नयी उत्पत्ति का* सहस्राब्दिक *युग* समाप्त हो जाएगा, इसके बाद ही *बड़े श्वेत सिंहासन* से न्याय होगा, उसके बाद **नया आकाश** और **नयी पृथ्वी** वर्तमान का स्थान ले लेगी (2 पत० 3: 5-7)। [यह बात ध्यान में रखें कि मसीह का सहस्राब्दिक शासनकाल एक *नयी उत्पत्ति का युग* है। उस एक हज़ार वर्षों की अवधि में परमेश्वर इस पृथ्वी को निष्क्रीत करेगा और सभी वस्तुओं को मूल सृष्टि के स्वरूप में पुनः स्थापित करेगा। मसीह और उसकी (दुलहन) पत्नी के द्वारा परमेश्वर पाप के सभी चिन्हों को समाप्त कर देगा, और मसीह के सोंटे के द्वारा मनुष्य जाति को परमेश्वर के मार्गों की शिक्षा दी जाएगी।]

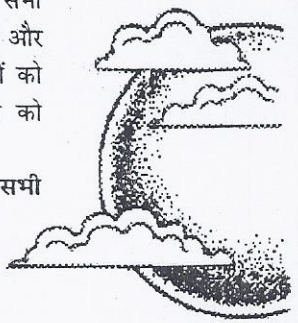

नये आकाश, और **नयी पृथ्वी** के साथ, परमेश्वर **सभी वस्तुओं** को **नया** कर देगा। आकाश (वायुमंडल) अपनी सभी विकृतियों जैसे कि वायु में पाई जानेवाली बदबूदार गैसों, विनाशकारी रासायनिक पदार्थों, और प्रत्येक घृणित और दूषित करनेवाले तत्त्वों से सम्पूर्ण रीति से शुद्ध कर दिया जाएगा। पृथ्वी की भौगोलिक सतह सम्पूर्ण रीति से बदल जाएगी। जल के विशाल सागर जो पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भाग को ढंके हुए हैं वे समाप्त हो जाएंगे, केवल नदियां, झील और छोटे सागर रह जाएंगे। पृथ्वी को ठंडा रखने के निमित्त, पृथ्वी को लपेटने (वस्त्र के जैसा) के लिए सतह का अधिकांश जल महाव्योम के आकाश में वापस लौट जाएगा जैसा कि नूह के दिनों में *'गहरे समुद्र के सब सोतों'* के फूटने और *'आकाश के झरोखों'* के खुलने से पूर्व था (उत्प० 7:11)। इमारतों, सड़कों आदि की अवसंरचना के साथ कोई नगर न होगा, जिसमें करोड़ों लोगों की भीड़ होती है। नये आकाश और नयी पृथ्वी के ***अनन्त युग*** में मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुओं का अस्तित्व न रहेगा जो वातावरण को किसी न किसी रूप में नाश करता है। कोई भी मनुष्य अपने तईं और अपने लिए जीवन नहीं बिताएगा, क्योंकि यही वह कारण था जो मनुष्य को पतन की ओर ले गया। वातावरण के साथ मनुष्य एक होगा और परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि के साथ सामंजस्य में होगा। प्रकृति और इसके उत्पादन सभी जीवन के लिए सत्त्व होंगे। सभी वस्तुओं का अस्तित्व ***जीवन के वृक्ष*** की व्यवस्था के अनुसार होगा। भिन्नता के बीज का अस्तित्व दोबारा न रहेगा जैसा यह आदम और हव्वा के समय में था।

जी हां, सम्पूर्ण पृथ्वी सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के लिए फिरदौस, हर्षित करनेवाली, एक *अदन* के रूप में होगी। सबसे सुन्दर और महिमायुक्त दृश्य यूहन्ना ने जो देखा वह **नया यरूशलेम, परमेश्वर का पवित्र नगर** था। प्रियो, इस बात पर ध्यान दें, **नयी पृथ्वी जैसी भी होगी,** ***अनन्त युग*** **में पवित्र नगर, नया यरूशलेम एक उत्कृष्ट स्थान अपने अधिकार में करेगा।** सभी वस्तुएं इसके चारों ओर परिक्रमा करेंगी, क्योंकि पवित्र नगर, नया यरूशलेम **परमेश्वर के परम अभिप्राय का सम्पादन है—अर्थात् उसका परिवार—जो उसकी परम परिकल्पना से उत्पन्न है—जो**

आदि में मॉनॉजीन (monogene), वचन रूपी बीज के रूप में था। *"उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझमें, और मैं तुम में"* (यूहन्ना 14: 20)।

"फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुलहन के समान थी, जो अपने पति के लिए श्रृंगार किए हो।"

—प्रकाशितवाक्य 21: 2

जैसा कि हमने देख लिया है कि, **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** आदम के समय से लेकर *बड़े श्वेत सिंहासन के अन्तिम न्याय के अन्त तक,* **सभी युगों के निष्क्रीत लोग** हैं। इन **सभी निष्क्रीत लोगों को जलाली बदन प्राप्त होगा।** जिस रीति से एक दुलहन अपने पति के लिए श्रृंगार करती है वैसे ही निष्क्रीत लोगों को भी परमेश्वर का आत्मिक *मंदिर* होने के लिए आदि से ही बड़े सुन्दर ढंग से तैयार किया गया है। यही *"वह नगर है जिसकी नींवें हैं, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है"* जिसके लिए इब्राहीम जो हमारे विश्वास का पिता कहलाता है, खोज कर रहा था। *बड़े श्वेत सिंहासन के अन्तिम न्याय के बाद* यह नगर पूर्ण हो जाएगा। नये आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि हो जाने के बाद, परमेश्वर नयी पृथ्वी पर नगर को स्थापित करेगा।

मसीह की दुलहन—मेम्ने की पत्नी

इस समय, परमेश्वर के चुने हुए और **निष्क्रीत लोगों** के उनके **मुक्तिदाता** परमेश्वर के साथ **विश्वास-सम्बन्ध** से सम्बन्धित एक आवश्यक विषय पर मुझे प्रकाश डालने दें। **चुने हुए लोगों** के एक देश के रूप में इस्राएल को **प्रभु की दुलहन** समझा जाता था (यशा॰ 62: 5; यिर्म॰ 3: 8)। *सुसमाचार के विधान* में **मसीही** (कलीसिया और मसीह की देह) लोग भी **प्रभु की एक दुलहन** है। यीशु मसीह के क्रूस में दोनों **एक** रूप में संयुक्त हो गईं। इफिसियों 2-3 अध्याय पढ़ें। **पवित्र नगर, नये यरूशलेम,** (दुलहन) प्रभु की पत्नी के निर्माण और बनाए जाने का कार्य उस समय आरम्भ हुआ, जब कलवरी के क्रूस पर **पक्की नींव का पत्थर** रखा गया। तथापि, इस **नये यरूशलेम** में **घरों** को चरणों में खड़ा किया गया। (इस बात को ध्यान में रखें कि यह **पवित्र नगर नया आकाश और नयी पृथ्वी के *अनन्त युग में*** ही प्रगट होगा, उससे *पहले* नहीं। *नई उत्पत्ति के युग* में भी यह नहीं पाया जाएगा)। वे सभी लोग जो निष्क्रीत होनेवाले हैं और ***जलाली बदन पानेवाले*** हैं, चाहे वे मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने से *पहले* या *बाद* में रहे हों, ***वे बुलाए हुए लोग*** हैं और विभिन्न नामों से जाने जाते हैं जैसे : *यीशु के शिष्य, कलीसिया, मसीह की देह, चुने हुए, निर्वाचित, पवित्र लोग, परमेश्वर के प्रिय, इत्यादि।* तथापि, क्योंकि अदन की वाटिका में आदम और हव्वा को मसीह और निष्क्रीत लोगों के नमूने के रूप में निश्चित किया था, इसलिए सम्बन्ध को दर्शाने के लिए अत्यन्त ही उपयुक्त रीति से ***मसीह की दुलहन,*** या ***मेम्ने की पत्नी*** शैली का प्रयोग किया गया है।

किसी भी (प्राचीन) नगर का केन्द्रबिन्दु उसके राजा का महल होता है। इस विषय में, वह केन्द्रबिन्दु **मंदिर और निवासस्थान** है। इसलिए, उस मन्दिर (*Grk : naos, sanctuary proper*—मुख्य पवित्रस्थान) को पहले बनना अवश्य है उसके बाद निवासस्थान (*Grk : skene, the whole building*—सम्पूर्ण इमारत) का बनाया जाना है। तब, अन्य घर इसके चारों ओर बनाए जाते हैं (गिनती 2 के साथ तुलना करें)। इस रीति से, सन्त पौलुस के अनुसार, **पवित्र लोगों का पुनरुत्थान**

भी चरणों (phases) में होगा : *''परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से, पहला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग''* (1 कुरि॰ 15: 23 की तुलना रोमि॰ 12: 4; प्र॰वा॰ 14: 4 के साथ करें)। ध्यान दें : **पवित्र नगर** के विषय अपने दर्शन से पूर्व (प्र॰वा॰ 21 में) प्रेरित यूहन्ना ने **पवित्र नगर** को स्वर्ग में *नहीं* देखा। तथापि, उसने स्वर्ग में उस पवित्र नगर की *अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इमारत* को देखा—***परमेश्वर के निवासस्थान का मंदिर*** (प्र॰वा॰11:19;15: 5,8)। यह बात स्वर्ग में निष्क्रीत (तम्बू या निवासस्थान) लोगों में **मसीह** *(मंदिर)* को दर्शाती है। परन्तु निष्क्रीत लोगों का ***यह समूह मसीह के केवल ''प्रथमफल''*** हैं जो जगतरूपी खेत से काटे गए हैं, क्योंकि *अपने समय में* वे वचन के साथ एक हैं। *''जब भेंट का पहला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा गूंधा हुआ आटा भी पवित्र है : और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियां भी ऐसी ही हैं''* (रोमियों 11:16)। **ये लोग मसीह की देह के चुने हुए *अंग* हैं जिन्होंने अपने समय में उस वचन को सुना जिसे प्रभु के आत्मा ने कहा था। उन्होंने परमेश्वर के प्रतिज्ञा हुए वचन पर *विश्वास* किया और *ग्रहण* किया। वे *आत्मा से परिपूर्ण* लोग हैं।** हम उन्हें प्रत्येक युग के ***'समझदार'*** **विश्वासी कह सकते हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वचन के अनुसार व्यतीत किया और वचन में बने रहे। वे वास्तव में वचन के साथ एक हैं, और प्रभु परमेश्वर की महिमा उनमें है।** इस रीति से, लोगों का *एकमात्र समूह* केवल उन लोगों का है जिन्हें ***स्वर्ग में मेम्ने के ब्याह के बड़े भोज*** में जाने के लिए उनके पुनरुत्थान के समय उन्हें ***शुद्ध चमकदार महीन मलमल*** दिया जाएगा।

> *''फिर मैंने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, कि हाल्लिलूय्याह, इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुँचा: और उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है। और उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं। और उसने मुझ से कहा; यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं; फिर उसने मुझसे कहा, ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।''*
>
> –प्रकाशितवाक्य 19: 6-9

जब मेम्ने की पत्नी (दुलहन) के अंग या सदस्य (प्र॰वा॰ 19: 9 में जिन्हें *'धन्य'* कहा गया है) स्वर्ग में *मेम्ने के ब्याह के अन्तिम बड़े भोज* में आनन्द करेंगे, तो उस समय पृथ्वी पर के लोग दानिय्येल की भविष्यद्वाणी के *सत्तर सप्ताहों* (दानि. 9: 27) के अन्तिम सप्ताह की अवधि में प्रवेश करेंगे। पृथ्वी पर रह जानेवाले लोगों में से बहुत से लोग मसीह की देह के होंगे, जिन्होंने इस युग के लिए *परमेश्वर के सन्देश* को सुनने, विश्वास और ग्रहण करने से अस्वीकार किया, या उससे वंचित रह गए। **वचन के प्रकाश में चलने से वे चूक** गए, क्योंकि अपने प्रभु से *मिलने की तैयारी* में उन्होंने अपनी **मशालों** (अपने विश्वास का जीवन और गवाही) में डालने के लिए अपने साथ **तेल** (पवित्रआत्मा) नहीं लिया। क्योंकि **आत्मा** और **वचन** से स्वयं को ढांकने से वे चूक गए, उन्हें पहनने के लिए *'शुद्ध चमकदार महीन मलमल'*

नहीं दिया जाएगा। अत: *मेम्ने के ब्याह के बड़े भोज* के लिए वे *'स्वर्गारोहण'* में नहीं लिए जाएंगे। मसीहियों का यह समूह **मूर्ख कुंवारियों** का है जिसके विषय यीशु मसीह ने अपने दृष्टान्त मत्ती 25:1-13 में कहा। **सच्चाई के वचन** के प्रति अपने **मूर्खतापूर्ण व्यवहार** के कारण वे पीछे छोड़ दिए जाएंगे। वे संस्थाई मंडलियों के **जंगली दाने** नहीं, क्योंकि जंगली दाने जलाए जाने के लिए ठहराए गए हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने पृथक्करण और मसीह के आगमन के सन्देशों को सुना और **कलीसियावाद** और इसकी प्रणाली से स्वयं को अलग किया। वे *पृथकतावादी, स्वाधीन* और *अन्त समय के सन्देश के* तथाकथित *विश्वासी लोग हैं।* परन्तु सदूकियों के जैसा, वे *सांसारिक* विचार के हैं और ***पवित्र बाइबल*** के नियंत्रण में आने और **सच्चाई के वचन** को स्वीकार करने में *अनिच्छुक* हैं (मत्ती 22:29)। वे केवल अपनी मंडलियों के धार्मिक मतों और शिक्षाओं को पकड़े हुए हैं। कुछ लोगों को प्रसन्न करने के लिए वे भ्रम की आत्मा के साथ समझौता भी करते हैं और करेंगे। सचमुच में, **उनके श्वेत वस्त्र सांसारिकताओं, झूठे मत और धर्म-सिद्धांतों से मैले हो गए हैं, परन्तु वे इस बात को नहीं जानते।** इसलिए, *महाक्लेश* में उन्हें *शुद्ध होने* की आवश्यकता होगी और प्रभु यीशु मसीह के लिए एक गवाह के रूप में उन्हें अपना जीवन देना होगा (प्र०वा० 7:9-17 के साथ इफि० 5:27 की तुलना करें)। *महाक्लेश* के बाद, शहीद हुए मसीहियों की एक बड़ी भीड़ **शहीद यहूदियों** के साथ जिन्होंने याहवेह के वचन की गवाही (प्र०वा० 20:1-5 की तुलना 6:9-11 के साथ करें) ईमानदारी से दी थी जिलाए जाएंगे। दोनों समूह, मसीह और सभी स्वर्गारोहित "धन्य" पवित्र लोगों के सिंहासन के सामने उपस्थित होंगे। तब, एक देह और दुल्हिन के रूप में, वे सभी मसीह के साथ *एक हज़ार वर्षों* तक राज्य करेंगे। इसलिए, प्रेरित यूहन्ना ने लिखा : *''धन्य और पवित्र वह है, जो इस **पहले पुनरुत्थान** का भागी है; ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे''* (प्र०वा० 20:6)।

जी हां, उन पर ***'दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं'*** जो पहले पुनरुत्थान में जिलाए जाएंगे, क्योंकि इस पुनरुत्थान में सभी प्राणी (*souls*) **अविनाशी जीवन** प्राप्त करेंगे और न तो उनका न्याय किया जाएगा और न तो वे दोषी ठहरेंगे। वे सभी मसीह के साथ हज़ार वर्षों तक राज्य करने के लिए **जलाली देह** पाने और यीशु मसीह की देह और पत्नी का एक अंग होने के योग्य होंगे। और ***हज़ार वर्षों के बाद, अन्य सभी मृतक जिलाए जाएंगे और बड़े श्वेत सिंहासन के सामने उनका न्याय किया जाएगा।*** प्रकाशितवाक्य 20:11-15 और दानिय्येल 7:9-10 पढ़ें। यही वह पुनरुत्थान है जिससे बचने का पौलुस ने प्रयास किया, जब उसने यह कहा, : *''ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने* (पूर्व पुनरुत्थान यूनानी अनुवाद) *के पद तक पहुंचूं''* (फिलि० 3:11)। उसने पहले पुनरुत्थान में भागी होने की चेष्टा की क्योंकि ***'धन्य और पवित्र** वह है, जो इस **पहले पुनरुत्थान** का भागी है; ऐसों पर **दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं,** पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।'* **दूसरे पुनरुत्थान में, दूसरी मृत्यु को जीवन** पर अपना दावा करने का अधिकार होगा जैसा लिखा हुआ है कि ***'जिस किसी का** नाम **'जीवन की पुस्तक'** में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।''* परन्तु ***''जिस किसी का''*** नाम ***''जीवन की***

पुस्तक'' में लिखा हुआ है उन्हें अनन्त जीवन दिया जाएगा। **यह एक सच्चाई है जिसका इन्कार कोई भी नहीं कर सकता।** यही वह पुनरुत्थान है जहां *दो प्रकार के लोगों का समूह* न्याय आसन के सामने खड़ा होगा, एक समूह को अनन्त जीवन दिया जाएगा और दूसरे समूह को मृत्यु का सामना करना होगा। यह **सार्वजनिक पुनरुत्थान** है जिसके विषय यीशु ने अपने वचन में कहा, *''इससे अचम्भा मत करो: क्योंकि वह समय आता है, कि जितने **क़ब्रों** में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे, **जिन्होंने भलाई** की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और **जिन्होंने बुराई** की है वे **दंड के पुनरुत्थान** के लिए जी उठेंगे'* (यूहन्ना 5:28,29)। मृतकों का न्याय *'उनके कर्मों के अनुसार'* होगा जिसका वर्णन ***'कर्मों की पुस्तक'*** में लिखा गया है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने बड़े **श्वेत सिंहासन के न्याय आसन** के सामने देखा कि खोला गया (प्र०वा० 20:12-13) और जिस किसी का नाम ***जीवन की पुस्तक*** में लिखा हुआ नहीं पाया गया उन्हें आग की झील में डाल दिया गया।

चुनाव

परन्तु वे लोग कौन हैं जिनके नाम ***जीवन की पुस्तक*** में लिखे हुए हैं ? ये वे चुने हुए लोग हैं जिनका अचूक **विश्वास-सम्बन्ध परमेश्वर** और **उसके वचन** के साथ था। कुरनेलियुस नामक एक अन्यजाति भक्त एक अच्छा आदर्श है, निश्चय वह मूर्तियों की उपासना करनेवाला नहीं था, परन्तु परमेश्वर से डरता था (देखें प्रेरितों के काम 10 वां अध्याय)। अन्यजाति होने के कारण, यह स्पष्ट है कि वह इब्राहीम के परमेश्वर के विषय नहीं जानता था, अन्यथा वह ख़तना करवाकर यहूदी मत को माननेवाला बन जाता। तथापि, परमेश्वर ने कुरनेलियुस पर अपना अनुग्रह प्रगट किया और उसे सुसमाचार दिया। वास्तव में कुरनेलियुस एक धन्य मनुष्य था। क्योंकि अन्य लोगों को जिन्हें यह सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ या तो वे बाइबल के देश के पहुंच से या बाइबल के समय से बाहर थे, उनके लिये **परमेश्वर का चुनाव** सर्वदा बना रहेगा (रोमि० 9:11 की तुलना 11:2-8 के साथ करें)। उत्पत्ति 18:25; नीतिवचन 11:18-19, 30; 14:32; भ०सं० 58:11 और 112:5-7 पढ़ें)। तथापि, परमेश्वर के साथ जिनका **विश्वास-सम्बन्ध** है, उनमें से बहुत से लोगों के नामों को अभी *मिटा दिया जाना बाकी है*, क्योंकि कुछ लोग तो परमेश्वर को छोड़कर मूर्तियों की ओर फिर गए हैं (निर्ग० 32:30-34; यहेज० 3:20; 18:24,26; 33:18), अन्य लोगों ने उसी मसीह को तिरस्कृत कर दिया जिसे मानने का उन्होंने दावा किया (भ०सं० 69:21-28), और जो लोग समय की प्रक्रिया में, सच्चाई के वचन को तिरस्कृत करेंगे और पशु या उसकी मूरत का सम्मान करेंगे (प्र०वा० 13:8)। यीशु के इन शब्दों पर विचार करें : *''जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ''* (मत्ती 7:21-23)।

वे लोग जिनके नाम मिटाए नहीं जाएंगे वे उन *'भेड़'* के जैसे लोग हैं (मत्ती 25:31-46 में जिसका वर्णन किया गया है) जिनका न्याय हमारा कृपालु प्रभु यीशु *महाक्लेश* के अन्त में करेगा,

और *नयी उत्पत्ति के युग* में प्रवेश करने के लिए उन्हें *जीवन* प्रदान करेगा। ध्यान दें कि ये धर्मी आत्माएं ***जो बड़े श्वेत सिहांसन के सामने*** न्याय के लिए खड़ी होंगी **ये कलीसियाई युगों के पवित्र आत्मा से परिपूर्ण लोग नहीं** (नहीं तो वे अपने-अपने युगों के लिए दिए गए सन्देश को मानते और मसीह के आने पर अन्त के समय के जीवित सन्तों के साथ उठा लिए जाते) ***न तो वे पुराने नियम के समय के मूसा, इब्राहीम सारा के जैसे*** **पवित्र लोग हैं जिनका परमेश्वर के साथ गहरा आन्तरिक विश्वास-सम्बन्ध था और जो परमेश्वर के आत्मा और वचन के द्वारा चलाए चलते थे।**

पौलुस के इस प्रश्न पर विचार करें ! ***"क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया ?"*** (प्रेरि॰19:2)। ध्यान दें कि पौलुस सुसमाचार के **विश्वासियों** को सम्बोधित कर रहा था। निश्चय, सम्पूर्ण युगों में उनके जैसे बहुत से सुसमाचार के विश्वासी अवश्य रहे होंगे, जिन्होंने पवित्र आत्मा कभी भी प्राप्त नहीं किया। उन्होंने सुसमाचार पर **विश्वास किया,** अपने पापों से **पश्चात्ताप किया** और आत्मा के द्वारा **शुद्ध किए गए,** परन्तु ***पवित्र आत्मा के अन्तर्वास उपस्थिति को कभी भी प्राप्त नहीं किया*** (यूहन्ना 14:17; मर॰1:15; यूहन्ना 1:12-13; 20: 31; रोमियों 10: 8-13 के साथ तुलना करें)। पवित्रआत्मा के *अन्तर्वास उपस्थिति* के बिना, बहुत से लोग हुमिनयुस, फिलेतुस और सिकन्दर के जैसे सांसारिक मनुष्य हैं। वे सत्य से भटक गए और परमेश्वर की निन्दा की (1 तीमु॰ 1: 20; 2 तीमु॰ 2:17 की तुलना इब्रा॰ 10: 38-39; 1 कुरि॰ 3:1 के साथ करें)। जी हां, यहूदा इस्करियोती के जैसे बहुत से **अभिषक्ति** लोग थे; प्राचीनकाल के उपासकों के जैसे जो अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाते थे, बहुत से लोग **धर्मी ठहराए गए थे;** और जैसे गंदे पात्रों को साफ़ किया जाता है, वैसे बहुत से लोग **शुद्ध किए गए;** परन्तु उन्होंने पवित्र आत्मा *नहीं* पाया। वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण *नहीं* हुए। इसलिए ***"उनके कामों के अनुसार"*** (1कुरि॰ 10:11-15 के साथ तुलना करें) उनका न्याय किया जाएगा और ***"जिनका नाम जीवन की पुस्तक"*** में लिखा पाया जाएगा, उन्हें अनन्त जीवन दिया जाएगा *"इसलिए कि परमेश्वर की मनसा, जो उसके चुन लेने के अनुसार है...बनी रहे।"* यह झुंड जिन्हें **छुड़ाया गया** और अनन्त जीवन दिया गया है इन्हें भी **अविनाशी देह** प्राप्त होगी। वे **पवित्र नगर नये यरूशलेम** के एक भाग होंगे जैसा कि पौलुस के शब्दों में प्रगट किया गया है : *"पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास; और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की* **साधारण सभा** *(Grk : paneguris-**all-assembly**) और कलीसिया (grk : ekklesia) जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं...के पास आए हो"* (इब्रा॰12:22-24)। आमीन!

पवित्र नगर, नया यरूशलेम— परमेश्वर का डेरा

"फिर मैं (यूहन्ना) ने पवित्र नगर, ***नये यरूशलेम*** *को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुलहन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।*

फिर मैंने सिंहासन (स्वर्ग) में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि

*देख, **परमेश्वर का डेरा** मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा।*

और वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ : फिर उसने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

फिर उसने मुझसे कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूँ: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊँगा।

जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और जादूगरों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है।

*फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उनमें से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा; इधर आ : मैं तुझे **दुलहन** अर्थात् **मेम्ने की पत्नी** दिखाऊँगा।*

*और वह मुझे आत्मा में, **एक बड़े और ऊँचे पहाड़** पर ले गया, और उस बड़े नगर, पवित्र यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया।''*

--प्रकाशितवाक्य 21 : 2-10

जैसा कि इस विषय में हम जानते हैं, कि जब ***आठवें दिन*** *(अनन्त युग)* का आरम्भ होगा तो समय समाप्त हो जाएगा, परन्तु जैसा कि पृथ्वी पर की सभी ऋतुएं, सूर्य, चन्द्रमा और तारों के द्वारा शासित हैं वे समयों के अनुसार निरन्तर वैसा ही शासित होंगे जिसे परमेश्वर ने उत्पत्ति के समय से उनके लिये ठहराया था जब उसने उनकी सृष्टि की और उन्हें घोषित किया (उत्पत्ति 1:14-18)। नया आकाश और **नयी पृथ्वी** वर्तमान का स्थान ले लेगी। **सभी वस्तुओं** को परमेश्वर नया कर देगा। पवित्र नगर अर्थात् **नया यरूशलेम,** जो कि **परमेश्वर के मेम्ने, यीशु मसीह की पत्नी** (दुलहन) है, स्वर्ग से परमेश्वर के पास से नयी पृथ्वी पर उतरेगी। **उसमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर निवास करता है। वह (दुलहन) परमेश्वर का निवास स्थान है, परमेश्वर का पवित्र नगर है।** अनन्त परमेश्वर की शकीनाह महिमा अपने पहिलौठे प्रजात में वास कर रही है, जो अपने निष्क्रीत और महिमा प्राप्त लोगों में निवास करता है, अपने सम्पूर्ण स्वर्गीय नगर को नयी पृथ्वी पर लाता है ताकि वह लोगों के साथ वास कर सके। यह **पवित्र नगर** अर्थात् **नया यरूशलेम,** जिसकी खोज में इब्राहीम था, इसका आरम्भ **नींव के पक्के पत्थर,** अर्थात् यीशु मसीह से हुआ, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर का मंदिर था। तब **जीवित पत्थरों** को इकट्ठा किया गया और मन्दिर के

चारों ओर घरों का निर्माण किया गया। उस नगर की स्थापना के लिए बहुत से घर बनाए गए जिसे मसीह की देह कहा गया। पौलुस ने इसे **मसीह की दुलहन** कहा। तथापि, यीशु ने इसे साधारण रीति से *''मेरे पिता का घर''* कहा।

कुलपति इब्राहीम जिस नगर की खोज में था, उसे प्रेरित यूहन्ना ने देखा। जी हाँ, **वह पवित्र नगर, नया यरूशलेम** उस समय पूरा हो जाएगा जब *आठवें* दिन का आरम्भ होगा। और **परमेश्वर इसमें डेरा करेगा और *स्वाभाविक मनुष्यों के मध्य वास करेगा और 'उनका परमेश्वर' होगा।*** इन *स्वाभाविक लोगों* में वे लोग समाविष्ट होंगे जो पृथ्वी से निष्क्रीत किए जाएंगे क्योंकि वे शैतान के धोखे के शिकार नहीं होंगे जब उसे नयी *उत्पत्ति के सहस्राब्दिक युग* के अन्त में छोड़ दिया जाएगा। धर्मी परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति अपनी ईमानदारी और आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर के उस कोप की अग्नि से बच जाएंगे जिसे उन लोगों पर उंडेला जाएगा जो परमेश्वर के पवित्र लोगों और उसके परम प्रिय नगर अर्थात् सांसारिक यरूशलेम के विरुद्ध विद्रोह और घेराबन्दी करने के लिए शैतान की सेना में शामिल होंगे। विश्वासी और आज्ञाकारी लोगों के देश के रूप में, उन्हें नये आकाश और नयी पृथ्वी पर अनन्तकाल तक रहने की अनुमति दी जाएगी। (प्रकाशितवाक्य 20:7-10; 21:24, 26; 22:2 पढ़ें।) इस रीति से, नयी पृथ्वी पर **दो प्रकार के लोग रहेंगे : *जलाली बदन के साथ निष्क्रीत अर्थात् छुड़ाए गए पवित्र लोग, जो पवित्र नगर को संघटित करेंगे, और स्वाभाविक देह के साथ नयी उत्पत्ति के युग में निष्क्रीत अर्थात् छुड़ाए गए लोग।***

जिस रीति से यहेजकेल नबी को उसकी आत्मा में (उसके दिनों में) **एक बहुत ऊँचे पहाड़** पर ले जाया गया, जहां उसे मंदिर और दाऊद का नगर दिखाया गया (यहे॰ 40:2) ठीक वैसे ही उस स्वर्गीय बड़े नगर, **पवित्र यरूशलेम** को देखने के लिए प्रेरित यूहन्ना को आत्मा में ***'एक बड़े और ऊँचे पहाड़'*** पर ले जाया गया। याद रखें, कि यह पारिभाषिक शब्द ***अधिकार और विस्मय की सर्वोच्च प्रतिष्ठा*** को प्रकट करता है। **यही वह महान् स्वर्गीय प्रतिष्ठा है कि मसीह की महिमा प्राप्त (जलाली) पत्नी मसीह के साथ बैठेगी, क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर और मेम्ना उसमें वास करेगा** (इफि॰ 1:3,19; 2:6 के साथ तुलना करें)। जी हां, जिस रीति से *नयी उत्पत्ति के युग* में वह मसीह के साथ बैठेगी, वैसे ही वह ***रानी*** के रूप में भी बैठेगी। प्रभु का वचन स्पष्ट है जब यह कहा गया कि **पवित्र नगर, नया यरूशलेम *'दुलहन अर्थात् मेम्ने की पत्नी'*** है। हम जानते हैं कि 'दुलहन' अर्थात् *''मेम्ने की पत्नी'' मसीह के निष्क्रीत और महिमा प्राप्त किए हुए पवित्र लोग* हैं। नहीं, मेरे प्रियो, ऐसा ज़रा सा भी न सोचें, कि पवित्र नगर, अर्थात् नया यरूशलेम *शाब्दिक नगर है।* ***हाथ के बने घरों में परमेश्वर नहीं रहता।*** कृपया मरकुस14:58 2 कुरि॰ 5:1-2; इब्रा॰ 9:11 और 10:5 पढ़ें। स्वयं से इन प्रश्नों को पूछें : *एक शाब्दिक नगर मेम्ने की पत्नी कैसे हो सकती है ? क्या पवित्रशास्त्र स्पष्ट रीति से यह नहीं सिखाता कि चुने हुए लोग मेम्ने की पत्नी हैं ?* **परमेश्वर आत्मा है। वह पवित्र है और ज्योति में वास करता है।** रहने के लिए परमेश्वर को एक शाब्दिक घर या नगर की आवश्यकता नहीं, यदि यह बात होती तो आदि में ही अदन की वाटिका में एक घर बना लिया गया होता। कुछ लोग यह अनुभव कर सकते हैं

कि पवित्र नगर अर्थात् नया यरूशलेम इमारतों का एक शाब्दिक नगर है जिसे पवित्र लोगों के रहने के लिए बनाया गया है। परन्तु *महिमा प्राप्त पवित्र जन के लिए सोने से निर्मित बहुत से कमरों की हवेली का क्या प्रयोजन ? क्या वास्तव में ऐसे घरों की आवश्यकता है, जबकि स्वयं पवित्र लोग स्वर्गदूतों से भी बढ़कर उत्तम देह को जो हमारे प्रभु यीशु मसीह की देह के जैसी है धारण करेंगे, जो कि आत्मिक देह है जो पृथ्वी के तत्त्वों के अधीन नहीं ?* ज़रा सोचें : *क्या पतन से पूर्व आदम और हव्वा को रहने के लिए हाथ से निर्मित घर की आवश्यकता थी ?*

पुराने नियम के सभी उदाहरण स्वर्गीय नमूने के अनुसार थे। वे स्वर्गीय वस्तुओं के *प्रतिबिम्ब* थे (इब्रा॰ 8:5)। इसलिए, स्वर्गीय नया यरूशलेम, परमेश्वर के मेम्ने की पत्नी, परमेश्वर का निवास स्थान परमेश्वर का घर है। आमीन ! उस (दुलहन) में से होकर सर्वशक्तिमान परमेश्वर नयी पृथ्वी पर के स्वाभाविक मनुष्यों के मध्य वास करेगा *''और उनका परमेश्वर होगा''*, और उस समय शोक, रोना, पीड़ा या मृत्यु नहीं होगी।

इसकी महिमा

''परमेश्वर की महिमा उसमें थी, *और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान* ***यशब की नाईं स्वच्छ*** *थी।''* –प्रकाशितवाक्य 21:11

जैसा कि मूसा के निवास और सुलैमान के मंदिर में *पूर्वाभास* दिया गया है, वैसे ही **पवित्र नगर नये यरूशलेम** में भी **परमेश्वर की महिमा** होगी। **परमेश्वर का वचन परमेश्वर की महिमा है।** और यह (वचन) उसकी ओढ़नी के लिए उसे (दुलहन को) दिया गया है। जी हाँ, **पवित्र लोगों को एक ओढ़नी, एक रक्षा और एक बचाव के लिए मसीह अर्थात् वचन दिया गया है।**

मुझे यहाँ बीच में *नबूवती निमंत्रण* के महत्त्व के विषय कहने दें जिसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 22:17 में लिखा है : ***''और आत्मा और दुलहन दोनों कहती हैं, आ; और सुननेवाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।''*** हमें मालूम है कि **वचन और आत्मा एक हैं** (यूहन्ना 6:63; इफि॰ 6:17)। ध्यान दें, यहाँ यह नहीं कहता कि ***''आत्मा और वचन कहता है, आ''*** परन्तु यह कि ***''आत्मा और दुलहन कहती हैं, आ''*** अब, ***वचन*** कहाँ है ? क्या **यह दुलहन में** नहीं? यदि **दुलहन** के पास **वचन** है, तो उसे **वचन** के साथ **एक** होना है ताकि वह **मेम्ने की पत्नी** कहला सके। जी हाँ, **दुलहन** को **वचन** के ***'विवाह कक्ष'*** (*Heb.: chuppah-marriage chamber*) में अवश्य प्रवेश करना है और **मसीह के साथ जो स्वयं वचन है एक हो जाना है।** यही वह सन्ध्या (अन्तिम) का समय है। स्वर्गीय वचन (दूल्हे) और ऐहिक **दुलहन** का अदृश्य सम्मिलन अब अवश्य होना चाहिए ताकि वे **एक** हो जाएं। इस नबूवती वचन को पूरा करने के लिए **दुलहन** को **वचन** अवश्य थामना है : *''और आत्मा और दुलहन दोनों कहती हैं, आ।''* अब जब कि पवित्र नगर, नये यरूशलेम के भेद का *प्रकाशन* प्रगट किया जा चुका है, तो सोचें कि अब हम कैसे समय में हैं? जी हाँ, यह नबूवती वचन एक वास्तविक रूप ले रहा है जब **वचन** और **दुलहन एक** हो

गए हैं। क्या आप दुलहन (पत्नी) के एक अंग हैं?

प्रेरित यूहन्ना ने ध्यान दिया कि *"उसकी **ज्योति** बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की नाईं **स्वच्छ** थी।"* यह इस बात को प्रगट करता है कि मेम्ने की पत्नी में किसी भी प्रकार का दोष, अपवित्रता, बुराई और कलंक नहीं। क्योंकि स्पष्ट रीति से वह **वचन** के साथ एक है। उसने **वचन का बीज** प्राप्त किया है और **फलदायक** है। इससे स्पष्ट और क्या हो सकता है, बिल्लौर के जैसा स्वच्छ यह एक प्रकाश है जो उसके (दुलहन) आत्मा और प्राण के गहरे एकान्त स्थानों में प्रवेश करता है (इब्रा॰ 4:12 के साथ तुलना करें)। वह (दुलहन) अपने प्रभु, स्वामी और परमेश्वर की दृष्टि में सुन्दर, महत्त्वपूर्ण, मूल्यवान और आकर्षक है।

इसकी लम्बाई-चौड़ाई

> *"और उसकी **शहरपनाह बड़ी ऊँची थी,** और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे।
> पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्खिन की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे।
> और नगर की शहरपनाह की बारह नींवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे।
> और जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर, और उसके फाटकों और उसकी शहरपनाह को नापने के लिए एक **सोने का गज** था।
> और वह नगर **चौकोर** बसा हुआ था, और उसकी लम्बाई, चौड़ाई के बराबर थी, और उसने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला : उस की लम्बाई, और चौड़ाई और ऊँचाई बराबर थी।
> और उसने उसकी शहरपनाह को मनुष्य के, अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से नापा, तो एक **सौ चौआलीस हाथ निकली।**"* —प्रकाशितवाक्य 21:12-17

किसी भी यथार्थ शहर की ***बड़ी और ऊँची दीवार*** का निर्माण शत्रु के आक्रमण से इसकी रक्षा करने के लिए और शत्रु को इसमें प्रवेश करने से वंचित रखने के लिए किया जाता है। आत्मिक रीति से, यह इस बात को दर्शाता है कि मेम्ने की पत्नी के पास **परमेश्वर का आवरक, रक्षा** और ***संरक्षण है,*** इसके साथ ही, परमेश्वर के पवित्र नगर में *'अशुद्ध'* लोगों का कोई भी भाग न होगा—*"धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। पर कुत्ते, और जादूगर, और व्यभिचारी, और हत्यारे, और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहनेवाला, और गढ़नेवाला बाहर रहेगा"* (प्रकाशितवाक्य 22:14-15)।

शहर, फाटकों और दीवार को नापने के लिए एक ***'सोने के गज'*** का प्रयोग किया गया। *'सोने का गज'* **परिशुद्ध सिद्धता का परमेश्वर का दिव्य मानदंड** *था*—पाप के दाग से रहित,

कपट रहित और मिथ्या निरूपण रहित। परमेश्वर ने जो ठहराया था, उसने उसे ठीक वैसा ही पूरा किया। दीवार 144 हाथ नापी गई। 144 संख्या 12 का विस्तार है। 12 गुणा 12 का मान 144 होता है। पवित्रशास्त्र में 12 की संख्या अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। ***शासकीय सिद्धता के सम्बन्ध में यह संख्या चुने हुए लोगों की है।*** पुराने नियम में, परमेश्वर ने इब्राहीम के वंशज, इस्राएल को चुने हुए लोगों का देश कहा। नया नियम में, परमेश्वर पापियों को जिनमें यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं, मसीह के क्रूस के पास पाश्चात्ताप के लिए बुलाता है ताकि वे, लोगों की एक चुनी हुई देह हो सकें जो कलीसिया कहलाती है। हम **12 राजकुमार** या राजा (क्योंकि इस्राएल के 12 गोत्र थे) और चुने हुए 12 **प्रेरितों** को पाते हैं जो कलीसिया की नीवें हैं। शहरपनाह की दीवार पर 12 **फाटकें** हैं जिन पर इस्राएल के 12 गोत्रों के नाम लिखे हुए हैं। **चारों दीवारों पर तीन-तीन *फाटक हैं;*** उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम, दिशाएं यह प्रगट करते हैं कि ***निष्क्रीत पवित्र लोगों को सम्पूर्ण रीति से वर्तमान पृथ्वी के चारों कोनों से इकट्ठा किया गया है।*** (संख्या 3 सम्पूर्णता को दर्शाती है।) परन्तु गोत्रों के नामों के विषय बताया *नहीं* गया है; यद्यपि *नयी उत्पत्ति के युग* में (यथार्थ) यरूशलेम नगर के फाटकों पर वे नाम पाए जाएंगे (यहेज॰ 48:31-34)। यह एक अलग सच्चाई है जो यह सिद्ध करती है कि पवित्र नगर नया यरूशलेम यथार्थ नगर नहीं जिसमें यथार्थ फाटक हैं। **12 फाटक इस्राएल के 12 अधिपत्यों** (राजा के अधिकारों) को दर्शाते हैं, क्योंकि यह **इस्राएल** की सन्तान के लिए था और **परमेश्वर का वचन** उन्हें ही सौंपा गया था (प्रेरि॰ 7:38; रोमियों 3:1-2)। परमेश्वर के नबियों के द्वारा उनके पास **वचन** पहुँचाया गया। ***जो इस पवित्र नगर का एक भाग होना चाहता है उसे इसके फाटकों से होकर प्रवेश करना अवश्य है क्योंकि*** परमेश्वर के घर अर्थात् **उसके परिवार *में प्रवेश करने के लिए अन्य कोई और मार्ग नहीं***। इस्राएल के 12 गोत्रों के पास, **परमेश्वर का वचन** था। उसके बाद 12 प्रेरित, जो सभी यहूदी थे, उनमें से प्रत्येक को उस कार्य के लिए एक **विशेष "पत्थर"** दिया गया जिसके लिए वे अभिषिक्त किए गए थे। **सनातन की चट्टान** का एक भाग होने के कारण, उनके पास **मसीह यीशु** जो परमेश्वर का भेद था और जो जगत पर प्रगट हुआ उससे सम्बन्धित **'प्रकाशन की चट्टान'** थी। उनके **'पत्थर'** दृढ़ और ठोस थे। परमेश्वर के **वचन** के प्रति **उनके प्रकाशन** सच्चे थे। और उनके **'पत्थरों'** ने पवित्र नगर की नींवें या ***आधार*** का रूप तैयार किया। (उन्हें इस रीति से रखा गया था कि प्रत्येक दीवार और चारों कोनों के तीनों प्रत्येक फाटकों के मध्य एक एक पत्थर था। अत: ***यह पुराने और नये नियम के मध्य अन्तर्ग्रथित सम्बन्ध को दर्शाता है।)*** पवित्र नगर में इन *नीवों* पर बहुत से घर बनाए गए और परमेश्वर का परिवार बढ़ता गया। उनकी *नीवों* को कोई भी नष्ट नहीं कर सका। वे नाश नहीं की जा सकतीं। परमेश्वर के **वचनों** के प्रति उनका प्रेरितिक प्रकाशन एक ***पक्की नींव के पत्थर*** अर्थात् ***मसीह जो वचन है, जो सनातन की चट्टान है उस पर सुरक्षित है*** (यशा॰ 28:16)। **इसलिए, संख्या 144, संख्या 12 का प्रवर्धन होने** के कारण यह दर्शाता है कि परमेश्वर के चुने हुओं (पवित्र नगर) के पास परमेश्वर

का वचन है, जो सबसे पहले इस्राएल के बारह गोत्रों को दिया गया था, और 12 प्रेरितों को प्रेरितिक नींव के लिये दिया गया। स्पष्ट रीति से *परमेश्वर के चुने हुओं के पास नबूवतीय वचन की प्रेरितिक नींव है।* आमीन !

नगर के *नाप* में 12 की संख्या के द्वारा यह दोबारा दर्शाया गया है कि **पवित्र नगर, नया यरूशलेम सिद्ध** और परमेश्वर का ***चुना हुआ*** है क्योंकि उसकी ***माप 'चौकोर'*** थी अर्थात् *लम्बाई* और *चौड़ाई* बराबर थी, साढ़े सात सौ कोस गुणा साढ़े सात सौ कोस (12000 fur x 12000 fur)। ऊँचाई भी साढ़े सात सौ कोस (12000 fur) थी। [ध्यान दें : शब्द *'चौकोर'* में *ऊँचाई* की नाप शामिल *नहीं* है। क्योंकि बहुत से मसीही लोग प्रकाशितवाक्य 21:16 के अन्तिम वाक्य के अनुसार इसके विपरीत विश्वास करते हैं। अत: वे विश्वास करते हैं कि पवित्र नगर घन (ल॰×चौ॰×ऊं) के आकार का है और यह अर्थनिर्णय करते हैं कि इस रीति से यह परमेश्वर में पूर्ण और सिद्ध है। तथापि, प्र॰वा॰ 21:16 में वर्णित प्रथम वाक्य पर ध्यान दें : ***''और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी''***, अर्थात् ***शहर की चारों भुजाएं समान थीं और आकार में वर्गाकार थीं।*** शब्द *'चौकोर'* का अर्थ *'चारों भुजाएं समान और आकार में वर्गाकार'* होता है। इसका अर्थ घन का आकार नहीं। [निर्गमन 30: 2; 37: 25; 39: 8-9 देखें।] *बाइबल के संख्या-विज्ञान* के अनुसार, 3 की संख्या *पूर्णता,* को दर्शाती है जबकि 4 की संख्या *पृथ्वी* को दर्शाती है। इसलिए, ***लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई के एक समान नाप पूर्णता को दर्शाते हैं, और चार समान भुजाएं हमें यह दर्शाती हैं कि पृथ्वी के चारों कोनों से मेम्ने की पत्नी निष्कीत की गई है।*** (क्या आपको यह बात याद है कि एक ही नदी थी जो अदन की वाटिका से निकलने के बाद *चार भागों* में बंटकर 'जगत' में बहती थी ?)।

इस नगर की ऊँचाई की नाप हमें क्या दर्शाती है? केवल यह : **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** एक यथार्थ नगर *नहीं*। क्या हमें जगत के किसी नगर की ऊँचाई के विषय कभी बताया गया है ? नगर के आकार को केवल इसके द्वारा घेरे गए सतह के **क्षेत्र** से नापा जाता है। आप उसकी ऊँचाई तो नहीं नापते; क्योंकि आप इसे कैसे नापेंगे? क्या सब से ऊँची इमारत को नापेंगे? (यदि ऐसी बात है, तो इससे कौन सा उद्देश्य पूरा होगा?) और जब कि **नया यरूशलेम** साढ़े सात सौ कोस (12000 furlongs, करीब 1500 मील) ऊँचा है, तो क्या वह सब से ऊँची इमारत की नाप है? निश्चय, नहीं। इसलिए, ***इसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई का परिमाण हमें इसके आकार का परिणाम दर्शाता है, जो हमें निष्क्रीत किए गए और जलाली देह धारण किए हुए लोगों की बड़ी संख्या का बोध कराता है।*** (प्रयोग की गई संख्या 12,000 पर ध्यान दें कि यह कितनी बार प्रयोग की गई है—3 बार 12000। यह हमें **पवित्र नगर** की ***सम्पूर्णता*** और **परमेश्वर के नियंत्रण, *अधिकार या शासन की सिद्धता को दर्शाता है।***) तथापि, जो लोग इस बात पर दबाव देते हैं कि पवित्र नगर यथार्थ है, और देखने में घन (लं.xचौ.xऊँ.) के आकार का है, और या तो यह यरूशलेम नगर का स्थान ले लेगा या इसके ऊपर लटक जाएगा, उनके लिए अच्छा होगा

कि वे नगर के आकार पर विचार करें : साढ़े सात सौ कोस गुणा साढ़े सात सौ कोस (1500 मील गुणा 1500 मील)। बाइबल के समय में यरूशलेम नगर का क्षेत्रफल लगभग $1^1/_4$ मील × 1 मील का था। आज यह लगभग 7 मील × 6 मील है। *नयी उत्पत्ति के युग* में नगर की नाप 12 मील गुणा 12 मील होगी। नये आकाश और नयी पृथ्वी में, यदि पवित्र नगर यथार्थ होगा, तो इस्राएल देश की सीमा में यह किस रीति से ठीक बैठेगा या समाएगा? निश्चय ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि नयी पृथ्वी में देश की वास्तविक सीमा नहीं रहेगी। यह हमें कुछ विशेष बात दर्शाती है। फिर, नगर की *ऊँचाई* के विषय आप क्या सोचते हैं? इसकी ऊँचाई लगभग 1500 मील की बताई गयी है, इसका 500 मील का भाग पृथ्वी के वायुमण्डल से बाहर होगा। तो क्या *''परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन''* (प्र०वा० 22:1) नगर के उस सब से ऊँचे क्षेत्र में कहीं होगा? मेरे प्रियो, यह न भूलें कि नयी पृथ्वी में स्वाभाविक मनुष्यों के पास अलौकिक देह नहीं होगी। वे वैसे ही होंगे जैसे आदम और हव्वा अपने पतन से पूर्व थे। साँस लेने के लिये उन्हें ऑक्सीजन की आवश्यकता होगी। (10 मील की ऊँचाई पर विशेष उपकरण के बिना साँस भी लेना असम्भव है। बढ़ती ऊँचाई पर हवा कम होती जाती है।) इसलिए, उस बड़ी ऊँचाई पर प्रभु के सिंहासन के सामने वे कैसे पहुँचेंगे? कुछ लोग इतने बचकाने के जैसा सोच सकते हैं कि किसी भी काम को करना परमेश्वर के लिये असम्भव नहीं, जैसे कि वह वायुमण्डल की ऊँचाई को बढ़ा सकता है। जी हाँ, यह सम्भव है, परन्तु परमेश्वर उन वस्तुओं के प्रति अपने ठहराए हुए नियम को नहीं तोड़ सकता जिन्हें उसने सम्पूर्ण रीति से *''अच्छा''* बनाया जैसा कि *उत्पत्ति की पुस्तक* में लिखा हुआ है। प्रत्येक तारा, प्रत्येक ग्रह और सम्पूर्ण सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को उनके वज़न और आयतन को पक्की रीति से नापकर उनके स्थान पर रखा गया है (अय्यूब 28:24-27, यशा. 40:12)। परमेश्वर कभी भी भूल नहीं करता। वह एक महान् वैज्ञानिक है। इसलिए, पृथ्वी पर परमेश्वर जो कुछ बना चुका है उसके वज़न और आयतन में उसे परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

किसी भी नगर के दिए गए नाप में उसकी **ऊँचाई** की नाप नहीं होती। हमारे ध्यान को पिरैमिड की बनावट की ओर खींचने के लिए **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** की **ऊँचाई** दी गई है। **पिरैमिड** ही केवल एक ऐसा ढाँचा है जिसमें **कोने के पत्थर** के अलावा **चोटी का भी पत्थर** होता है। चोटी का पत्थर (Capstone) **पिरैमिड** के ऊपर होता है। **गिज़ा के विशाल पिरैमिड** के ऊपर चोटी का पत्थर कभी नहीं रखा गया। [पिरैमिड विशेषज्ञों के अनुसार सम्भवत: हनोक की पीढ़ी में, शेत के कुछ वंशज जो मिस्र में जाकर बस गए और मिस्रियों के द्वारा उन्हें *''मेषपालक राजाओं''* की संज्ञा दी गई, वे लोग ही मिस्र देश में *गिज़ा के विशाल पिरैमिड* के निर्माता थे। मक़बरा के लिये यह नहीं बनाया गया था। (बाद में मिस्रियों ने ढांचे की नक़ल की और पिरैमिडों का निर्माण उपासना और अपने मृत फ़िरौनों (राजाओं) को दफ़न करने के अभिप्राय से किया।) उनका विश्वास था कि *विशाल पिरैमिड* पत्थरों में परमेश्वर का सुसमाचार है। पिरैमिड के अन्दर का विस्तृत ढांचा *अन्धकार के राजा* और उसके *अथाह (आधार रहित) कुंड* का, *मनुष्य जाति के पतन* का, *चुने हुए लोग* अर्थात्

पवित्र नगर, नया यरूशलेम

इम्राएल *की बुलाहट का* जिसे उसने अपनी रानी होने के लिये चुना, *व्यवस्था के युग का, अनुग्रह (सुसमाचार) के युग का, जीवित राजा का* और *परमेश्वर के प्रगट होनेवाले न्याय* आदि के ***''सुसमाचार कथा''*** को दर्शाता है। उस *विशाल पिरैमिड* की चार समान भुजाएं चिकने पत्थरों से ढंकी हुईं थीं जो सूर्य के प्रकाश को पॉलिशदार शीशे के जैसा परावर्तित करती थीं। पवित्रशास्त्र के इन पदों पर विचार करें:

''इसलिए, प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो मैं ने सिय्योन में ***नींव का एक पत्थर*** *रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नींव के योग्य पत्थर : और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा।''* -यशायाह 28:16

''इस कारण पवित्रशास्त्र में भी आया है, कि देखो, मैं सिय्योन में ***कोने के सिरे का चुना हुआ*** *और बहुमूल्य पत्थर धरता हूँ : और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।''* -1 पतरस 2:6

''सो तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये जिस ***पत्थर*** *को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही* ***कोने का सिरा*** *हो गया। और ठेस लगने का* ***पत्थर*** *और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है : क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराये भी गये थे।''* -1 पत. 2:7-8 (भ॰सं॰ 118:22, मत्ती 21:42, यशा॰ 8:14 के साथ तुलना करें)

''हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के सामने तू मैदान हो जाएगा; और वह ***चोटी का पत्थर*** *यह पुकारते हुए आएगा, उस पर अनुग्रह हो अनुग्रह।'* - जकर्याह 4:7

वास्तुशिल्पीय रीति से **पिरैमिड के ऊपर का *'चोटी का पत्थर'* ही एकमात्र कोने का पत्थर होता है** जो **ढांचे की दीवारों के साथ-साथ अन्य सभी कोनों को एक साथ जोड़ता है।** इसलिए, ***''कोने का सिरा''*** और ***''कोने का मुख्य पत्थर''*** **एक ही है।** मसीह यीशु केवल **कोने की *आधारशीला*** ही नहीं, पर वह चोटी का पत्थर भी है। (यूनानी भाषा में *''akrogoniaios''* का इंगलिश अनुवाद *''chief corner stone''* है अर्थात् **''कोने का मुख्य पत्थर''**, *''akron''* का अर्थ ***''सर्वोच्च, परम, सिरा, शिखर, उच्चतम भाग''*** होता है, और *''gonia''* का अर्थ **''कोना, कोण''** होता है।) यही **वह चट्टान है जिसमें हम जीवित पत्थरों के रूप में परमेश्वर के निवासस्थान के रूप में बनाए जाते हैं। यह परमेश्वर ही है जो हमारे जीवनों को एक साथ सम्पूर्ण रीति से एक करता है** : *''और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिस के कोने* ***का पत्थर*** *मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।* ***जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो''*** (इफि॰ 2:20-22)। जी हाँ, वही **पत्थर एक बड़ा और ऊँचा पहाड़** बन गया (दानि॰ 2 के साथ तुलना करें)। [ध्यान दें कि एक पहाड़ देखने में पिरैमिड के जैसा होता है, घन के आकार के जैसा *नहीं*। एक पिरैमिडी ढांचा अत्यन्त ही अचल होता है।

इसकी आकृति को खिसकाया या हटाया नहीं जा सकता। एक घन ऐसा नहीं होता। यदि इसकी एक भुजा को खिसका दिया जाए तो यह घन के रूप में नहीं रह जाएगा।]

नियमों और अधिकारों का सोपानक

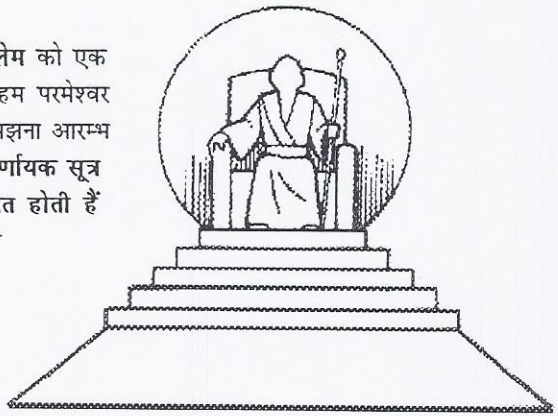

पवित्र नगर, नये यरूशलेम को एक पिरैमिड के आकार में देखकर हम परमेश्वर के सम्बन्ध में उसके भेद को समझना आरम्भ करते हैं। **परमेश्वर का वचन निर्णायक सूत्र है जिसमें सभी वस्तुएं विकसित होती हैं और पाई जाती हैं, और यह स्वयं परमेश्वर में छिपा हुआ है** (यूहन्ना1:1-4)। गुप्त वचन के भेद को प्रगट करने के लिए परमेश्वर ने अपने एकलौते (प्रजात) पुत्र, **प्रभु यीशु मसीह** का चुनाव किया (कुलु1:15-19)। **मसीह जो प्रभु है वह परमेश्वर की मूलभूत परिकल्पना है जिसके द्वारा परमेश्वर का परम अभिप्राय लोगों के आत्मिक निवासस्थान में रहने के साथ-साथ पृथ्वी पर स्वाभाविक मनुष्यों के *साथ रहने का* है।** परमेश्वर एक **घर** के साथ-साथ एक **परिवार** चाहता है। यह **चोटी का पत्थर** है जिसमें और जिस के द्वारा परमेश्वर अपने लिये उस **घर** और परिवार को पूरा या उत्पन्न करना चाहता है।

पिरैमिडी ढांचा, निश्चित रूप से *तैयार* **पवित्र नगर** के *महान आदिरूप* को दर्शाता है, और यह नयी पृथ्वी पर प्रभुता के रूप में हमारे प्रभु और उसकी पत्नी का *प्रतीकात्मक रूप* है। हम इसकी व्याख्या नहीं कर सकते, पर स्वीकार करते हैं कि याहवेह जो अपने **पवित्र नगर नये यरूशलेम** का स्थापनाकर्त्ता और निर्माता है उस ने इस में अधिकारों का एक ***दिव्य सोपानक बनाया*** और निर्धारित किया है। यद्यपि सभी पवित्र लोग परमेश्वर की सन्तान हैं, तथापि उनमें से प्रत्येक को भिन्न भिन्न प्रतिफल (पद) दिया जाएगा। एक पवित्र जन को जो भी पद दिया जाएगा, यह उस योजना के अनुसार उसका प्रतिफल होगा जिसे *परमेश्वर के भविष्य ज्ञान के अनुसार पहिले से ठहराया गया है। "क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं"* (रोमियों 12:4)। बुनियादी तौर पर, सभी श्रेणियों के पवित्र लोगों को **परमेश्वर के वचन** के प्रति उनकी स्थिति के अनुसार उन्हें प्रतिष्ठा दी गई है जिनका लेखा उन्हें परमेश्वर को देना है (मत्ती18:23, रोमियों14:12, 1कुरि॰ 3:8, 11-15, प्र॰वा॰ 22:12)। इसलिए, नियमों और अधिकारों के सोपानक में हम क्या देखते हैं? ***पिरैमिडी सोपानक की पराकाष्ठा*** पर हम ***मसीह अर्थात् चोटी के पत्थर*** को देखते हैं। ***"बड़े और ऊँचे पहाड़"*** की वह **चोटी** या **शिखर** है। और नयी पृथ्वी

पर स्वाभाविक मनुष्यों के साथ हम सभी को उसे (मसीह) आदर की दृष्टि से देखना अवश्य है, क्योंकि उसके द्वारा ही पिता के लिये पृथ्वी निष्क्रीत की जाएगी। चोटी के नीचे के तल पर *''चौबीस प्राचीनों''* के साथ ***प्रथम श्रेणी के पवित्र लोग*** होंगे, अर्थात् प्रत्येक **कलीसियाई युग** के *पहिलौठों की कलीसिया*। स्पष्ट रीति से, *''मूर्ख कुवांरियाँ''* और *''ईमानदार यहूदी लोग''* जो महाक्लेश के समय अपने विश्वास के लिये मारे जायेंगे वे सोपानक में बादवाले तल पर होंगे। पर जो *''साधारण सभा''* के लोग होंगे जिन्हें दूसरे पुनरुत्थान में *न्याय के बड़े श्वेत सिंहासन* के समय अनन्त जीवन दिया जाएगा वे सोपानक के सबसे निचले तल पर स्थान पायेंगे।

बड़ा नगर बाबुल

पवित्र लोगो, यदि हमारे पास सच्चाई है और परमेश्वर की ज्योति में निरन्तर चल रहे हैं, तो हम ने यह जान लिया होगा कि, परमेश्वर का विरोधी शैतान मनुष्य की उत्पत्ति के समय से सम्पूर्ण युगों में कार्यरत है। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, शैतान उसकी *नक़ल* करता है। ऐसा करने के द्वारा वह मनुष्य जाति को अस्त व्यस्त करने की खोज करता है और मुक्ति की झूठी आशा में उन्हें फंसा लेता है। जल प्रलय के बाद के दिनों में, शैतान ने कूश और उसके पुत्र निम्रोद को एक *नगर* और एक ***धार्मिक मीनार*** के निर्माण के लिए प्रेरित किया ताकि लोग विभिन्न स्थानों में जाकर न बसें। वह नगर शिनार देश में है (उत्पत्ति 10:8-10, 11:1-4), यह ***बाबेल*** (BABEL) कहलाता था और अब साधारणत: ***बेबिलोन*** (BABYLON) या बाबुल के नाम से जाना जाता है। यथार्थ बाबुल नगर में अपनी धार्मिक इमारत में **शैतान की चोटी का पत्थर निम्रोद** था। निश्चय, शैतान ने जो कुछ भी किया वह संयोगवश नहीं था। परमेश्वर ने जिन कार्यों को करने की योजना बनाई थी उनके विषय शैतान भी कुछ हद तक अवश्य जानता था। परमेश्वर ने एक विशेष प्रकार के लोगों (इस्राएल) को चुना ताकि वे एक देश (कनान) का उत्तराधिकारी बनें जिस में एक नगर (यरूशलेम) था जहाँ उपासना का केन्द्र (परमेश्वर का निवासस्थान) स्थित था। इस बात पर ध्यान दें कि **शैतान का धर्म *बाबुल नगर* में था और परमेश्वर का धर्म *यरूशलेम नगर* में** था। परन्तु ये दो नगर आत्मिक नगरों क्रमश: *''भेद बड़ा बाबुल''* और *''पवित्र नगर नया यरूशलेम''* के नमूने थे, जैसा कि नबूवती रीति से *प्रकातिशवाक्य की पुस्तक* में प्रगट किया गया है।

बाइबल विश्वासी लोग जिनके पास परमेश्वर के पवित्र वचन का *नबूवतीय प्रकाशन* है वे स्पष्ट रीति से समझते हैं कि *''भेद बड़ा बाबुल''* बड़े रोमन कैथोलिक चर्च और उसके संगठनों के उस *बड़े ख्रीष्ट विरोधी नगर* को सम्बोधित करता है। यह नगर *शैतान की (दुलहन) पत्नी* है। प्रकाशितवाक्य 17-18 अध्याय पढ़ें। जगत के लिए वह अन्य नाम से जानी जाती है-*वैटीकन नगर* (रोम में)। पृथ्वी पर यह नगर कितना बड़ा है? निश्चय यह केवल 1/6 वर्ग मील (2/5 वर्ग किलोमीटर) के क्षेत्र और हज़ार लोगों की जनसंख्या में सीमित नहीं है। जी नहीं, वह *''बहुत से पानियों''* अर्थात् *सम्पूर्ण जगत के करोड़ों विश्वासी नागरिक*—जो उसके प्रति निष्ठाबद्ध हैं—उन पर बैठी हुई है (प्र०वा० 17:1)। तथाकथित ***''रोम के पवित्र नगर''*** का यही वास्तविक आकार है। **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** के जैसा नहीं जिसे ***स्वर्ग*** से उतरते दिखाया गया है, पर बड़े ***भेद बाबुल का यह नगर, अथाह कुण्ड*** से ऊपर आता है (प्र०वा० 9:2)। *अथाह कुण्ड* से निकलने

के कारण इस बड़े नगर की **कोई नींव** (तल नहीं, आधार नहीं) **नहीं**, और यह **घृणित वस्तुओं** से भरा हुआ है। यह नगर बिना नींव के है इसलिए **इसकी कोई नाप नहीं।** यह इस बात को दर्शाता है कि उसकी *बहुत सी इमारतों* (वे लोग जिन्होंने उस पर भरोसा रखा है) के पास कोई (वास्तविक) आशा नहीं, परन्तु दिलासा और आवरक के लिये, वे केवल धर्मसिद्धांतों की प्रत्येक बयार को थामे हुए हैं जो उनकी **चोटी के पत्थर** अर्थात् **पोप** के मुंह से निकलता है। यद्यपि उसके नगर में लाखों और करोड़ों लोग हैं, पर एक दिन वह नाश हो जाएगी। प्रकाशितवाक्य 18 पढ़ें। चौथी शताब्दी से, *उसका मुख्य उद्देश्य पृथ्वी पर के सभी देशों पर अपना अधिकार प्राप्त करना रहा है।* (जगत के लिये मुख्य ख़तरा साम्यवाद नहीं, परन्तु रोमन कैथोलिकवाद है जो प्रचलित धारणा के विपरीत है। बाइबल की भविष्यद्वाणियों के अनुसार **भेद बाबुल का बड़ा नगर, दस सींग वाले पशु अर्थात् यूरो-साम्यवाद** (Euro-Communism) **के द्वारा नाश कर दिया जाएगा** (प्र०वा० 13:1-3, 17:16-18; 18:2, 10, 16, 20, 21)]

शैतान का **भेद बड़ा बाबुल**, जो उसका तथाकथित "पवित्र नगर" कहलाता है वह वैसा ही **'सुन्दर'** है जैसा परमेश्वर का **पवित्र नगर, नया यरूशलेम** है। शैतान की पत्नी के रूप में, यह स्त्री बैंजनी और किरमिजी रंग के *सुन्दर मलमल* का वस्त्र पहने हुए सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी हुई है। जी हां, उसे देखनेवालों की दृष्टि में, वह वास्तविक रीति से सुन्दर है। और चुने हुओं को भरमाने के लिए शैतान उसे परमेश्वर की पत्नी के रूप में दर्शाने का प्रयास कर रहा है। परन्तु उसके हाथ में घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरे हुए *सोने के कटोरे* के द्वारा, शैतान सफल भी हुआ है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने उस बड़ी वेश्या को जो पृथ्वी *की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता है* उसमें *इज़ेबेल* की विशेषताओं को परखने के लिए हमें प्रकाश की आत्मा दी है। इसलिए, जो लोग इस *भेद वाले नगर, बड़ा बाबुल* में अपनी आत्माओं के लिये *शरण और पवित्र स्थान ढूँढ़ते हैं* वे विलम्ब से जानेंगे कि *यह अशुद्ध पक्षियों का पिंजड़ा, दुष्टात्माओं का निवास और अशुद्ध आत्माओं के अड्डे के अलावा और कुछ नहीं।*

परमेश्वर का सुन्दर नगर

*"और उस की **शहरपनाह** की जुड़ाई यशब की थी, और नगर ऐसे **चोखे सोने** का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो।*

*और उस नगर की **नींवें** हर प्रकार के **बहुमूल्य पत्थरों** से संवारी हुई थीं, पहिली नींव यशब की थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौथी मरकत की। पाँचवीं गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नवीं पुखराज की दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की।*

*और बारहों **फाटक**, बारह **मोतियों** के थे; एक एक फाटक, एक एक मोती का बना था; और नगर की **सड़क स्वच्छ काँच** के समान चोखे सोने की थी।"*

-प्रकाशितवाक्य 21:18-21

सचमुच, **परमेश्वर के पवित्र नगर** *की सुन्दरता का वर्णन शब्दों के द्वारा कभी भी नहीं किया*

जा सकता। यह कैसे हो सकता था, क्योंकि इसकी सच्ची आत्मिक सुन्दरता को केवल आन्तरिक मनुष्य के द्वारा अनुभव किया जा सकता और समझा जा सकता है। इसलिए पवित्र नगर का वर्णन करने के लिए सुन्दर और बहुमूल्य पदार्थों का प्रयोग किया गया है। पवित्र नगर का निर्माण सम्पूर्ण रीति से ***स्वर्गीय नमूने*** *के अनुसार किया गया जो परमेश्वर के मन में था, और मेम्ने की पत्नी में किसी भी प्रकार का कोई* ***दोष नहीं*** *(प्र०वा० 21: 9, 15-17 की तुलना व्य०वि० 32:4;2 इति० 8: 16; इब्रा० 13: 21 के साथ करें) क्योंकि परमेश्वर ने उसे पहिले से ही जाना और ठहराया भी था (इफि० 1; इब्रा० 4: 3 के साथ तुलना करें)।*

ध्यान दें कि दीवार यशब की थी। ***स्वच्छ यशब पत्थर*** पारभासक या पारदर्शक और स्वच्छ होता है। ऐसी दीवार परमेश्वर के पवित्र लोगों को *प्रतिबिम्बित* करती है जिनके पास प्रभु के पवित्र आत्मा की ***परिशुद्ध ओढ़नी*** है, परन्तु उनका जीवन सभी मनुष्यों के पढ़ने के लिए ***खुली हुई पुस्तकें*** हैं। पवित्र लोगों में ऐसी कोई भी बात नहीं जिन्हें जगत की आँखों से छिपाकर रखने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि **नगर** भी ***''ऐसे चोखे सोने*** का था ***जो स्वच्छ काँच के समान''*** था, जो हमें यह दर्शाता है कि ***अग्निमय परीक्षा*** के द्वारा प्रत्येक मलीनता से वह तब तक **शुद्ध** किया गया जब तक वह ***स्वच्छ काँच के समान*** न हो गया (1 कुरि० 3:11-17; 1 पत० 1:7; 2:5 के साथ तुलना करें)। जी हाँ, **निष्क्रीत लोगों में यह परमेश्वरत्व है। अपने सभी विश्वास में वह सिद्ध है।** और निष्क्रीत लोगों में और उनके द्वारा जो ज्योति चमकती है, परमेश्वर की महिमा जो कि **वचन** है उसके साथ एक **स्वच्छ प्रकाश** के रूप में निश्चय एक साथ मिल जाएगी (प्रका० 21:11 के साथ तुलना करें)। इस बात पर भी ध्यान दें कि ***''सड़क स्वच्छ काँच के समान चोखे सोने की थी।''*** वास्तविक रीति से यह वह मार्ग था जिस पर पवित्र लोग अपने जीवन में चले और नयी पृथ्वी में वे इस मार्ग पर निरन्तर चलेंगे। अतिप्राचीन समय से, स्वर्गीय पिता के पास जाने का **एकमात्र मार्ग** केवल वह रहा है जो **सत्य, जीवन और मार्ग** है। वह **परमेश्वर का वचन है, परमेश्वर की महिमा** और ***परमेश्वर का सुनहरा मार्ग है।***

भारी दबाव, ताप और अन्य अवयवों से **बहुमूल्य पत्थर** उत्पन्न किये जाते हैं। लाल, नीले, श्वेत, हरे और सुनहरे पीले रंगोवाले ***नींव के विभिन्न बारह पत्थरों*** की चमक और सुन्दरता पवित्र लोगों के ***स्वर्गीय और पवित्र चरित्रों को प्रतिबिम्बित*** करती हैं, जो परमेश्वर के पुत्र के ***बहुमूल्य लोहू*** के द्वारा खरीदे गये हैं, जो उनके लिए ***अनन्त प्रशंसा और स्वर्गीय आशिषें हैं।*** यही वह **सच्चाई** है जिसे उनके ***प्रेरितिक पितरों*** ने सिखाया और उनके लिये अपना जीवन बलिदान किया। इसलिए बारह पत्थरों में से प्रत्येक उस प्रेरित के त्यागमय जीवन की सुन्दरता और महिमा का *उदाहरण* प्रस्तुत करता है।

मोती दुःखों को *दर्शाता* है जो ''क्षोभकों'' (कष्ट देनेवालों) के द्वारा दबाव के अन्तर्गत उत्पन्न होता है। नगर के ***बारह फाटक,*** जो ***इस्राएल के बारह राजाओं*** (प्राचीनों) को दर्शाते हैं, ***बारह मोती,*** होने के कारण उन्होंने याहवेह के नाम और वचन को उस नियुक्त समय तक थामे रहने के कारण बहुत से क्लेशों को झेला जब तक उनका मसीह अर्थात् परमेश्वर का पुत्र उत्पन्न न हुआ। उन्होंने बहुत सी ***विपत्तियों*** का सामना किया जो उनके आस-पास के देशों में रहनेवाले

परमेश्वर के शत्रुओं के द्वारा उन पर लाई गईं थीं। इन परिस्थितियों के अन्तर्गत परमेश्वर की दृष्टि में वे *परमप्रिय और बहुमूल्य मोती* बन गए हैं। जी हाँ, परमेश्वर सर्वदा अपने लोगों में से परीक्षाओं और क्लेशों के ''क्षोभकों'' के द्वारा जो उन्हें शत्रुओं के द्वारा पहुँचाई जाती है, सर्वश्रेष्ठ को प्रस्तुत करता है।

पवित्र नगर का मन्दिर

''और मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका ***मन्दिर*** *हैं''।* —प्रकाशितवाक्य 21:22

इस्राएल की सन्तान के उद्धारक, मूसा को पहाड़ पर दिखाए गए नमूने के अनुसार परमेश्वर ने उसे **निवासस्थान** बनाने का निर्देश दिया था (निर्ग॰ 25:40; इब्रा॰ 8:5)। *समय के बीतने पर* **मूसा** के द्वारा निर्मित साधारण **निवासस्थान** से *इसकी रूपरेखा* **सुलैमान के मन्दिर** के *रूप में विकसित हो गई* और **मसीह के सहस्राब्दिक शासनकाल में मन्दिर** का जो **रूप** होगा वह दिखाई देना बाकी है। ये सभी बातें मसीह यीशु में और पवित्र लोगों में परमेश्वर की महिमा को *प्रतिबिम्बित* करती हैं, इस रीति से ये सब बातें उस **सच्चे निवासस्थान, पवित्र नगर, नये यरूशलेम** को पूर्ण करती हैं जो **परमेश्वर के मन में जगत की नींव डालने से पूर्व थीं।** इसलिए प्रेरित यूहन्ना ने उस **मन्दिर** के अलावा जो **मसीह यीशु** अर्थात् परमेश्वर का मेम्ना था किसी अन्य मन्दिर को नहीं देखा। **परमेश्वर का मन्दिर मसीह है। परमेश्वर और मसीह एक हैं।** आमीन! **उस पवित्र नगर अर्थात् नये यरूशलेम** का ***''मन्दिर सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना हैं''*** (यूहन्ना 17:20-26) से तुलना करें)।

''और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है, और ***मेम्ना उसका दीपक*** *है।''*

— प्रकाशितवाक्य 21:23

यद्यपि सूर्य, चान्द और सितारों का अस्तित्व बना रहेगा, परन्तु **महिमा प्राप्त लोगों** अर्थात् **नये यरूशलेम** को उनके प्रकाश की आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि परमेश्वर के मेम्ने, परमेश्वर के वचन, आग के खम्भे से, उस में **उजाला** है। ***परमेश्वर ज्योति है*** (यूहन्ना 1:5)। वह ज्योति में रहता है (1 तीमु. 6:16)। (यहाँ तक अपने अध्ययन में, वचन के प्रकाश के द्वारा हमें विश्वास हो जाना चाहिए कि **पवित्र नगर** अर्थात् **नया यरूशलेम** निश्चय एक यथार्थ नगर नहीं परन्तु **महिमा प्राप्त पवित्र लोग** हैं जिनमें प्रभु परमेश्वर निवास करता है। इसे विपरीत रूप में समझने के लिए आत्मिक पवित्र लोग उतने अन्धे नहीं हो सकते।) ***परमेश्वर का वचन ही*** **''परमेश्वर की महिमा''** है, और वचन ने मेम्ने में निवास किया जो पवित्र नगर का मन्दिर है। *''उस में जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।... सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी''* (यूहन्ना 1:4,9 की तुलना यूहन्ना 8:12; यशा॰ 60:19; भ॰सं॰ 36:9 के साथ करें)।

''और जाति जाति के लोग उसकी ज्योति में ***चले फिरेंगे*** *और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएंगे। और उसके फाटक दिन को कभी बन्द* ***न होंगे,***

पवित्र नगर, नया यरूशलेम

क्योंकि रात वहाँ न होगी। और जाति जाति के लोग तेज और विभव का सामान उसमें लाएंगे।'' -प्रकाशितवाक्य 21:24-26

मसीह के सहस्राब्दिक शासनकाल में अर्थात् ***नयी उत्पत्ति के युग*** में (मत्ती 19:28), पृथ्वी की जनसंख्या उन लोगों के देशों के वंशजों से फिर दोबारा भर जाएगी जिन्हें ''भेड़'' (मत्ती 25:31-46) की संज्ञा दी गई है। इन लोगों को अपनी शुद्धता और अपने पतित स्वभाव के *'संकरण से शुद्ध होने'* के लिए इन्हें परमेश्वर की व्यवस्था और वचन का पालन करना होगा (भ॰सं॰ 119:9; यूहन्ना 15:3 के साथ तुलना करें।) उस एक हज़ार वर्ष की अवधि के बाद, उन लोगों की परीक्षा करने के लिए शैतान को उसकी क़ैद से शीघ्र ही रिहा कर दिया जाएगा जिन्होंने अपने जीवनकाल में जाँच, या परीक्षा को कभी नहीं जाना। बहुत से लोग अधिकार पाने के लिए परमेश्वर की व्यवस्था और उसके वचन को अस्वीकार करेंगे और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में शैतान के साथ मिल जाएंगे, इस प्रकार आग की झील में उनका अन्त हो जाएगा (प्र॰वा॰ 20:7-10)। देशों के शेष लोग जो प्रभु के मसीह का समर्थन करेंगे वे शैतान के बुरे प्रलोभन से **बच** जाएंगे। वचन को दृढ़ता के साथ थामे रहने के कारण वे केवल विनाश से ही नहीं **बचेंगे,** परन्तु वे शुद्ध और अपने पतित स्वभाव के *''संकरण से शुद्ध कर दिये जायेंगे''।* **और वे उस बहुमूल्य ज्योति में चलेंगे जो परमेश्वर के निवास स्थान अर्थात् पवित्र नगर से प्रकाश-प्रदान करती है, जो कि महिमा प्राप्त पवित्र लोग हैं जिन्हें सम्पूर्ण नयी पृथ्वी पर रखा जाएगा।** सचमुच, यरूशलेम (सांसारिक) नगर के जैसा नहीं जिसके फाटकों को रात के समय इसके निवासियों को सुरक्षित रखने के लिये बन्द करना पड़ता था, परन्तु परमेश्वर के फाटकों को बन्द करने की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि पवित्र नगर में रात न होगी क्योंकि वह **ज्योति** है जो पृथ्वी पर के सभी देशों को **जीवन** प्रदान करने के लिये प्रत्येक महिमा प्राप्त पवित्र लोगों को प्रदीप्त करेगा। पृथ्वी पर के देश देश के शासक (या अगुआ) आराधना स्तुति, महिमा, आदर, भेंट, सम्मान आदि अर्पित करने के लिए अपने देशों से इस पवित्र नगर में आएंगे।

''और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।'' -प्रकाशितवाक्य 21:27

इसमें ज़रा सा भी सन्देह नहीं कि **पवित्र नगर** अर्थात् **नया यरूशलेम मेम्ने की पवित्र और महिमान्वित पत्नी है।** वह **अनन्तकाल के पिता का घर है,** इसमें किसी भी प्रकार का पाप प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि सभी पापियों का **भाग** आग की झील होगी। उस पवित्र नगर का **एक नागरिक** और **एक भाग** होने के लिये, **सुसमाचार युग की अवधि में वचन को ग्रहण** करना और **नया जन्म** प्राप्त करना आवश्यक है। एक बार जब *यह युग* समाप्त हो जाएगा, और जो लोग *महाक्लेश* के बाद बचे रहेंगे और *''भेड़''* के रूप में जिनका न्याय किया जाएगा उन्हें *नयी उत्पत्ति के युग* में पृथ्वी पर दोबारा बसने के लिये जीवन दिया जाएगा। (मत्ती 25:31-46) की तुलना प्र॰वा॰ 13:8 से करें)। नयी उत्पत्ति के उस हज़ार वर्षों में केवल वे लोग बचाए जाएंगे जिनके नाम ***जीवन की पुस्तक*** में लिखे हुए हैं। और जब कि ये **स्वाभाविक लोग** वचन के द्वारा **शुद्ध और पवित्र** किये जाएंगे, तो इन्हें पवित्र नगर में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त होगा ताकि अपनी महिमा

और सम्मान अर्पण कर सकें। तथापि, उन्हें पवित्र नगर का नागरिक होने का अधिकार प्राप्त न होगा।

(मेम्ने की) जीवन की पुस्तक

"(मेम्ने की) जीवन की पुस्तक" कोई यथार्थ रजिस्टर *नहीं* जिसे प्रत्येक युगों में नामों को लिखकर तैयार किया गया हो। कुछ प्रचारक लोग यह शिक्षा देते हैं कि जब कोई यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करता है, तब उसका नाम पुस्तक में लिखा जाता है। यह उस बयान के विपरीत है जो प्रकाशितवाक्य 17:8 में लिखा हुआ है: *"...जिन के नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए...।"* परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। इसलिए, यहाँ तक कि *जगत की नींव* के डाले जाने से पहिले से ही पृथ्वी पर के प्रत्येक मनुष्य के जीवन के विषय वह जानता था (प्रेरि॰ 15:18 के साथ तुलना करें)।

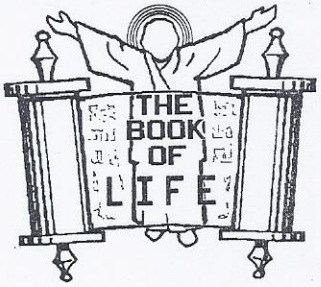

"जीवन की पुस्तक" वास्तव में *"वचन"* को दर्शाती है जो आदि में परमेश्वर के साथ था। यह *वचन* था जिसके द्वारा आकाश और पृथ्वी को अस्तित्व में लाया गया। और यह यीशु मसीह है जिसके द्वारा परमेश्वर का **वचन** जगत पर प्रगट किया गया। **जीवन की पवित्र पत्री (पुस्तक) के *रूप में मसीह यीशु में वचन ने वास किया*** ताकि सभी मनुष्यों के द्वारा पढ़ी जा सके। यीशु ने कहा: *"मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता"* (यूहन्ना 14:6)। *"और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है"* (1 यूहन्ना 5:11)। *"तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है"* (यूहन्ना 5:39)। **वचन** अर्थात् **याहवेह के साथ तादात्म्य स्थापित करने** और उसके साथ एक होने के लिये मसीह को **ग्रहण करना** आवश्यक है। ऐसा करने से, कोई भी ***जीवन के वचन*** का **एक भाग बन जाता है**, और इस कारण से सभी मनुष्यों के द्वारा पढ़े जाने के लिए एक लिखित पत्री बन जाता है। इसलिए, किसी के नाम को ***"जीवन की पुस्तक"*** में होने की बात कही जाती है।

तथापि, ***विभिन्न देहों*** में जो **जीवन** पाया जाता है, परमेश्वर की इच्छानुसार उस जीवन के तेज का उनमें भिन्न-भिन्न अंश होता है। *"...स्वर्गीय देहों का तेज और है,और पार्थिव का और"* (1 कुरि॰ 15:40)। *"...जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है"* (1 कुरि॰ 15:44)। अन्तिम आदम अर्थात् मसीह यीशु, जो परमेश्वर और मनुष्य दोनों था, ***परमेश्वर के विमोचन की योजना को पूरी करने*** और स्वर्गीय पिता के पास परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों के आत्मिक महिमान्वित किए हुए परिवार को लाने के लिए और इसके साथ ही प्रथम आदम के समान स्वाभाविक मनुष्यों के लिए पृथ्वी को छुटकारा दिलाने और इसकी मूल *अवस्था में इसे दोबारा वापस लाने* के लिए जैसा यह आदि में था, आया। *सुसमाचार का युग* परमेश्वर की महान् अनन्त योजना का एक भाग है जिसके द्वारा उसने उन लोगों को जिन्हें उसने जगत की उत्पत्ति से पहिले से *ठहराया* (रोमियों 8:30) *बुलाया, धर्मी ठहराया और महिमा* दी। अनन्तकाल के

पिता ने अपने एकलौते प्रजात पुत्र के जैसा, इनमें से प्रत्येक को आत्मिक देह पहिने हुए होने के कारण अपनी सन्तान होने और अपना ***तेजस्वी परिवार*** होने के लिए इन लोगों को *पहिले से ठहराया* था। दूसरी ओर, परमेश्वर ने कुछ प्रतिशत ***स्वाभाविक मनुष्यों*** को *पहिले से ठहराया* था जो *नयी उत्पत्ति के युग* में वास करेंगे। ये वे लोग हैं जो शैतान के द्वारा बहकाए नहीं जाएंगे जब उसे हज़ार वर्षों के बाद क़ैद से रिहा किया जाएगा। उन्हें *उस प्रथम मनुष्य अर्थात् आदम के स्तर पर वापस लाया जाएगा* जो स्वाभाविक देह में अनन्तकाल तक जीवित रहता यदि पाप न किया होता। यद्यपि वे *परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों के* ***महिमान्वित किये परिवार*** *के भाग नहीं हैं*, पर वे ***उसके लोग होंगे*** और परमेश्वर उनका परमेश्वर *होगा*। जैसा कि *अनन्त युग* में नयी पृथ्वी पर ***स्वाभाविक मनुष्यों*** के साथ परमेश्वर रहेगा, तो *आत्मिक* मेम्ने की पत्नी की **महिमा** अर्थात् परमेश्वर का निवास स्थान जो **पवित्र नगर** अर्थात् **नया यरूशलेम** है उसे प्रगट किया जाएगा। *''...देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा''* (प्र०वा० 21:3)।

जल का मार्ग — एक और एकमात्र मार्ग

''फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, ***जीवन के जल की एक नदी*** *दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की* ***सड़क के बीचों बीच*** *बहती थी।*

और नदी के इस पार; और उस पार, ***जीवन का पेड़*** *था: उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।''*

–प्रकाशितवाक्य 22:1-2

ध्यान दें कि ***''बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की एक नदी''*** किसी एक निश्चित दिशा में नहीं बहती है। प्रकाशन का आत्मा एक बार फिर हमारे ध्यान को उस सच्चाई पर ले जाता है कि **पवित्र नगर** अर्थात् **नया यरूशलेम** मेम्ने की पत्नी है, यह कोई शाब्दिक नगर नहीं। सभी शाब्दिक नदियाँ एक निश्चित दिशा की ओर बहती हैं। आदम और हव्वा के समय में, एक *नदी* थी जो अदन से *पूर्व की ओर* वाटिका से होकर बहती थी। यहेजकेल नबी ने कहा कि सहस्राब्दिक मन्दिर के द्वार के नीचे से होकर एक *नदी पूर्व की ओर* बहेगी, और उस नदी के दोनों किनारे पर बहुत से वृक्ष होंगे। यदि **नया यरूशलेम** शाब्दिक है, तो नदी को भी शाब्दिक होना चाहिए, और पवित्रशास्त्र और भविष्यद्वाणी के अनुसार अनुकूल होने के लिए नदी को *पूर्व की ओर* बहना अवश्य है। क्या तर्क के अनुसार ऐसा नहीं होना चाहिये? तथापि, क्या अन्तरिक्ष में 1500 मील की ऊँचाई से स्वाभाविक जल का बहना सम्भव होगा जहाँ जल वाष्प नहीं? और यदि उतनी ऊँचाई से पानी बहे, तो वह किस रीति से बहेगा? क्या पानी को नीचे की ओर बहने के लिए परमेश्वर 1500 मील की ऊँचाई के पहाड़ की सृष्टि करेगा, या क्या वह पानी को पृथ्वी पर बिखराकर एक झील की सृष्टि करेगा? यदि ऐसा हो तो *''वह मार्ग''* कहाँ होगा? क्या एक शाब्दिक नगर में बहुत से *मार्गों* का जाल बिछा नहीं होगा?

मसीही लोग यह सोचने को प्रवृत्त होते हैं कि हमारा परमेश्वर अलौकिक है इसलिए हमें अलौकिक रीति से सोचना चाहिए। जी हाँ, यह बात बिल्कुल सच है। परन्तु अलौकिक का अर्थ कोई

''काल्पनिक जगत'' या *ऐन्द्रजालिक* बात नहीं। तथापि, बहुत से मसीही लोग इसी बात में भटक रहे हैं। वास्तव में वे भ्रम में भटक रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि हम अपने चारों ओर जिन स्वाभाविक वस्तुओं को देखते हैं वास्तव में वे अलौकिक हैं? अपने आस पास की वस्तुओं को ध्यान से देखें, यदि आप ध्यान से देखेंगे, तो आपको महसूस हो जाएगा कि वे सब कुछ विशेष नियमों का पालन करने के लिये परमेश्वर के द्वारा ठहराए गए हैं। ये नियम परमेश्वर के अलौकिक और ईश्वरीय नियम हैं। पर क्योंकि हम उन्हें वैसा ही ग्रहण करते हैं जैसा कि वे हैं और हम उन्हें स्वाभाविक मानते हैं। क्योंकि वे हमारे जीवनों के एक भाग बन गए हैं, इसलिए हम उन्हें वैसा ही स्वीकार करते हैं। मेरे प्रियो, परमेश्वर अपने नियमों को नहीं तोड़ता। वह उन्हें पूरा करता है।

जैसा मैं बता चुका हूँ, **नया आकाश और नयी पृथ्वी एक अदन** होगी। सभी वस्तुएं नयी कर दी जाएंगी — *परमेश्वर के उपायों से।* प्रत्येक वस्तु जिन्हें आदि में पूरा करने के लिए घोषित करने से पूर्व जो परमेश्वर के मन में थीं, वे उस समय **पूरी हो जाएंगी।** प्रत्येक वस्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होंगी। आदम के लिये भी जो उसकी आज्ञा थी कि: *''...फूलो फलो, और पृथ्वी में भर जाओ...''* वह नयी पृथ्वी के अस्तित्व में आने से पूरी हो जाएगी। उस समय जब पृथ्वी **स्वाभाविक मनुष्यों से भर जाएगी**, जिनकी संख्या केवल परमेश्वर ही जानता है, तब नयी पृथ्वी पर *किसी का जन्म न होगा।* जी हाँ, पृथ्वी पर पर्याप्त भूमि होगी। चारों ओर हरियाली और स्वच्छ वायु होगी, नदियों में ताज़ा स्वच्छ पानी होगा और बहुतायत से फलों के वृक्ष होंगे। और स्वाभाविक मनुष्य माँस नहीं खाएगा। गगनचुँबी इमारतों, राजपथों, कल-कारखानों और मोटरगाड़ियों से भरा नगर न होगा; मनुष्य द्वारा निर्मित मशीनरी या *'हाई-टेक' उपकरण* न होंगे जो वायु या जल को दूषित करते हैं, वायुयान और जलपोत न होंगे; किसी भी प्राकृतिक साधन का दुरुपयोग या बरबादी न होगी। सभी सजीव और निर्जीव वस्तुएं परमेश्वर के अलौकिक नियमों के अनुसार अस्तित्व में रहेंगी जिन्हें मनुष्यों के द्वारा 6,000 वर्षों में किसी न किसी रीति से दूषित किया गया था।

हमें मालूम है कि ***परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन*** कहाँ है। पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट है कि यह **पवित्र नगर** अर्थात् **नये यरूशलेम** में है। क्या हमारे प्रभु यीशु ने नहीं कहा: *''उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में हो,और मैं तुम में''* (यूहन्ना 14:20)। याद रखें कि **पवित्र नगर, नया यरूशलेम,** जो कि मेम्ने की पत्नी अर्थात् महिमान्वित निष्क्रीत पवित्र लोग हैं, उनका मन्दिर सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना हैं (प्र०वा० 21 : 22)। जी हाँ, **मेम्ने की पत्नी याहवेह के टिकने का स्थान है, वह उसमें रहता, चलता फिरता है और उसके द्वारा बातचीत और कार्य करता है** (प्रेरि० 7: 48-49)। और वह सम्पूर्ण नयी पृथ्वी पर *फैली* हुई होगी। प्रभु का नाम धन्य है! प्रभु की अनन्त उपस्थिति के सिंहासन से **बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी बहेगी,** अर्थात् ***जीवन का आत्मा जो प्राण को तृप्त करनेवाला, पवित्र और सिद्ध है।*** यूहन्ना 7:37-39 पढ़ें। यह केवल एक जलमार्ग से बहेगा— *''एकमात्र जल का मार्ग''* — *एक और एकमात्र जल का मार्ग* अर्थात् मसीह जो परमेश्वर का वचन है! आप समझे? **मसीह यीशु में परमेश्वर का जो जीवन (Grk : Zoe) है वह पवित्र नगर में है, जो**

परमेश्वर का निवास स्थान है, और वह सम्पूर्ण नयी पृथ्वी पर बहेगा। परमेश्वर के सिंहासन में जीवन का जल स्थिर नहीं रहेगा, यह एक नदी के जैसा बहेगा। और बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की नदी के "मध्य में", और इस नदी के दोनों किनारों पर **जीवन का वृक्ष** है।

ध्यान दें, यहाँ **"जीवन का वृक्ष"** लिखा हुआ है "*बहुत से वृक्ष*" नहीं, जैसा कि कुछ प्रचारक लोग ऐसा अर्थ अपनी शिक्षा के समर्थन में कि पवित्र नगर, नया यरूशलेम सहस्राब्दिक मन्दिर है लगाते हैं। ***जीवन का वृक्ष*** क्या है? **परमेश्वर के ईश्वरीय नियम और सच्चाई** के अलावा यह और कुछ नहीं। जीवित रहने के लिए मनुष्यों को परमेश्वर के आत्मा और वचन में भाग लेना आवश्यक है। **आत्मा और वचन** एक हैं (यूहन्ना 3:5; 6:63 के साथ तुलना करें)। यीशु ने कहा: "*मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ*" (यूहन्ना 14:6) जैसा कि स्वाभाविक लोगों की नयी पृथ्वी पर **जीवन की आत्मा** की बिल्लौर की सी झलकती हुई, जल की नदी बहेगी, तो वह **परमेश्वर के ईश्वरीय नियम और सच्चाई**, अर्थात् **जीवन के वृक्ष** को ***जो आत्मिक सार से परिपूर्ण*** है अपने साथ ले जाएगी। (आदम और हव्वा के समय में, **जीवन का वृक्ष** अदन की वाटिका के *मध्य* में था जहाँ जीवन (भौतिक) की नदी बहती थी। और शकीनाह महिमा की उपस्थिति में इस **जीवन के वृक्ष** के **सार** से, आदम और हव्वा सच्चे जीवन के फल में प्रतिदिन भाग लेते थे (जब तक सर्प ने अपने ज्ञान से हव्वा को उस अन्य "*वृक्ष*" के विषय में बहकाया।) जहाँ कहीं भी यह नदी बहती थी, यह अपने साथ **जीवन के वृक्ष** को ***"जो नदी के दोनों किनारे पर था"*** लेकर बहती थी। *अनन्त युग* में नयी पृथ्वी पर मनुष्य चाहे जहाँ भी रहे कोई रुकावट नहीं होगी, उसे **परमेश्वर के ईश्वरीय नियम और सच्चाई** के द्वारा पोषण पाने के लिए उस **जीवन के आत्मा** के पास आने का अवसर प्राप्त होगा। कहने का तात्पर्य यह है, कि इसे पाने के लिये मनुष्य को *किसी विशेष स्थान* पर जाने या "*यरदन को पार करने*" की आवश्यकता न होगी, क्योंकि **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** के सदस्य सम्पूर्ण नयी पृथ्वी पर बिखरे हुए होंगे। मेम्ने की पत्नी **जीवन के वृक्ष के साथ एक** है। *अनन्त युग* में प्रत्येक महिमान्वित पवित्र जन का जीवन **बारह प्रकार के फलों** से भरा हुआ होगा, जैसे — *प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहिष्णुता, कोमलता, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम, सद्गुण, समझ और बुद्धि।* जी हाँ, **स्वाभाविक मनुष्यों को अनन्तकाल तक जीवन के वृक्ष में से खाना है। जीवन के वृक्ष** में भाग लेने से, प्रत्येक मनुष्य सम्पूर्ण ***बारहों मौसमी महीनों*** में ईमानदारी से *इस के फलों* (प्रभावों और परिणामों) को *उत्पन्न करेगा।* (संख्या 12 पर फिर से ध्यान दें जो पूर्ण शासकीय कानून, प्रशासन और नियंत्रण को दर्शाती है।) **जीवन के** वृक्ष के पत्ते भी सभी जगह देश देश के लोगों की *चंगाई* (आशीषें और अनुग्रह) के काम आएंगे। इसलिए, **नयी पृथ्वी पर स्वाभाविक मनुष्यों के लिये ईश्वरीय आत्मा और परमेश्वर का वचन लागू किया जाएगा ताकि उनके जीवनों में निरंतर परमानंद और देश देश की चंगाई— *तंदरुस्ती और हर्ष*- के लिए परमेश्वर के फल प्रकट हो सकें** (भ॰सं॰ 1:2-3; नीति॰ 11:30; यूहन्ना 15:8; मलाकी 4:2 यशा॰ 30:26 के साथ तुलना करें।) आमीन।

आत्मा और वचन एक हैं, और वे लोग जो उनके द्वारा पोषण पाते हैं उनके लिए *जीवन* और *आशिष* हैं। वे *आत्माओं को तृप्त* और *देह को विकसित* करनेवाली हैं। वास्तव में *अनन्त*

युग एक अनन्त परमानन्द का युग होगा जब आत्मा और वचन पृथ्वी को ढक लेगा और देश देश के लोगों को जीवित परमेश्वर के परिवार के रूप में संघटित करेगा। परमेश्वर के पवित्र नाम की महिमा हो!

उसका मुँह, उसका नाम, उसका प्रकाश

''और ***फिर श्राप न होगा*** *और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा,*
और उसके दास उसकी सेवा करेंगे।
और उसका मुँह देखेंगे और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा।
और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा,
क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा: और वे युगानयुग राज्य करेंगे।''

–प्रकाशितवाक्य 22: 3-5

परमेश्वर के पवित्र लोगो, बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की नदी, अपने जीवन के वृक्ष के साथ जब तक परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निरंतर बहेगी जो पवित्र नगर, नया यरूशलेम है, देश देश के लोग, जो उद्धार पाएंगे, वे इससे लाभान्वित होंगे और जीवन के प्रकाश में निरंतर चलेंगे जिसे उन्होंने पाया, और वे प्रभु को सम्मान और प्रतिष्ठा अर्पित करेंगे। उस समय कोई श्राप न होगा क्योंकि शैतान और गिराए हुए स्वर्गदूतों का उसका झुण्ड उस झील में डाल दिया जाएगा जो आग और गन्धक से जलती है। जैसा कि हारून के पुत्रों के द्वारा *पूर्वाभास* दिया गया है (निर्ग॰ 28:1) जो परमेश्वर की सेवा–टहल पुराने निवास स्थान या मन्दिर के पवित्र स्थान में, और बाहर उसके चुने हुए लोगों के लिए करते थे, ठीक वैसे ही हम लोग जो परमेश्वर के महिमान्वित पवित्र लोग हैं, पवित्र नगर, नये यरूशलेम में प्रभु की *सेवा–टहल* करेंगे और नये आकाश और नयी पृथ्वी में देश देश के लोगों पर शासन करेंगे। और अपने अन्दर उसके नाम और प्रकाश को लेकर उसके मनोहर चेहरे को *निहारते* हुए हम उसके साथ सदाकाल तक *राज्य* करेंगे। जी हाँ, जैसे यीशु ने कहा था वैसे ही हम भी उस समय कहेंगे: *''हमारा पिता अब तक काम करता है, वैसे ही उसका मसीह भी, और अब हम भी काम करते हैं''* (यूहन्ना 5:17 के साथ इस वाक्य की तुलना करें)। कार्य परमेश्वर की अनन्त योजना का एक भाग है।

हे मसीह की दुलहन, प्रभु के छोटे झुण्ड, परमेश्वर को यह भाया कि हमें यीशु मसीह का प्रकाश दे, जैसा कि उसने हमें परमेश्वर का राज्य भी दिया है। हमें जो प्रकाश दिया गया है, उसके द्वारा हम वास्तविक रीति से यह समझ सकते हैं कि हम ईश्वर हैं (भ॰सं॰ 82:6; यूहन्ना 10:34), सच्चे ईश्वर के रूप में ईश्वर — जीवित परमेश्वर जो हम सभी का पिता है, उसके पुत्र और पुत्रियां हैं। क्योंकि परमेश्वर के आत्मा और उसके वचन के द्वारा *जन्म लेने* के कारण, जिसका आत्मा और वचन हमारे साथ रहता है (1 यूहन्ना 4:13; 1 पत॰ 1:23), हम परमेश्वर के *''प्रजातों''* के अलावा और कुछ नहीं हो सकते। जो इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते, वे इसे ग्रहण भी नहीं कर सकते, और वे सभी सांसारिक मनुष्यों के जैसे मरेंगे (भ॰सं॰ 82:6-7) के साथ तुलना करें)। *सांसारिक कलीसियाई* जगत इस बात पर विवाद करने का प्रयास कर सकता है, और लोग हमारा तिरस्कार कर सकते हैं। जैसा कि वे अपनी *तथाकथित* मूल धर्मशिक्षा और धर्मसिद्धांत के द्वारा हमें देखते हैं, उनकी दृष्टि में हम एक मतान्ध के अलावा और कुछ नहीं हैं। इसमें सन्देह नहीं, मसीह यीशु के समय में,

पवित्र नगर, नया यरूशलेम

सच्चे *धार्मिक संस्थाई पंथों* अर्थात् फरीसियों, सदूकियों और शास्त्रियों की दृष्टि में उसके चेले गुमराह किये गए लोगों का एक झुण्ड था। सांसारिक कलीसियाएं इस बात को समझने से चूक गई हैं कि वे *विभिन्न विश्वास या मतों* के संस्थाई पंथों के अलावा और कुछ नहीं अर्थात् अशुद्ध पक्षियों का अड्डा जो अपनी वेश्या माता अर्थात् **पोप के रोमवाद** के पीछे चल रही हैं।

इसलिए, मेरे प्रियो, इस प्रतापी पवित्र नगर की सुन्दरता का प्रकाशन देखकर, आइये हम इसकी ओर आगे बढ़ें, प्राप्त किये हुए पवित्र बपतिस्मा के प्रकाश में ईमानदारी से चलें। क्योंकि पवित्र आत्मा ने विश्वास के द्वारा हमें यथार्थ रीति से शुद्ध किया है, और **पहिलौठे की कलीसिया** में हमें स्थानान्तरित किया है (साधारण सभा में नहीं- इब्रा॰ 12:23), और अब उस स्वर्गीय शासन-प्रणाली का एक भाग होने के लिए हमें सामर्थ्य से परिपूर्ण भी किया है। जी हाँ, समय बीत चुका है, क्योंकि भविष्यद्वाणी की आत्मा ने यह भी घोषित किया है: *"जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे"* (प्र॰वा॰ 22:11)।

आत्मा, वचन और दुलहन

अन्त में, आदम और हव्वा के समय में अदन की वाटिका में ढाँचों का भेद, सिनै पर्वत पर दिखाए गए नमूने के अनुसार मूसा भविष्यद्वक्ता ने जो निवासस्थान बनाया, सुलैमान के द्वारा बनाया गया मन्दिर और *नयी उत्पत्ति के सहस्राब्दिक युग* में जो मन्दिर बनाया जाएगा— इन सभी के *"मध्य में"* शकीनाह महिमा और परमेश्वर की उपस्थिति को जो दर्शाया गया है— उन्हें इस स्वर्गीय **पवित्र नगर** अर्थात् **नये यरूशलेम** में प्रकट किया गया है, जहाँ इसके "मध्य में" सर्वशक्तिमान परमेश्वर अनन्तकाल तक *वास करता* है! **केवल एक ही स्थान** है जिसमें जीवित परमेश्वर ने अपना पवित्र नाम रखने के लिये चुना है, वह स्थान **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** का मन्दिर है (2 इति॰ 6:6; नहे॰ 1:9 के साथ तुलना करें)। आमीन। हमारे पिता इब्राहीम ने अपने समय में इस **नगर** के विषय जो देखा, जो हाथों से निर्मित नहीं था, उस समय यह "दूर" था। परन्तु आज, उसके वंश के रूप में, हम अपनी आँखों के सामने इसे पूरा होते हुए देख रहे हैं। वह भेद अब प्रकट हो गया है। जी हाँ, हमारे पास इसका प्रकाशन है। अब हमें इस पवित्र नगर के विषय आश्चर्य करने और कल्पना करने की आवश्यकता नहीं रही। इसलिए मेरे प्रियो, *परमेश्वर के नबूवतीय समय* के कैलेन्डर में हम कहाँ हैं? यीशु मसीह के प्रकाशन की समाप्ति पर वचन को ध्यानपूर्वक देखें :

"और आत्मा और दुलहन दोनों कहती हैं, आ; और सुननेवाला भी कहे, कि आ;
और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।"
-प्रकाशितवाक्य 22:17

पवित्रशास्त्र में प्रत्येक स्थान पर हम देखते हैं कि **आत्मा और वचन एक हैं** (जक॰ 4:6; यूहन्ना 1:1-2; इफि॰ 6:17)। परन्तु *प्रकाशितवाक्य की पुस्तक* के अन्त में, भविष्यद्वाणी की आत्मा यह प्रकट करती है कि ***आत्मा और दुलहन एक हैं।*** क्या आप समझे? **यदि दुलहन में वचन है, तो वचन और दुलहन को एक होना है।** इसलिए ***"आत्मा और दुलहन कहती***

है'' लिखा हुआ है **क्योंकि दुलहन में वचन है!** आमीन! अब हमें आत्मा के साथ एक हो जाना चाहिए जब कि यीशु मसीह के प्रकाशन के अन्तिम दो अध्यायों का प्रकाशन हमने प्राप्त कर लिया है। यदि हमने परमेश्वर के सातवें और अन्तिम *कलीसियाई युग* के दूत, विलियम मैरियन ब्रान्हम के सन्देश को सुनकर उसका पालन किया है तो इसे ऐसा ही होना है यदि हम **उसके वचन के विवाह के मण्डप** *(Heb: Chuppah)* में हैं। इसलिए, **पवित्र नगर, नये यरूशलेम** का प्रकाशन यथार्थ में ऐसा ही है। चुने हुओं के लिये यह सच्चाई प्रकट की गई है, हमारे सोच विचार की अपेक्षा समय बहुत अधिक बीत चुका है।

> *''जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में* ***एक खंभा*** *बनाऊँगा; और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने* ***परमेश्वर का नाम,*** *और* ***अपने परमेश्वर के नगर,*** *अर्थात् नये यरूशलेम* ***का नाम,*** *जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है और* ***अपना नया नाम*** *उस पर लिखूंगा।''*
>
> –प्रकाशितवाक्य 3:12

''हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे।'' –प्रकाशितवाक्य 22:21

हे प्रभु यीशु आ!

अन्तिम वचन के लिये लोग कब और कहाँ इकट्ठा होंगे ?''
मसीह में, जी हाँ!
अन्तिम समय में, वे मसीह में इकट्ठा होंगे।
इस बात को कभी भी न भूलें।
हमारे पास इकट्ठा होने का एक स्थान है;
हमने उसे ठीक वैसा ही प्राप्त किया है।

Wm. M. Branham

C.O.D.